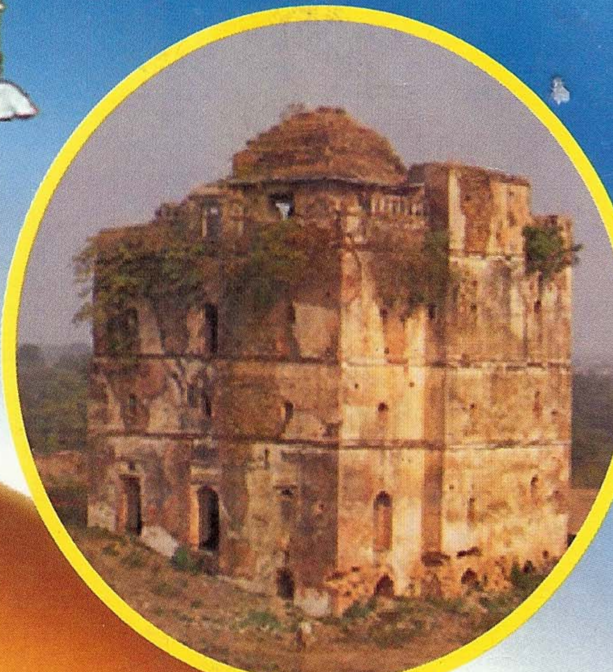
हीरानागपुर कर हीरा

(नागपुरी एकांकी–नाटक संग्रह)







नाटककार

डॉ. गिरिधारी राम गौंझू 'गिरिराज'

1

हीरानागपुर कर हीरा

नाटककार
डॉ. गिरिधारी राम गौंझू 'गिरिराज'

प्रकाशक
झारखण्ड झरोखा, राँची

2

हीरानागपुर कर हीरा

प्रथम संस्करण : मई 2012

प्रकाशक: झारखण्ड झरोखा,
दुकान न.– डी. जी. 03
न्यू बिल्डिंग, न्यू मार्केट,
रातू रोड, राँची, झारखण्ड
पिन न. 834001
मो. 09973112040, 9471160792

ISBN : 978-93-81720-11-0

अजिल्द : 140.00 रू.
सजिल्द : 200.00 रू.

विषय सूची

भूमिका

साहित कर तीन मुध बिधा आहे– गद, पद आउर नाटक। इहाँ नाटक उपरे बिचार करल जात हे। नाटक बाबत कहल जाहे "अवस्थानुकृतिर्नाट्यम्" कहेक माने जे जइसन आहे उकर उसनेहे नकल करेक के नाटक कहेन। नाटक तो दृश्य काव्य हेके। नाटक सभे साहित कर शोभा हेके– "काव्येषु नाटकं रम्यम्" कहेक मतलब बोलेक कर सिंगार हेके काव्य आउर काव्य कर सिंगार हेके नाटक।

नाटक के रूप आउर रूपक हों कहल जाएल– "रूपं दृश्यतयोच्यते"। नाटक के देखेक तेहें रूप कहेन। "रूपकं तत्समारोपात" माने कोनो रूप कर आरोप करेक चलते हों रूपक कहल जाएल। आचार्य भरत कर नाट्यशास्त्र भारतीय परम्परा कर सउबले पुरना साहित्यशास्त्र ग्रंथ हेके। इकर में नाटक मनक जे विस्तार से यथार्थ विवेचना भेटाएल उकर से सुपट अंदाजा लागेल कि भारतीय परम्परा में दृश्य काव्य सामाजिक आउर काव्य कर नजइर से एके समान महातम राखेल।

नाटक बारे तो कहल जाएल कि ई पाँचवाँ वेद हेके। ऋग्वेद से पाठ, सामवेद से गीत, यजुर्वेद से अभिनय आउर अथर्ववेद से रस लेके नाटक कर निर्माण चाइरो वेद से करल जा हे। से चाँड़े नाटक वेद परिया कर बुझाएल। भरत मुनि तो एतना तक कइह देइ आहैं कि नाटक कर असल आधार भुँइ लोक कर जीवन हेके।

नाटक माने दुइ अदमी कर कोनो कथा किसा उपरे गोठियाएक भइर ना लागे। नाटक तेहें नाटकीय तत्व कर होएक बगरा दरकार आहे। भारतीय परम्परा मोताबिक नाटक कर तीन तत्व आहे– वस्तु, नेता आउर रस। पछमी परम्परा कर अनुसार इकर छव तत्व मानल जाएल– वस्तु, पात्र, संवाद, देश–काल, भाषा शैली आउर उद्देश्य। असल में ई छवो तत्व, उपरे कर तीनों तत्व में समाल आहे। हलहों सुबिस्ता कर मोताबिक नाटक कर मूल तत्व हेके– कथावस्तु, पात्र चाहे चरित्र–चित्रण, संवाद इया कथोपकथन, देश–काल चाहे वातावरण इया परिवेश, रंगमच, अभिनय, भाषा–शैली आउर, उद्देश्य।

नाटक में वस्तु कर मतलब कथावस्तु से आहे। इतिवृत कर मोताबिक इकर तीन भेद होएल– ऐतिहासिक, काल्पनिक और मिश्रित। अधिकारी कर अनुसार कथा–वस्तु दुइ किसिम कर होएल–आधिकारिक आउर प्रासंगिक। अभिनय कर खेयाल से हों इकर दुइ भेद होएल–दृश्य आउर सूच्य संवाद कर मोताबिक कथावस्तु तीन रकम कर होएल–सर्व श्राव्य, नियत श्राव्य आउर अश्राव्य। पछमी नजइर से वस्तु कर छव हिसा होएल– संघर्ष कर स्थिति, आरम्भ, तीब्रता, पराकाष्ठा, अवरोह आउर समाप्ति।

नाटक कर दूसर तत्व हेके नेता। नेता माने लेजेक वाला। जे पात्र, नाटक के फलागम बटे ले जाएल ओहे नेता कहाएल। नेताय कर व्यक्तित्व नाटक के गति देल। नेता चाहे अभिनेता (हीरो) चाइर रकम कर होएँन– धीरोदात्त, धीरललित, धीरप्रशांत आउर धीरोद्धत। अभिनेता में जे मुध नेता होएल ओहे नेता कहाएल। ई नेता पुरुष चाहे नारी केउओ हल होए सकेल। पछमी नजइर में अभिनेता लगिन चरित्र–चित्रण कहल जाएल। पात्र मनक चरित्र मुध रूप से कथोपकथन, स्वगत भाषण, चाहे पात्र मनक क्रिया कलाप से पता चलेल।

तीसरा तत्व हेके रस। साहित कर मुध लक्ष्य हेके आनन्द कर प्राप्ति। एहे आनन्द के भारतीय काव्यशास्त्री मन रस कइह आहैं। रस, रसिक चाहे सहृदय अदमी कर हिया में रहेल। जे नाटक कर क्रिया कलाप से पझरेल। ई हालइत में देखइया साधारणीकरण कर प्रक्रिया से गुजरेल; कहेक माने नाटकीय पात्र कर दुख–सुख सभे देखइया कर होए जाएल। इखे रसदशा कहल जाएल। भरत मुनि रस बारे कइह आहैं– "विभावानुभाव व्यभिचारि संयोगाद्रस निष्पतिः।"

पछमी नाट्यशास्त्री मन उद्देश्य के हों नाटक कर तत्व में गिनेन। मुदा भारतीय काव्यशास्त्री मन इके रसे में मेसाए के देखेन। काले कि बेगर उद्देश्य कर नाटक होइए नी सकेल। उद्देश्य नाटक में प्रत्यक्ष रहे चाहे अप्रत्यक्ष रहबे करेल।

अभिनय तो नाटक कर असल तत्व हेके। इकरे चलते नाटक के दृश्य काव्य कहल जाएल। भरत मुनि कर मोताबिक अभिनय चाइर बरन कर

होएल–आंगिक, वाचिक, सात्विक आउर आहार्य। आंगिक अभिनय में अंग संचालन होएल तो वाचिक अभिनय, आंगिक अभिनय में जान डालेल। मुदा इकर लगिन, स्वरशास्त्र, व्याकरण, आउर छन्द–शास्त्र कर गेयान अभिनेता में एकदम रहेक चाही। सात्विक अभिनय में स्तम्भ, कम्प, रोमांच, मन आएल। आहार्य अभिनय में, केंस कर सिंगराएक, पिधेक–ओढ़ेक उपरे धेयान देल जाएल। पछमी नाट्यशास्त्री मन अभिनय के कथोपकथन में सोमइट के देखेन। कथोपकथन पात्र कर मोताबिक, सहज, सुंदर, बुझाएक निअर शिष्ट भाषा होएक चाही। ई कथोपकथन में ठाँव विशेष कर प्रभाव होएक चाही।

पछमी नाट्यशास्त्री देश–काल चाहे वातावरण इया परिवेश के हों नाटकीय तत्व में गिनेन। जब कि भारतीय नाट्यशास्त्री मन इके कथावस्तु में राखेन। नाटक के पतियाएक ले इकर देश–काल कर निर्वाह एकदम जरूरी आहे। देश–काल निअर, बोली–विचार, रीति–रिवाज, रहन–सहन, मन होएक चाही। खास कइर के पौराणिक, ऐतिहासिक, सामाजिक नाटक मन में देश–काल संबंधी छोटे एकन भूल पूरा नाटक के सत्यानाश कइर देल। नाटको ले प्रकृति आउर संस्कृति कर सही रूप में पालन होएक चाही।

नाटक कर गहरा संबंध रंगमंच से आहे। रंगमंचे में नाटक कर सही इनतिहान होएल। नाटक जहाँ खेलल जाएल ओहे रंगमंच हेके। एहे रंगमंच नाटक के दृश्य काव्य कर रूपे जनता तक पोहँचाएल। अभिनय करेक तेहें नेता के अभिनेता कहल जाएल। अभिनेता आउर अभिनय कला रंगमंच से जुड़ल आहे। से ले कहल जाएल कि कोनो नाटक कर सफलता नाटककार से बगरा अभिनेता कर अभिनय उपरे टिकल रहेल। सफल अभिनेता कोनवे नाटक के अभिनय कइर के देखाए देल।

पछमी नाट्यशास्त्री मन शैली के हों नाटक कर तत्व मानेन। शैली कहेक माने कहेक कर ढंग। पात्र का कहेक खोजतहे,?केकर से कहेक चाहतहे आउर कोन रूपे कहेक खोजतहे इकरे उपर शैली निर्भर करेल।

नागपुरी नाटक कर उद्भव आउर विकास उपरे नजइर कुदाले बुझाएल कि झारखंड में नाटक कर परम्परा अनइत प्राचीन आहे।

"छोटानागपुर की पहाड़ियों में सीताबेंगा की गुफा में द्वितीय या तृतीय शताब्दी ई. पू. की एक नाट्यशाला मिली हैं, जो 'नाट्यशास्त्र' के वर्णन

से मेल खाती है।'' (डॉ. श्रवणकुमार गोस्वामी– नागपुरी शिष्ट साहित्य, पृ. 10) मुदा इकर परम्परा के हामरे कठपुतली नाच आउर छव नाच से मिलाए के देइख सकिल। ई नागपुरी ठाँव कर लोक नाटक हेके। इकर में कोनो कथा कर गीत से आउर ताल से नाच संगे अभिनय होएल। छवनाच में मुखरा धारण करल जाएल। छवनाच में मुध छव मुद्रा होएल– चालन, धावन, उछलन, चक्रन, घोलटन आउर थिरकन। सेहे ले इके छव नाच कहेन। नचइया कर भाव भंगिमा के दर्शक चाइरो दने से देखेन। रंगमंच ले इहाँ अखरा कर उपयोग करल जाएल।

नागपुरी नाटक बहुत कमे प्रकाशित होए पाए हे मुदा लिखल आउर अभिनय तो ढेइरे होते आत हे। मुदा प्रकाशित नाटक में सहनी उपेन्द्रपाल नहन लिखल आउर धनी राम बक्शी कर संपादित करल लीला– ''नारद मोह लीला'' के पहिल ठाँव देल जाएल। इके गीति नाटक कइह सकिल। नागपुरी में रेडियो नाटक लिखेक में विष्णु दत साहु आउर श्रवणकुमार गोस्वामी केर 'तेतर केर छाँहे' सुशील कुमार केर ''चोका बोका कोका'' नामक धारावाहिक नाटक मनक क्रम आएल। इमनक संगे राधाकृष्ण, भुवनेश्वर अनुज, आउर किशोरी सिंह कर नाम रेडियो नाटक लेखन में लेल जाएल।

आदिवासी, नागपुरी, कला संगम स्मारिका, डहर, कचनार, बनफूल शंखनाद, छोटानागपुर संदेश, पझरा स्मारिका पत्र–पत्रिका मन में नाटक छपत हे जेकर से नवाँ हस्ताक्षर मन आवतहैं। इमन मधे–फा. नवरंगी, डॉ. विसेश्वर प्रसाद केशरी, महेश्वर दास गुप्ता, तीन कौड़ी साहु, काली कुमार सुमन, रवीन्द्र नाथ राय, अशोक पागल, अशोक श्रीधर वर्णेकर, गिरिराज, मन आगे आवत हैं।

फा. नवरंगी कर, 'सगुनिया जोलहा' बूढ़ा बुढ़िया आउर भालु' 'संजीवक बरद अउर पिंगलक सिंह' डॉ. केशरी कर 'ठाकुर विश्वनाथ शाही' गिरिराज कर 'अखरा निंदाए गेलक' 'साहेब कर सपना' 'सहिया बाप' 'करम बिहान' 'बनचोर' 'हाजत' आदि प्रकाशित आउर मंचित हो हे। इकर में ठाकुर विश्वनाथ शाही, तथा गिरिराज कर ई संकलित 1 से 7 एकांकी नाटक मन खेलल जा हे। एखन कुछ आउर नाटककार मनक नाटक आ हे जइसन– 1995 में अशोक पागल कर रेडियो नाटक संग्रह ''नवा इंजोर'', 1999 में तीन

कौड़ी साहु कर ''अंधविश्वास'' 2000 में ''रोशनी'' आउर बंधुआ मजदूर, 2003 में गिरिराज कर ''मरड. गोमके'' (श्रुति नाटक), 2003 में शिव अवतार चौधरी कर ''महादान'', 2004 में गिरिराज कर ''महाराजा मदरा मुण्डा'', 2004 में शिव अवतार चौधरी कर ''असुर कन्या'', 2005 में अशोक श्रीधर वर्णेकर कर ''नूतन इंजत'', 2006 में डॉ. वी. पी. केशरी कर रेडियो नाटक– ''रेडियो ले दू ठो नागपुरी नाटक''।

ई संग्रह कर नवाँ संस्करण में मोर कुछ चुनल एकांकी–नाटक मन के राखल जा हे। आसरा आहे ई नाटक अभिनय आउर अपन उद्देश्य के पुरा करेक में सफल होइ।

एतने–टुण्डु'

गिरिधारी राम गौंझू ''गिरिराज''
अध्यक्ष जनजातीय एवं
क्षेत्रीय भाषा विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

संस्करण– 2012

ई संग्रह में नाटक कर आउर दूसर विधा मन के जोड़ल जा हे। हीरानागपुर कर हीरा (ऐतिहासिक नाटक) वाह रे भाग्य विधाता (नुक्कड़ नाटक) बाप कर खून (पटकथा), सहिया आयो (रेडियो नाटक) सत अहिंसा कर मंतर (रूपक)। इकर से पढ़इया मन के इमनकर स्वरूप कर सधारण जानकारी होएक पारी।

गि. रा. गौंझू गिरिराज
2–1–2012

मंचीय नाट्य लेखन की अवधारणा

काव्येषु नाटकं रम्यम्। अर्थात वाणी का श्रृंगार है काव्य और काव्य का श्रृंगार है नाटक। नाटक को पंचम वेद कहा गया है और वेद का अर्थ है ज्ञान। अतः नाटक सम्पूर्ण ज्ञान है। इतना ही नहीं नाटक सम्पूर्ण कला संगम है। आदि नाट्याचार्य भरत मुनि के अनुसार नाट्य की वास्तविक आधार भूमि लोक जीवन है। ऐसी अवधारणा एक गंभीर विषय है।

नाट्यालोचकों ने नाटक को पठनीय और मंचीय रूप में विभाजित किया है। वैसे नाटक मंच के लिए ही लिखा जाता है भले ही उसका मंचन न हो पाता हो। आज जब काव्य, कथा, जैसी विधाएँ मंचित हो रही है वहाँ नाटक मंचित न हो सके या असंभव है। प्रायः मंच के लिए कई नाटक उपयुक्त नहीं समझे जाते ऐसा क्यों? इससे यह ध्वनित होता है कि मंच के लिए नाटक लिखे नहीं गए हैं। कोई भी नाटककार मंच के लिए या मंच की सुविधा के लिए नाटक नहीं लिखता। वह जो दृश्य अपने मानस मंच पर देखता है वह लिखता है। अगर किसी नाट्य निर्देशक को नाटककार के मानस मंच की पकड़ नहीं है तो निसंदेह वह उसे मंचित नहीं कर सकेगा। प्रसाद ने बहुत पहले उस विषय पर चर्चा की है कि निर्देशक नाटक के अनुकूल मंच की व्यवस्था करे न कि रंगमंच की सुविधा के लिए नाटक लिखे। आज नाट्य कला में इतने प्रयोग हो रहे हैं कि असंभव से लगने वाले नाट्क भी मंच पर सफलता के डंके पीट रहे हैं। किसी नाटक की असफल प्रस्तुति नाटक की नहीं निर्देशक की मानी जाती है। कुशल निर्देशक एवं दक्ष अभिनेता सामान्य से लगने वाले नाटक की मंचीय प्रस्तुति में जान डाल देते हैं। यदि नाटक मंचीय दृष्टि से सफल नहीं प्रतीत होता है तो निर्देशक उसका चयन ही क्यों करता है। अतः यहाँ निर्देशक की असफलता मानी जाएगी नाटक की नहीं। आज भी नए–नए प्रयोग धर्मी नाटक लिखे तथा मंचित नाटक अशोक पागल का "अमिबा" इसका सुंदर उदाहरण है।

किसी भी मंचीय नाटक का चयन और निर्देशन का पूर्ण दायित्व निर्देशक का होता है। अतः नाटक का कथ्य कैसा है? उसके कथ्य की संभावनाएँ क्या–क्या हो सकती हैं। निर्देशक उसे भी देखता है। नाटककार

नाटक किसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर लिखता है। यह आवश्यक नहीं कि पाठक समीक्षक व निर्देशक उसी उद्देश्य को देखता है। वह उससे परे भी जा सकता है परन्तु वह युक्ति संगत हो। जैसे धर्मवीर भारती का अंधायुग, मोहन राकेश का आषाढ़ का एक दिन, भारन्तेन्दु का अंधेर नगरी आदि।

नाटक का लेखन विषय के चुनाव पर निर्भर करता है कि कथ्य पौराणिक, ऐतिहासिक, काल्पनिक या मिश्रित है। वह इतिहास या यथार्थ को नाटक में रखता भर नहीं है अपितु उसमें युगबोध प्रक्षण रूप में विद्यमान रहता है। और यही नाटक लेखन की कुशलता है। अगर नाटक में युगबोध व जीवनादर्श प्रतिबिम्बित नहीं होता तो वह साहित्य नहीं हो सकता।

नाट्य लेखन के समय नाटककार के समक्ष देश काल व पात्र का संतुलन स्थापित करने की होती है। इसके साथ जिस क्षेत्र या संस्कृति की "वस्तु" हो उसकी प्रकृति एवं संस्कृति का सम्यक ज्ञान एवं प्रस्तुति अनिवार्य हो, अन्यथा वह दूध में नमक सा हो जाएगा। नाटक की वस्तु इतना जानदार हो वह पाठक हो या दर्शक उसे आकर्षित कर सके, उसे बांध सके। वस्तु के नियोजन में अंकों एवं दृश्य का बंधन जितना सशक्त, लघु एवं प्रभावशाली होगा नाटक उतना ही सफल माना जाएगा। कथावस्तु ठोस हो पर लचीला होने की गुंजाइश भी।

नाट्य लेखन में नेता या पात्र व चरित्र का चयन महत्वपूर्ण होता है। सीमित चरित्र में अधिक से अधिक कथा संयोजन की क्षमता रखना इसकी अनिवार्यता है। नाटक में पात्रों की उपस्थिति उनकी गतिविधि या अभिनय ज्यादा बोलता है संवाद की अपेक्षा। नाटक लेखन में इसका ध्यान विशेष तौर पर रखने की आवश्यकता होती है। संवाद ऐसे हों कि पात्रों का चरित्र भी उद्भाषित हो सके। पात्रों की वेशभूषा ही नहीं उनका अभिनय अधिक अभिव्यक्त हो सके चाहे अभिनय आंगिक, वाचिक, सात्विक या आहार्य हो। पात्रानुकूल देश–काल को सामान्यतः प्रकट करने वाली भाषा व संवाद का संम्प्रेषण नाटक को जीवंत बना देता है।

नाटक का मुख्य तत्व है रस। नाटक के लिए रस वैसे ही निष्पादित हो जैसे अंगुर और किसमिस से रस की प्राप्ति होती है। नाटक में जो

साधारणी करण की प्रक्रिया संचारित होती है वह रस का ही व्यापार है। यही रस सामान्यतः सहहृय को ही नहीं सामान्य व्यक्ति को भी प्रभावित करने की क्षमता रखता है। ऐसा तभी संभव है जब नाटक में रस का निरूपण सम्यक रूप से हो पाया हो। नाटक की आत्मा तो रस में ही सन्निहित होती है।

नाट्य रचना के साथ लेखक, निर्देशक और दर्शक तीनों की अदृश्य उपस्थिति रहती है। अतः लेखन के साथ लेखक उतना अवश्य ध्यान रखता है कि निर्देशक इसे किस दृष्टि से प्रस्तुत करेगा और दर्शक इसे किस रूप में ग्रहण करेंगे। यह आवश्यक नहीं की हमेशा नाटककार का दृष्टिकोण ही मंच पर अभिव्यंक्षित होगा। नाटक लेखन की क्षमता जितनी व्यापक होगी उसकी प्रभान्विति भी उतनी बड़ी होगी।

नाटक लिखने के उपरांत उसके कई पाठ होते हैं एक तो स्वयं नाटककार दूसरा पाठक तीसरा निर्देशक, चौथा अभिनेता और पांचवां दर्शक व आलोचक। इतनी दृष्टि से मंचित नाटक गुजरता है। तभी लिखित नाटक की परीक्षा मंचित नाटक के रूप में होती है। एक तरह से लिखे गए नाटक का प्रयोगशाला रंगमंच है जहाँ से नाटक तप कर कुंदन बनता है। यहाँ कहना चाहिए नाटककार का लिखा नाटक कुमारी कन्या (नायिका) होती है और मंचित नाटक सुखद बहू। जिस तरह बहू ससुराल की मर्यादा में आबद्ध होती है वेसे ही मंचीय नाटक रंगमंच से बंधा होता है। कन्या (बहू) की परीक्षा ससुराल में होती है वैसे ही लिखित नाटक रंगमंच में।

लिखित नाटक पाठ में जो प्रभाव डालता है वैसा ही अपितु कुछ ज्यादा ही प्रभाव दृश्य में डालने की क्षमता होनी चाहिए। क्योंकि श्रव्य की अपेक्षा दृश्य में हम साक्षात् घटनाओं एवं मनोभावों को देख पाते हैं। लिखे गए संवाद और अभिनेता द्वारा मंच में उतारे गए संवाद में परिवर्त्तन हो सकता है। यह निर्भर करता है संवाद प्रस्तुति की कला पर। सम्प्रति संवाद अदायगी में नाटकीय तकनीकी इतनी प्रभावशाली भूमिका अदा करती है कि श्वाँस निश्वाँस तक सुनाई पड़ते हैं। ध्वनि और प्रकाश दृश्य को अधिक प्राणवान बना देते हैं। परन्तु इस तकनीकी पक्ष को इतना हावी न हो जाने दें कि नाट्य का मूल गौण हो जाए तकनीकी पक्ष चकाचौंध कर दे।

यूनानी मत में लेखक ही नाटक का निर्देशन व मंचन (अभिनय) करे तो उस कृति की वास्तविकता बनी रह सकती है। परन्तु यह आवश्यक नहीं। नाटक की सफलता इसमें है कि निर्देशक एवं अभिनेता नाटक को कितने प्रभावशाली ढंग से खेल सकते हैं। ऐसा इसलिए कि नाटक की भाषा, रंगभाषा में विस्तार पा सकती है। नाटक के पाठक और दर्शक में अलग–अलग रस का संचार हो सकता है पर इतना नहीं कि रस भंग हो जाए। ऐसा तभी संभव है जब नाटककार कहना कुछ चाहता है और निर्देशक कुछ भिन्न। तब भी नाटककार और निर्देशक की भाषा एक होते हुए भी अर्थ का प्रभाव बदल सकता हैं और बदले भी हैं।

यही कारण है कि रंगमंच के लिए नाटक लिखना सबसे कठिन काम है। क्योंकि नाटक का रचनाकाल और प्रस्तुति काल एक नहीं रहता। नाटक का मंचन कल भी हुआ था आज भी हो रहा है और कल भी होगा। ऐसी स्थिति में लिखित नाटक एक होते हुए भी प्रस्तुत नाटक भिन्न हो जा सकते हैं। वह काल सापेक्ष नहीं रह जाता। नाटक को समयानुकूल रूप में निर्देशित किया जाता रहा है। हर युग की अपनी आवश्यकता होती है और नाटक निर्देशक उसे युगानुकूल बना कर ही प्रस्तुत करता है। इसके लिए आवश्यक है नाटक के लेखन की क्षमता वैसी हो। नाटक लिखने का तात्पर्य ऐसा हो कि वह समस्याओं का समाधान कर सके। नाटक प्राचीनतम श्रेष्ठ क़ला है जिसमें कल्पना और यथार्थ का संतुलन वास्तविक लगे। जैसे कंकाल को तितली का सौंदर्य और पंख मिल जाए।

लेखक

नागपुरी नाट्य साहित्य की तात्त्विक समीक्षा

साहित्य की सर्वाधिक प्रभावशालिनी विधा है नाटक। नाटक समान रूप से अनपढ़ से अनपढ़ एवं पढ़े–लिखे लोगो को आकर्षित करता है। मूलतः नाटक कुछ और नहीं जीवन की अनुकृति है जो किसी उद्देश्य विशेष के लिए अभिनीत की जाती है।

नाटक का उद्भव बचपन से ही हो जाता है। बड़े–बूढ़ों का अनुकरण करना बाल समाज की स्वाभाविक प्रवृत्ति रही है। इसी से बचपन की ऐसी गतिविधि के लिए **नटखट** शब्द का प्रयोग किया जाता है। **नट–खट** शब्द में जो **नट** शब्द है वह नाटक के लिए ही प्रयुक्त शब्द है। बच्चों से बड़ा, कुशल प्रकृत बिना शिक्षण प्रशिक्षण के अभिनेता, अभिनेत्री कौन हो सकता है। वाल्य–काल में बालक माता–पिता का उनके दैनिक गतिविधियों का कितना सुंदर नकल अथवा अभिनय करता है कि बड़े–बूढ़े देख कर दंग रह जाते हैं। वस्तुतः इन बाल क्रीड़ा के नाटक के दर्शक उनके परिवार के सदस्य ही तो होते हैं। घरेलु परिवेश के साथ–साथ सामाजिक परिवेश का भी अनुकरण अथवा अभिनय बाल सुलभ चप्पलता में हर घर में बच्चे करते हैं। नाटक को जीवन की अभिव्यक्ति ही नहीं समीक्षा भी कहें तो अतिशयोक्ति न होगी।

पाणिनि नाट्य की उत्पत्ति नट् धातु से बतलाते हैं। नट् में नृत प्राकृत रुप में अवस्थित है। नट्–नृत दोनो समानार्थी हैं। दोनों में अभिनय व्याप्त है नट् में संवाद की प्रधानता एवं नृत् में भाव नृत्य की प्रधानता होती है। इसी तरह रूपक और नाटक पर्यायवाची होते हुए भी प्रस्तुति की भिन्नता लिए होते है। नाटक में अवस्थाओं की अनुकृति की प्रमुखता होती है तो रूपक में इसके साथ रूप का भी आरोप आवश्यक हो जाता है। दोनों का उेश्य है आनन्द एवं ज्ञान प्राप्ति।

लोक के सुख–दुख से उत्पन्न अवस्था के अभिनय का नाम नाट्य जीवन है। नाटक जीवन और कल्पना सत्य–असत्य से समन्वित विलक्षण रूप धारण कर सर्वसाधारण को स्वनुभूति के लोक में ले जाता है। इसी से कहा जाता है जीवन ऐसा हो कि लगे अभिनय है और अभिनय ऐसा हो कि लगे जीवन है।

भरत मुनि का नाट्यशास्त्र, नाट्यशास्त्र समीक्षा के सिद्धान्तों का आदि ग्रंथ है। नाटक के लिए इन्होंने कहा है कि कृति जब नाटकालंकारों से सुशोभित, सरस, उत्कृष्ट भावों से समन्वित, प्रयोग में रमणीय, सुखात्मक, मृदुल संवाद, आदि हों तो वह नाटक है।

नाट्य दर्पणकार रामचन्द्र गुणचन्द्र के अनुसार नाटक, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का फल दाता होता है। नाटक का परीक्षण पुस्तक पर नहीं रंगमंच पर होता है। रंगमंच पर अभिनेता अपनी अभिनय कुशलता संगीत ध्वनि एवं प्रकाश व्यवस्था से साहित्य की किसी भी कथात्मक एवं भावात्मक विधा की प्रस्तुति प्रभावशाली ढंग से कर सकता है।

नाटक नृत्य से आरंभ हो कर अपने युग के अनुरूप नवीन रूप धारण करता चलता है। नाटक के स्वरूप परिवर्त्तन से उसकी समीक्षा के सिद्धान्त भी बदल जाते हैं। तब भी नाटक में मानवता का उदात्त रूप एवं समाज का वास्तविक रूप झलक उठता है। भारतेन्दु ने नाटक को नट लोगों का कर्म कहा है। नट जिसका कर्म ही है तमाशा दिखाना। काव्य के सर्वगुण सम्पन्न खेल को नाटक कहा जा सकता है क्योंकि नाटक समस्त कलाओं का संगम है।

ऋग्वेद से पाठ्य सामवेद से गीत, यजुर्वेद से अभिनय और अथर्ववेद से रस ले कर पंचम वेद की अवतारणा की गई जिसे नाटक कहा गया जिसे भावों की कलात्मक अभिव्यक्ति अभिनय के द्वारा किया जाता है। इसी से ईश्वर का धरती पर आने को अवतार कहा गया है। जहाँ विधाता मानवीय रूप में धरती के रंगमंच पर लीला अर्थात् अभिनय करता है। वैसे भी शेक्सपीयर ने संसार को रंगमंच और मानव को अभिनेता (पात्र) बतलाया है।

नाटक रसानुभूति का माध्यम होता है। अभिनेता अपने जीवंत अभिनय से दर्शक की भावनाओं को जागृत करता है। नाट्य समीक्षा में नाटक के जो तत्व हैं वस्तु नेता और रस (भारतीय मत में) एवं वस्तु, वातावरण, चरित्र, संवाद, भाषा–शैली, उदेश्य, अभिनय संगीत एवं रंगमंच (पाश्चात्य दृष्टि से) है। नाटक की समीक्षा करते समय यह देखा जाता है कि अभिनय में आंगिक, वाचिक आहार्य तथा सात्विक में किसकी प्रधानता है। आधिकारिक एवं प्रासंगिक कथावस्तु में जीवन के आदर्शो की प्रस्तुति हुई है या नहीं। असत्य

पर सत्य की विजय का प्रदर्शन सार्थक हो। वैसे ही संवाद के तीनों रूप श्रव्य, अश्रव्य एवं नियत श्रव्य का पालन करने में नाटक कितना सक्षम हुआ है? यह भी देखना है। देश काल और पात्र का असंतुलन पूरे नाटक को प्रभावीन बना दे सकता है। नायक का स्वरूप क्या है? दर्शकों पर वह कितना अमिट प्रभाव छोड़ सका है अभिनय एवं संवाद संप्रेषण का, समीक्षा में इसका उल्लेख नितांत आवश्यक है।

नाटक का सृजन सभ्यता एवं संस्कृति के परिवर्त्तन के साथ–साथ चलता है। प्रयोग धर्मी नाटक सदैव लिखे जाते रहे हैं। वैसे नाटकों की सफलता–विफलता का आकलन उसकी समीक्षा से अधिक मंचन से होता है। पाश्चात्य नाटक का अन्त जहाँ दुखान्त होता है भारतीय नाटक सुखान्त। ये नाटक पौराणिक, ऐतिहासिक, काल्पनिक अथवा मिश्रित भी होते हैं। इनमें ऐतिहासिक पात्रों पर नाटक की प्रस्तुति में विशेष शोध एवं संतुलन की समीचीनता होती है।

नाटकीय समीक्षा इस बात पर विशेष बाल देती है कि नाटक नैतिक मूल्यों की दृष्टि से मानवीय अभिव्यक्ति का श्रेष्ठ साधन बनने के योग्य है या नहीं। इसमें नाटककार पात्रों द्वारा अपनी परख में सफल हो पाया है या नहीं यह भी देखना पड़ता है।

नाटकों की कई विधाएँ विकसित होती रही हैं जैसे– साहित्यिक, रंगमंचीय, प्रहसन, साहसिक, पौराणिक, सामाजिक, एकांकी, भावनाट्य, एकपात्रीय, झाँकी, कल्पनामूलक,(फैण्टेसी) ऐतिहासिक, व्यक्ति प्रधान, समस्यामूलक, व्यंग्य, नाटिका महानाटक (दस अंक से ऊपर) काव्य नाटक, संगीत रूपक, गीति नाट्य, आदि। सम्प्रति नाट्य संसार में फिल्म, दूरदर्शन, आकाशवाणी, एलबम आदि के अतिरिक्त नुक्कड़ नाटक श्रुति नाटक सबसे अधिक प्रचलित हो रहे हैं। जहाँ अभिनय, भाव प्रस्तुति, संवाद, आदि की सहायता से खुले मंच में अपने उद्देश्य की पूर्ति हेतु नाटक करते हैं।

नागपुरी नाट्य संसार में भी कहा गया है कि समस्त साहित्य की शोभा है नाटक। वाणी का श्रृंगार है संगीत और नृत्य संगीत का सौंदर्य है नाटक। नाटक के पूर्व नृत्य का अविर्भाव हुआ। नागपुरी समाज में हर गाँवों का एक या अधिक अखरा होता है। जहाँ हर रात नृत्य संगीत का शमा बंधा

रहता है। यहाँ अखरा ही उन्मुक्त रंगमंच है। नाचना गाना बजाना नाटक का ही अंग है। इसके चारों ओर दर्शक होते है।

झारखंड में भी कठपुतली नृत्य तथा छव नृत्य नाटक के प्रारंभिक बीज रूप रहे हैं। छव नृत्य में मुखौटा अथवा बिना मुखड़ा के भी किसी प्रसिद्वकथा पर नृत्य होता है। छव नृत्य इसकी छः प्रकार के अभिनय की स्थिति को लेकर कहा गया है–चालन धावन, उछलन, कम्पन, चक्रन'व घोलटन। भाव या पात्रानुरूप छाटे या बड़े मुखौटे इसमें पहने जाते हैं। यह दिनोदिन देश–विदेश में लोकप्रिय हो रहा है।

1956 में सहनी उपेन्द्र पाल नहन का गीति नाट्य नारद मोह लीला, नौटकी शैली में पहली बार आया। फा. नवरंगी जी ने सगुनिया जोलहा, भालू और बूढ़ा–बुढ़िया। रेडियो नाटक में तेतर के छाँहे विष्णु दत्त साहु एवं श्रवण कुमार गोस्वामी, ठाकुर विश्वनाथ शाही केशरी जी का, करम का फेर सुशील कुमार लाल का, सेवा और नौकरी डॉ. गोस्वामी, अखरा निंदाए गेलक गिरिराज का, नवाँ इंजोर अशोक पागल का, अंधविश्वास, रोशनी, बंधुवा मजदूर तीन कौड़ी साहू का, मरड. गोमके (जयपाल सिंह) गिरिराज का, महादान तथा असुर कन्या शिव अवतार चौधरी का महाराजा मदरा मुण्डा, हीरानागपुर कर हीरा, आदि गिरिराज का, नूतन इंजत असम से अशोक श्रीधर वर्णेकर का, रेडियो ले दू ठो नागपुरी नाटक केशरी जी का, आदि प्रमुख रूप से जाने जाते हैं।

इनकी समीक्षा भी नाटकीय तत्वों पर एवं स्वतंत्र रूप से हुआ है। नागपुरी नाटकों में भी नागपुरी कथा साहित्य की भाँति वही सब अन्तर वेदना को अभिव्यक्ति मिलती है। जयपाल सिंह मरड. गोमके पर लिखा प्रथम श्रुति नाटक प्रख्यात रंगकर्मी अशोक पागल द्वारा 2001 में राँची एक्स आई एस एस तथा जमशेदपुर के माइकेल जॉन अडिटोरियम में अपार भीड़ में अपार सफलता के साथ मंचित हुआ। इसकी समीक्षा में कहा गया कि इस नाटक में प्रथम बार पंडित नेहरू को खलनायक के रूप में प्रस्तुति हुई है। इसी तरह 1996 में डॉ. केशरी का नाटक ठाकुर विश्वनाथ शाही (1857 के अमर स्वतंत्रता सेनानी के अगुवा) नाटक मंचित हुआ था। नागपुरी में दर्जनों फिल्में

अब तक बन चुकी है। नुक्कड प्रचारात्मक नाटक बारंबार खेला गया है। जन जागृति लाने के लिए नाटक से अच्छी दूसरी विधा इतनी चुम्बकीय, आकर्षक, एवं प्रभावोत्पादक नहीं है। इस क्षेत्र की समीक्षा में जो नाम मुख्य रूप से आए हैं वे हैं– सहनी उपेन्द्र पाल नहन, डॉ. केशरी, प्रमोद कुमार राय, डॉ. राम प्रसाद, राकेश रमण, डॉ. सुधीर कुमार राय, गिरिराज आदि।

नागपुरी नाटकों की समीक्षा का भविष्य सुनहरे दौर से गुजर रहा है। नाटकों तथा फिल्मों–दूरदर्शनों के कलाकारों ने नाटक जगत् एवं उसकी समीक्षा में नित नए मानदण्ड खड़े कर रहे हैं। हाँ मंचित नाटक सीमित हो रहे है। अतः इनकी समीक्षा भी पठनीय नाटकों की भाँति हो रही है।

लेखक

(ऐतिहासिक नाटक)

हीरानागपुर कर हीरा

नजइर– एक

(ग्वालियर किला में जहाँगीर कर दरबार। जहाँगीर, दुइ गो जौहरी, इब्राहिम खाँ आउर कुछ दरबारी बइठल– दरबार चलत हे)

जौहरी एक– जहाँ पनाह! गुस्ताखी माफ होवे तो अरज करों।

जहाँगीर– जे कहेक आहे सेके बेखौफ कहू जनाब जौहरी मो. जलील।

जौहरी एक– जहाँ पनाह। खुखरा राज से जीतल सउब हीरा नकली निसकलक। (आपन ठिन ले हीरा निसकाए के देखाए के) असली हीरा ई रकम चमकेला जहाँपनाह! (दुइयो रकम कर हीरा देखाएल)

जहाँगीर– बारह साल में खुखरा राज कर हीरा में एक कटिक चमक कम नी हो हे? (आपन अँगठी के देखाएल) हामर नजइर में एखनो रउर हीरा ले बगरा खुखरा कर हीरा, बेसी लवकत हे। खुखरा कर हीरा– नकली!

इब्राहिम खाँ– आलम पनाह! हाँथे कंगना तो आरसी का?आउर पढ़ल–लिखल ले फारसी का?खुखरा नरेश दुर्जनशाल, हीरा कर जबरजस पारखी आहैं । उनके इसनेहें हीरा राजा नी कहैं। ऊ एखने हिएँ हीरा के परइख देबैं। ई ग्वालियर किला में कैद हीरा राजा के आएक में कतना देरी लागी? (दरबारी मन फुसू टुरू करैंना)

जहाँगीर– खुखरा नरेश दुर्जनशाल के फौरन हाजिर करल जाए। (इब्राहिमखाँ जाए के बंदी हालत में दुर्जनशाल के लानेल)

इब्राहिम– आलम पनाह! खुखरा नरेश हाजिर हैं।

जहाँगीर– हीरा राजा के जंजीर से आजाद करल जाए। (खोलल जाएल)(तनिक खोलेक तक ठहइर के) खुखरा नरेश! हामरे सुइन ही अपने हीरा राजा कर नाँव से जानल

जाएँना! हीरा के परखेक में अपने माहिर आहैं। हामरे मनक जौहरी कर कहना आहे कि अपने से मिलल सउब हीरा असली ना लागे।

दुर्जनशाल– बादशाह सलामत! अपने से मिलल हीरा नइ! लूटल हीरा कहैं! महाराजा मदरा मुण्डा कर पोस बेटा महाराजा फणि मुकुट राय कर सौगंध जे हामर आदि पुरखा हेकैं– हामर हीरा नकली होए नी सकेल। जरूर इकर में केकरो चाल होइ! हीरानागपुर कर हीरा नकली होए नी सकेल।

जौहरी दुइ– हीरा कर हामरे खानदानी जौहरी हेकी। असली–नकली हीरा के परखेक हामरे ले लेंगा हाथक खेइल हेके। अगर तोएँ ई हीरामन के असली साबित कइर देबे तो हामरे दुइयो तोर धाँगर बइन जाब।

जहाँगीर– (खिसाए के) जौहरी जनाब मो. जलील! अदब से बात करू! खुखरा नरेश हामर बंदी जरूर हेकैं मुदा हीरा कर बादशाह हेकैं। ई मइत भुलू।

जौहरी दुइ– गुनाह माफ करैं जहाँ पनाह! आगे ले हामरे से इसन बेअदबी नी होइ।

जहाँगीर– (दुर्जनशाल दने देइख के) हीरा कर बादशाह! अगर अपने ई हीरा मनके सही–सही परइख देबैं तो अपने कर बाकी सजा सउब माफ कइर देल जाइ। एहे घरी एहे समय से।

दुर्जनशाल– बादशाह सलामत! अगर अपने मोर संगे कैद नौवों बंदी राजाव मन के छोइड़ देक कर बचन देवैं तो मोएँ एखने ई हीरा मन के असली आउर नकली कर साबूत पुराए देमू...।

जहाँगीर– (सोइच के) बहुत खूब! हामके मंजुर आहे। मुदा खेयाल रहे अगर हीरा मनक सही परख नी होएक परालक हले अपने कर कैद कर सजाइ बमुश्कत दोबर होए जाइ।

दुर्जनशाल– आपन आदि पुरखा महाराजा फणि मुकुट राय कर सौगंध– बादशाह सलामत। मोके मंजूर आहे। बादशाह सलामत

एक ठो घाना मंगुवाल जाए।

इब्राहिम खाँ– घाना हाजिर है आलम पनाह! (घना देते)

दुर्जनशाल– (असली आउर नकली हीरा मन उपरे घाना चलाएँन। नकली गुँड़ा होए जाएल आउर असली घाना में गबइच जाएल)– बादशाह सलामत ई रहलक असली आउर नकली हीरा।

दरबारी– कमाल आहे! कमाल आहे! वाह! वाह!

जहाँगीर– ई हाम का देखत ही! जौहरी मो. जलील! रउर हीरा नकली! सउब कर सउब! जेके असली बताएक कर दावा करत रही। खुखरा नरेश अपने कर हीरा तो घाना में गबइज गेलक। आब ई निकली कइसे?

दुर्जनशाल– निकली बादशाह सलामत निकली! पहिले मोर साथ कर नौवों बंदी राजा मन के मुक्त कइर देल जाओक। बचन तो एहे होए रहे।

जहाँगीर– खुखरा नरेश! अपने कर बेखौफ कहेक अदा! आउर इन्सान ले बेपनाह मोहब्बत, आउर, आउर हीरा परखेक कर हुनर कर हाम दाद देत ही। सउब बंदी राजा मन के आजाद कइर देल जाए। आउर उमन मधे एक झन के हामर सामने पेश करल जाए। इब्राहिम खाँ........... ।

इब्राहिम खाँ– (जाए के एगो राजा के ले आनेल) हाजिर हैं आलम पनाह!

दुर्जनशाल– बादशाह सलामत! आइझ मोएँ अपने कर जबर उदार, हृदय देखलों। मोर साथ कर नौ बंदी राजा मनक मुक्ति देइख के मोर हिया में आनंद नी समात हे।

जहाँगीर– खुखरा नरेश! अपने कर दरिया दिली से हाम बेहद खुश होली। आइझ हाम खुखरा नरेश दुर्जनशाल के 'शाह' कर खिताब से नवाजत ही। आउर आपन दरबार में बराबरी कर दर्जा केर एलान करत ही। इनके आसन देल जाए! इब्राहिम! ताम्र पत्र तेयार होए।

इब्राहिम खाँ– खुखरा नरेश, हीरा कर बादशाह, दुर्जनशाल शाह जिंदाबाद!

दरबारी– जिंदाबाद (तीन धँव)

दुर्जनशाल– (इब्राहिम आसन तक लेजेल! आसने ठिन ले बेगर बइठले आपन अँगठी कर हीरी से घाना में गबचल हीरा के बाहरे सटाए के निसकाए के हाथ में ले के इब्राहिम के देते) ई रहलक अपने कर असली हीरा बादशाह सलामत।

जहाँगीर– मरहवा! मरहवा! बहुत खूब! अपने तो चुटकी बजाते लोहा में गबचल हीरा के निसकाए देलैं। आउर हाम फिकराल रही कि ई हीरा निसकी कइसे? हाम ई हीरा मन के हीरानागपुर कर बादशाह! दुर्जनशाल शाह के वापस करत ही।

दुर्जनशाल– बादशाह सलामत! महाराजा मदरा मुण्डा कर सौंगंध जे हीरा हामरेक हाथ से निकइल गेलक उके मोएँ वापस नी ले सकोंना। एहे हामरे कर धरम हेके।

जहाँगीर– सुबहान अल्लाह! सुबहान अल्लाह! बदशाह दुर्जनशाल शाह! फरिश्ताव मनक दिल एतना जबर नी होएला। (जौहरी मन घसकेक लागेन सेके देइख के) होशियार! जौहरी मन के कैद कइर लेल जाए। (दुइ गो सिपाही आगे आएँना)

दुर्जनशाल– बादशाह सलामत! मोर बिनती आहे कि जौहरी मन के छमा कइर देल जाओक। का ले कि कोनो ना कोनो रूप में इमन हामरे मनक मुक्तिदाता होलैं।

जहाँगीर– बहुत खूब! सुबहान अल्लाह! हाम आपन जिनगी में इसन बादशाह ना देखली ना सुनली, जेकर दिल में इंसानियत कर हुकुम चलेला। जे केखों कैदी तक देखेक नी चाहैंना। वाकइ! अपने लाजबाब आहैं। हाम अपने कर कायल होले जात ही। ई बेइंतहाँ खुशी कर मोका में आउर हीरा कर

बादशाह दुर्जनशाल शाह कर खिदमत में शानदार जश्न पेश करल जाए। (नचनी, बजनिया गायनाही मन आए के नाच गीत बाजा पेश करैंना आउर निसइक जाएँना।

जहाँगीर– इब्राहिम खाँ! हीरा कर बादशाह के बाइज्जत खुखरा राज पोहँचाए देल जाए।

बंदी राजा– बादशाह सलामत! हामरे सुइन ही हीरा राजा माटी–खपरा कर मामूली गढ़ में रहैंना! हामरे नौवों राजा इनकर गढ़ कर दर्शन करेक चाहिला। आउर ई मुक्ति कर इयाइदगारी में हामरे एक ठो नवरतन गढ़ बनाए देक खोजत ही। इकर अनुमति अपने देतैं तो बड़ किरपा होतक बादशाह सलामत!

दुर्जनशाल– बादशाह सलामत, आउर मोर दुखक दिनकर संगी मन! अपने मनक नवरतन गढ़ बनाले हामर खुखरा– झारखण्ड कर समरसता आउर बराबरी कर भाव गड़बड़ाए जाइ। महाराजा मदरा मुण्डा कर बनाल शासन–विधान मदरा पाँजी कर उल्लंघन होइ।

जहाँगीर– हीरा कर बादशाह दुर्जनशाल शाह ना अपने नियर केउ बादशाह हो हैं ना होबैं। हाम अपने कर आगे मुँड़ नेवात ही। अपने से इलतजा आहे कि ई राजा मनके अपने नाराज होएक कर मोका नी देबैं।

दुर्जनशाल– बादशाह सलामत! अपने कर आज्ञा मोर माथ में! मुदा मोएँ ऊ नवरतन गढ़ में नी रहेक पारमू। हामरे मदरा पांजी से बंधाल आही। हामरे मनक खुखरा–झारखण्ड में राजा मन कोनो किसिम कर लगान अपने मन नियर नी लेवैं। बादशाह सलामत आब हामरे के अपने, आपन राइज जाएक कर आज्ञा देवैं। बादशाह सलामत के खुखरा–झारखण्ड राइज दने ले हजार–हजार जोहाइर।

जहाँगीर– दुश्मन बनाए के लाइन रही। जिगरी दोस्त बनाए के

रूखसत करत ही हीरानागपुर कर हीरा, हीरा कर बादशाह दुर्जनशाल शाह। अलविदा! करेक पहिले.......।

इब्राहिम खाँ– (जहाँगीर कर कान में कुछ कहेल) एक तनिक खुखरा नरेश।

जहाँगीर– खुखरा नरेश हामके पता चइल हे अपने बहुत बेस गाएँना। ग्वालियर कर किला में अपने कर उदास भरल गीत गुंजरत रहत रहे। दर्द भरल गीत के जाते–जाते सुनाते जाएक कर हाम गुजारिस करत ही।

दुर्जनशाल– (एक गो उदासी राग कर गीत सुनाएँना)

नजइर– 2

(खुखरा राइज दरबार कर बाहरे......पइका नाच कर संगे महाराजा दुर्जनशाल आउर उनकर संगे नौवों राजा मन के परइछ के भीतरे आसन में बइठाएँना। तले गायनाहा, बजनिया आउर मरदानी झुमराहा मन मरदानी झुमइर महाराजा कर आपन राइज घुरेक खुशी में उत्सव मनाल जाएला आउर निसइक जाएँना। दुर्जनशाल आपन आसन में तले उनकर दुइयो दने नौवों राजा मन आउर दरबारी मन बइठैंना)

बंदीराजा एक– वीर रस से सिंगराल ई नाच आउर गीत से हामरे आश्चर्यचकित होए गेली खुखरा नरेश! जिनकर हाथ में दू–धारी तरवाइर आउर ढाल संगे नाच–बाजा आउर गीत में एतना बगरा वीर रस आहे तो उकर लड़ाइ कर मैदान में कतना भयानक जुध होत होइ?

दुर्जनशाल– हामरे जुध कर रइसका ना लागी। अखरा कर बगरा रइसका हेकी। सेहे चलते तो हामर हाइर मुगल सेना से भेलक। खुखरा– झारखंड में हाथे ढाल आउर तरवाइर मुदा लहू कर निहीं रस कर धार बहेला। इकरे सबूत हेके पइका आउर मरदानी झुमइर नाच आउर गीत।

बंदीराजा दुइ– हामरे कर मुक्तिदाता खुखरा नरेश हामरे के ताजुब बुझाएल कि आपने नागवंश कर मुकुट मणि हेकैं। हीरा नागपुर कर महाराजा हेकैं मुदा अपने मनक गढ़ आउर

महल तो आम अदमीमनक तइर खपरा कर छाइन माटी पखना कर भीत देखत हों। जइसन सुइन जाइन रहों उकरो ले बेसी साधारन।

बंदीराजा एक-- आब हामरे बुझेक पारली– अपने कर महानता आउर लोकप्रियता कर राज का हेके! इके तो हामरे हिंआ आवल परे जानली।

बंदीराजा दुइ-- मुक्तिदाता! हामरे नौ बंदी राजा अपने कर नगर बुलेक घरी एक ठो अइत सुंदर ठाँव देखली। चटाइन कर पहार से घेराल, हरियर बन से शोभल डोएँसा ना का नाँव बतालैं ऊ ठाँवे कर तहें एकठो छोटे सन ई मुक्ति कर इयाइदगारी में एगोड़ गढ़ बनाए देक खोजत ही। आउर एकेक ठो मंदिरो संगे संगे।

बंदी राजा एक-- हामरे मनक बिनती आहे मुक्तिदाता। एकठो छोटे सन निशानी के अपने नामंजुर ना करबैं।

दुर्जनशाल-- हामर कठिन कष्ट दिनक संगी नवरतन नरेश मन बादशाह कर आउगे मोएँ ई बात के सफा कइह दे रहों।

बंदीराजा दुइ-- अपने नी होतैं तो हामरे नौ बंदी राजा बंदी घर में दम तोड़त रहती। सहाँ से अपने बचाए के लाइन हैं से तेहे एकठो छोटे सन गढ़ आउर मंदिर मन अपने कर इयाइद में। अपने हतास नी करबैं हामरे के।

दुर्जनशाल-- अगर अपने मनक एहे मन आहे तो मोएँ आपन नवरतन संगी मन के निराश नी करमू।

बंदीराजा एक-- हामरे कर हिया हुलस गेलक महाराज एतना सुइन के।

दुर्जनशाल-- अपने मन बनाएँ मुदा मोएँ आगेहें कइह दे हों। हामरे हुँआ रहेक नी पारब। मुदा मोएँ ऊ गढ़ के जेके अपने मन बनाबैं उकर नाँवे राखमू नवरतन गढ़।

बंदीराजा दुइ-- हीरानागपुर कर हीरा राजा कर जय!

सभे बंदी राजा-- जय!

बाप कर खून

नटकरवा (पात्र)

बाप-- सतर बरिस कर बूढ़ा।

माँय-- साठ बछर कर बुढ़िया।

बड़का बेटा-- चालीस साल कर।

मंझला बेटा-- पैंतीस बरिस कर।

संइझला बेटा-- तीस बछर कर।

कंइझला बेटा-- पचीस साल कर।

छोटका बेटा-- बीस बरिस कर।

सरपंच-- पैसठ बछर कर।

पंच-- चाइर झन-- 50--60 साल कर।

पड़हा राजा-- पचपन बरिस कर। राजा बेटा 18 बछर कर।

दीवान-- साठ साल कर। गँवइया पाँच झन।

परिवेश-- गाँव घर आउर अखरा।

शॉट एक

ठाँव-- गाँव घर

समय--दिन।

दृश्य-- गाँव कर गोटेक मध्यम वर्ग कर खपरा घर। ढाबा में बूढ़ा बाप खाटी में बेमार पड़ल आहे। पाँचो बेटा आपन बाप ठिन ठाढ़ आहैं।

बाप-- (बेराम होएक नियर बोली में) तोहरे मन सउब आए गेला?

बड़का बेटा-- हँ बा।

बाप-- मोर बात के धेयान से सुना। (खोखेक लागेल)

छोटका बेटा-- सुनत ही बा!

बाप-- जे कहत हों उके मानबा। (जोर से खोखेक)

मंइझला बेटा-- मानब बा।

बाप-- मोर जाएक समय आए गेलक। (हाँफेक लागेल)

संझला बेटा– इसन का ले कहिस बा! तोएँ बेस होए जाबे।

बाप– जब मोएँ नी रहमू तब तोहरे मन मोर जमीन जायदाद के चाइर भाइ मधे बाँइट लेबा। एक झन के कोनो ना देबा। सुनला ऽ..... (आउर जीव उइड़ जाएल)

शॉट– दुई,

समय– दिन

ठाँव– अखरा

दृश्य– गाँव कर अखरा में पंचइती बइठ हे।

बड़का बेटा– माइनगर पंच मन। कुछ दिन आगे हामरेक बाप नोकसान होए गेलैं।

सरपंच– पंच मन के ई बात कर पता आहे। तोएँ कहेक का खोजत हिस? सेके कह।

बड़का बेटा– हामरेक बाप कइह जा हैं कि– मोर जमीन जायदाद के चाइर भाइ में बाँइट लेबा। एक झन के कोनो ना देबा। सेहे ले बापे कर कहल मोताबिक हामरे मनक जमीन जायदाद कर बँटवारा कइर देल जाओक।

पंच एक– तोहरे मन पांच भाइ आहा नि!

बड़का बेटा– हँ।

पंच दुइ– तो चाइरे भाइ में बँटवारा का ले?

सरपंच– का ले कि इमनक बाप कर एहे अंतिम इच्छा रहे।

बड़का बेटा– हँ। एहे बात रहे।

पंच तीन– एक भाइ संगे ई अन्याय का ले?

पंच चाइर– बापक जमीन–जयजाद में सभे बेटा मनक बराबइर हिस्सा रहेल।

सरपंच– इमनक बाप कर आखरी इच्छा नियर ई बँटवारा तो नी होए सकेल। एकदमे कठिन।

पंच एक– पाँच भाइ मन मधे एक झन के हिस्सा नी देक तो सरासर बेइमानी होइ।

पंच दुइ– कहले जा हे हेंठे पंच उपरे परमेसर!

सरपंच– इसन में तो हामरे पंच मन ई बँटवारा नी कइर सकिल। इकर फैसला ले तो पड़हा राजा ठिन तोहरे मनके जाएक होइ। बूढ़ा अखरा में इकर फैसला होइ।

शॉट– तीन,

समय– दिन

ठाँव– बूढ़ा अखरा

दृश्य– अखरा में पड़हा पंच सभे बइठल आहैं। गँवइया सामने बइठल।

बड़का बेटा– माइनगर पड़हा राजा! हामरेक आबा कर आखरी इच्छा नियर हामरेक जायदाद के बाँइट देल जाओक।

पड़हा राजा– का रहे तोहरे मनक बाप कर इच्छा?

बड़ बेटा– पड़हा राजा साहेब! हामरे मनक बाप कर आखरी इच्छा रहे कि हामरे पाँच भाइ मन मधे एक झन के जमीन जायजाद में हिस्सा ना देल जाओक।

पड़हा राजा– इकर ले तो तोहरे मन के गाँवक पंचाइत में जाएक रहे।

मंइझला बेटा– जाए रही राजा साहेब!

पड़हा राजा– गाँवक पंचायत इकर में का फैसला देलक?

संइझला बेटा– गाँवक पंचायत में ई बँटवारा नी होएक पारलक राजा साहेब।

पड़हा राजा– तोहरे कर आबा कर आखरी इच्छा नेयाय कर विपरीत आहे। पाँचों भाइ के बराबइर हिस्सा मिली।

दीवान– महाराज! मरेक वाला अदमी कर आखरी इच्छा कर माइन करल जाएल।

गँवइया एक– राजा साहेब, आखिर में कोन एक झन के आपन बापक जमीन जायजाद में हिस्सा नी देक होइ?

राजा– तुरता– तुरती में कोनो जबर फैसला सही नी होएल। इकर ले हामरे आइझ ले पाँच दिन बादे सोइच विचाइर कइर के फैसला लेब।

शॉट– चार,

समय– दिन

दृश्य– पड़हा राजा कर कोठा घर। राजा बेटा सुतना घर में आहैं। पड़हा राजा हुँआ ढुकैंना आउर फेटा के छोइर के फेकैंना तले पलंग में बइठ जाएँना।

राजा बेटा– (भीरे आए के) बाबा! का बात आहे? अपने के मोएँ चाइर दिन ले गौर करत हों। अपने बहुत चिंता में आहैं।

पहड़ा राजा– (धीरे ले, बेमन से बोइल के मुँड़ बेटा दने उठाए के देखैंना) हँ बेटा। एक भारी झंझट वाला मामला में बाइझ जा हों। उकर से निसकेक कर कोनो उपाइए नी दिसत हे।

राजाबेटा– कइसन झंझटिया मामला बाबा।

पड़हा राजा– एक गो बाप कर पाँच गो बेटा आहैं। आबा हार आपन आखरी इच्छा में कइह राइख हे कि मोर मरेक बादे मोर जमीन जयजाद के चाइर भाइ में बाँइट लेबा। आउर एक झन के कोनो ना देबा। सेके बताबे नी घरलक।

राजा बेटा– बस, एतने सुन बात ले। बाबा इकरे ले अपने फिकिर में आहैं। मोके काइल बूढ़ा अखरा ठिन लेते जाबैं।

शॉट– पाँच,

समय– दिन

दृश्य– बूढ़ा अखरा में गाँव घर कर अदमी मन जमा आहैं। पड़हा राजा कर बगल में राजा बेटा बइसल आहैं। पंच मन अगल–बगल बइठल आहैं।

पहड़ा राजा– (ठाढ होए के) हामरे चाहत ही कि ई पाँचों भाइ कर बँटवारा कर फैसला राजा–बेटा करैं।

राजा बेटा– दीवान साहेब! इमनक मामला का आहे?

दीवान– बात इसन आहे (देखाए के) ई पाँच भाइ कर बाप हार आपन आखरी इच्छा में कइह जा हैं कि मोर संपति में एक बेटा के कोनो ना देल जाए। बस ई पाँच झन में कोन भाइ के हिस्सा नी देल जाए से बात इनकर बाप हार नी बताए जा हैं?

बड़का बेटा— हामर आबा इके नी बताए पारलैं आउर उनकर जीव उइड़ गेलक।

राजा बेटा— दीवान साहेब! एक ठो बेस तेज तरवाइर मंगुवाल जाओक।

दीवान— (आपन तरवाइर डंडा से निसकाए के देते) ई तरवाइर के लेल जाओक। ई पड़हा कर सउबले तेज तरवाइर में से एक आहे।

राजा बेटा— (तरवाइर लेइ के उकर धार के अंगरी लगाए के देखेल तले बड़ बेटा ठिन जाए के कहेल) रउरे सउब ले बड़का हेकी नि? तो लेउ (तरवाइर देल) ई तरवाइर से आपन छोट भाइ के काइट देउ। बस। तले चाइरो भाइ में जायजाद बाँइट लेब। इकर से बँटवारा सहज होए जाइ।

दीवान— आउर बापो हारक आखरी इच्छा पूरा होए जाइ।

बड़का बेटा— गलती होए तो मोके डंड देवैं। मोएँ आपन भाइ के काटेक सोचियो नी सकोंना। सेकर सिया तो मोखें हिस्सा ना देल जाओक।

राजा बेटा— रउरे जाउ। (मंइझला भाइ ठिन जाए के तरवाइर देते) रउरे मंइझला भाइ हेकी नि? लेउ आउर आपन छोट भाइ के काइट देउ। इसन करले बँटवारा सहजे होए जाइ।

मंइझला बेटा— निहीं, निहीं। मोएँ आपन छोट भाइ के मारे ले तरवाइरो के हाँथ नी लगामू। उकर ले मोहे आपन हिस्सा नी लेमू।

राजा बेटा— रउरे जाउ। (संइझला भाइ ठिन जाए के तरवाइर देते) संइझला रउरेहें हेकी नि? लेउ धरु तरवाइर, आउर छोटका के काइट देउ आउर चाइरो झन बाँइट लेउ।

संइझला बेटा— ई काम तो मोके ना फरमाएँ। छोट भाइ के मारेक पाया मोर में नखे। मोहे हिस्सा लेक से निकइल जात हों।

राजा बेटा— रउरे तीनों भाइ कायर ही। डरपोक ही (कंइझला भाइ ठिन जाए के तरवाइर देते) रउरे लेउ ई तरवाइर के। रउर तीनों

भाइ डरगुहा आहैं। धरु तरवाइर, आउर काइट देउ छोट भाइ के। आउर ई बँटवारा कर झंझटे के खतम कइर देउ।

कंइझला बेटा– (तरवाइर झोइक के) जइसन पंच कर फैसला। (आउर छोट भाइ के काटे ले तरवाइर उठाएला कि राजा बेटा कंइझला भाइ कर हाँथ के धइर लेना)

राजा बेटा– (गरइज के) ठहर तनिक। फैसला होए गेलक। कंइझला भाइ के हिस्सा नी मिली।

गंवइया एक– अलबत! अलबत! एकदम सुपट फैसला देलैं राजा बेटा। इसन निरदया भाइ के तो एको धूर एतना हिस्सा नी मिलेक चाही।

दूसरा गंवइया– इकर ले बँढ़िया फैसला आउर का होए सकेल?ई, चाइरो कर भाइ होइए नी सकेल!

तीसरा गंवइया– इनकर बाप हार इसनेहें आखरी इच्छा नी बता हैं होइ? जब तीनों भाइ में एके लहू बहत हे तो इकर में ऊ लहू कहाँ गेलक?

दीवान– रउरे नगदे कहत ही। ई दुष्ट कर बेवहार से तो एहे पता लागेल कि इकर बाप कर खून इकर में नखे। निहीं तो आपन छोट भाइ के काटे ले तरवाइर नी उठातक!

पड़हा राजा– का रउरे सउब गँवइया पंच मन इनकर फैसला के सही मानत ही?

भीड़– हँ राजा साहेब। एकदम सुपट फैसला होलक।

दीवान– इकर ले उचित नेयाय होइए नी सकेल। इके केउ नामंजुर करबे नी घरबैं।

पड़हा राजा– राजा बेटा कर फैसला ले इनके हामरे बराबइर इयाइद राखब। ई झंझट कर फैसला कइर के पड़हा राजा आउर पंच मनक, मनक चिंता दूर कइर देलैं।

दीवान– राजा साहेब! इसनेहें बुधिमान बेटा मनक फैसला ले कहल जा हे– बाप ले बेटा छव महीना बड़ होएल।

पड़हा राजा— माइनगर पंच मन ई बँटवारा कर फैसला के इमनक माँय हार तक पोहँचाए देबैं।

शॉट— 6

समय—सांझ,

ठाँव— घर,

दृश्य— माँय हार घरक ले अंगना के बढ़ाएल बेटामन के आते देइख के ठाढ़ होएल।

माँय— फैसला होए गेलक बेटा?हामरे कर पड़हा राजा हिंञा?

बड़का बेटा— हँ यो!

माँय— बँटवारा में केके हिस्सा नी मिललक?

मंझला बेटा— कंइझला भाइ के यो। सेहे ले ऊ हामरे मन संगे घर नी घुरलक?

माँय— खिसाए गेलक होइ!

बड़का बेटा— एगो बात बताव तो यो?

माँय— का बात?बोलबे तब नि!

बड़का बेटा— फैसला बादे दीवान साहेब मन का ले कहलैं कि कंइझला बेटा में इकर बाप कर खून नखे, इसन बुझाएल।

माँय— दीवान साहेब, अनजाने में सच बोइल देलैं। देखा बेटा। कखनो—कखनो जिनगी में कुछ अनहोनी होए जाएल।

बड़का बेटा— का अनहोनी होए रहे यो?

माँय— कइसे कहों?तोहरेक आबाव के इकर बारे जानकारी रहे। (पीठयाए के जाते—जाते कहेल) तोहरे कर कंइझला भाई में तोहरेक बाप कर खून नखे। एगो दुष्ट कर ऊ बेटा हेके। (आउर आगे जाए के घर में ढुइक जाएल)

(लोक कथा उपरे आधारित)

रेडियो नाटक

सहिया आयो

मूल कथा– सहिया मँाय कथाकार– सहनी उपेन्द्र पाल 'नहन'

रेडियो नाटक– उल्था– 'गिरिराज'

पात्र–

1. डाक्टर पूनम,
2. डाक्टर राकेश,
3. नर्स– पारो,
4. भाकू और डुबू (कमिया),
5. बूढ़ा (बेमराहा),
6. सोनाबती (बेमराही),
7. पलटू (बेमराहा)।

(नाटक ओर होएक कर ध्वनि प्रभाव)

डुबू– डुमइर गछ तो एहे बंगला में दिसत हे ना भाकू!

भाकू– एहे बंगला होइ! नि देखत हिस कि ना डुबू! अस्पताले बंगला तइर तो दिसत हे।

डुबू– ऊ जुन ना! बेमराहा मन बइसल दिसत हैं। ओ दे, पूछ तो ना भाकू! निसकत हैं सेमन से।

(लोहा कर फाटक खोलेक आउर उघराएक कर ध्वनि प्रभाव)

भाकू– डाक्टर बाबू कर एहे बंगला हेके कि बउ!

बूढ़ा– एहे हेके बउ! भीतरे जाए के नरेस ठिन नाँव लिखवाए लेउ। आँइ! ई टंगिया,डोरामन लेले डाक्टर ठिन आएहा बउ?

पारो– हिने आए जावा! केके देखाएक आहे? (दूर से देइख के) उकर नाँव?(भीरे आवल में)

डुबू– हामरे डाकटर ठिन देखाएक नी आ ही। डाकटरे बाबू हामरे के डुमइर गछ काटेक ले बोलाए हैं।

पारो– अछा! गछ हेंठे कर पींड़ा में बइसा। मोएँ डाक्टर साहेब के कइह देत हों।

भाकू– (गमछा से पींड़ा में गिरल पतइ के झाइर के बइठेन सेकर ध्वनि प्रभाव) कतना सुंदर फुलवाइर आहे नि ना डुबू!

डुबू– रंग रीता कर बरन–बरन कर फूल! कतना नगद लागत हे नि ना भाकू। आउर ई ना कतना लुदुम–लुदुम हरियर–हरियर घाँस! देख नि चइल के! कतना नगद लागत हे।

भाकू– हिने आव ना! कोनो कइह रहबैं। कतना नगद फूल मन धमकत हे। एहे ठिन बइसले रहमू से तइर बुझात हे ना!

डुबू– एतना सुंदर फुलवाइर में ई गँवार डुमइर, हँसुवा कर बिहा में खुरपी कर गीत तइर लागत हे। का ना ठीके कहत हो कि!

भाकू– सेहे ले होइ, हामरे के, ई डुमइर गछ के, काटेक लाइ बोला होबैं, डाकटर बाबू!

(घंटी बाजेक, नर्स कर कुइद के ढुकेक कर ध्वनि प्रभाव)

डा. राकेश– आउर कतना रोगी मन आहैं?

पारो– आउर एके झन भइर। (तनिक ठहइर के) डाकटर साहेब दुइ गो कमिया मन गछ काटेक ले आ हैं। उमन के बइठेक ले कइह दे हों।

डा. राकेश– हँ हँ ठीक! (बाहरे निकलेक दुरा कर रेचरेचाएक कर ध्वनि प्रभाव) का पलटू?तोर पेट बथा कइसन आहे?

पलटू– डाक्टर बाबू! एखन तो दुइ दिन ले नरम हो हे। दवइ के जुन आउर लेक होइ कि होका करेक होइ?

डा. राकेश– बथेक छुटलक हले तो दवइ खाएक होका कइर दे। आउर दवइ लेक दरकार नखे। आउर हँ बगरा तेल मसाला, मरचइ मन खाएक में बारन करबे। आउर हाँड़ी–दारू एकदम नइ। बुझले।

पलटू– अछा! जोहाइर डाकटर बाबू!

डा. राकेश– (सीढ़ी से उतरेक कर ध्वनि प्रभाव) अरे! तोहरे दुइयो आए जा हा! डोरा आउर टांगा मन लाइन हा नि डुबू!

डुबू– लाइन ही डाकटर बाबू!

भाकू– एहे डुमइर गछ के काटेक आहे नि डाकटर बाबू!

डा. राकेश– हँ! एहे डुमइर गछ के। देखा तो, तोहरेहें मन बतावा– एतना सुंदर फुलवाइर में ई डुमइर गछ सोभत हे?कतना बेकार बुझात हे। लागत हे कि मैंना मनक माझे कउवा आए जा हे।

डा. पूनम– (कार गाड़ी कर आएक, होर्न बाजेक, फाटक उघरेक, कार कर ढुकेक, कार कर रुइक जाएक। दुरा खुलेक, ढापेक कर ध्वनि प्रभाव) पारो–पारो!

पारो– (कुइद के आएक कर ध्वनि प्रभाव) का कहत ही डाकटर दीदी!

डा. पूनम– गाड़ी ले मोर बेग मन के निसकाए के भीतरे राइख दे। (पारो कर भिरियाएक कर ध्वनि प्रभाव) ई का करुवाएक लाइग हैं अपने? राइत भइर इकरे चलते बेकार कर झिकझिक होलक। आउर फिन ओहे थेथरइ! मोएँ हजार धँव कइह देलों ई डुमइर गछ नी कटाइ। ई गछ मोर सहिया आयो हेके। इकर ले चाहे मोर मुँड़ कटाए जाए तो कटाए जाए मुदा ई गछ के तो मोएँ काटेक नी देमू।

डा. राकेश– (बड़ पेयार से) पूनम! ई तोएँ का पगली निअर गोठियात हिस। ई बेकाम कर बेकार डुमइर गछ के घरी–घरी सहिया आयो, सहिया आयो, कहेक तोर जइसन डाकटर के सोभा नी देल। तोएँ एतना पढ़ल–लिखल होइ के इसन गँवार मन निअर एके बात के टेटत हिस। विज्ञान इसन अंधविश्वास के नी पतियाए पूनम, नी पतियाए।

डा. पूनम– विज्ञान पतियाए चाहे ना पतियाए मोर हिरदा तो पतियाएल। ई डुमइर गछ मोर आयो कर ओइजी में ठाढ़ आहे। इकर छाँइहे मोर ले माँय कर आसिरबाद हेके। इकरे छाँइह में मोके नवाँ जिनगी भेटा हे। मोर आयो कर ओइजी

में एखन एहे गछ मोर सहिया आयो हेके। कोन इसन सदान होइ जे आपन सहिया आयो के काटेक देइ।

डा. राकेश– समझेक कर तिहा कर पूनम। ई गछ के काटल बिगुर ई बंगला आउर फुलवाइर कर शोभा एकबारगी मेइट जात हे। तोहें सोच नि! सुंदर फुलवाइर माझे मलमल में टाट कर पेवंद तइर नी बुझात हे? ई डुमइर गछ अस्पताल आउर बंगला दुइयो कर सुंदरइ के मटियामेट कइर देत हे। इके तो काटके होइ पूनम! जइसन तोर आयो कर पुरना माटी कर खपरा घर के तोइड़ के बंगला बनाले उसने ई डुमइर गछ.........

डा. पूनम– अपने घरी –घरी डुमइर गछ, डुमइर गछ, कइह के मोर सहिया आयो कर अपमान का ले करत हैं? मोएँ कइह देलों। बंगला कर सुंदरइ मेइट जाए तो मेइट जाए। फुलवाइर में आइग लाइग जाए तो आइग लाइग जाए मुदा ई गछ के तो मोएँ काटे नी देमू।

डा राकेश– ई छंदछंदा डुमइर के हटाले बिगुर मोके चइन नी भेटाइ। सुंदर चिकन गाल में पाकल गुरा जइसन टिसटिस करेल से तइर ई गछ मोके सालतहे। (तनिक पठइर के) डुबू, भाकू का के तोहरे मन टुकूर–टुकुर ताकत हा! काटा ई गछ के।

डा. पूनम– खबरदार जे ई मोर सहिया आयो के काटला हले!

डा राकेश– ई गछ कटाए के रही। भोकडोंडो निअर का के कठुवाल आहा तोहरे मन! काटा! मोएँ कहत हों– काटा! सोचत हा का के?

डुबू– का तइर काटब कि डाकटर बाबू! आपने कहत हैं काटेक ले आउर डाकटरीन साहेब कहत हैं काटेक नी देमू। तले!

भाकू– हामरोहों सदान हेकी। सहिया आयो जोराल आहे तो का लखे कि काटब।

डा. राकेश– तोर सहिया आयो आउर सहिया आबा के भला खेदों। दे लान तोर टंगिया के तोहरो मन नी काटबा! (लुइट के गछ में टंगिया चलाएक कर ध्वनि प्रभाव)

डा. पूनम– हाय आयो! मोर आँइखे कर आगे तोर घेंचा ने टंगिया बाइज गेलक गे सहिया आयो। आउर मोएँ देखते रहमू। निहीं सहिया आयो मोर जान रहते तोर उपरे टंगिया गिरेक नी देमू। (पोटराएक टंगिया लागेक ध्वनि प्रभाव) आअ.ह ऽ.. ....

पारो–भाकू–डुबू– हाऽऽ य! (एके संगे तीनों कर चिचियाएक कर ध्वनि प्रभाव)

भाकू– ठहरू डाकटर बाबू! डाकटरिन, सहिया आयो हार के पोटराए देलैं अचके।

डुबू– हाय रे बाबा! डाकटरिने कर जांघ में टंगिया गबइच गेलक।

भाकू– अरे बाइठ रे! तरतराल लहू चुवतहे डाकटर बाबू! अपने अचके हामर से लुइट के टंगिया चलाए देलैं। लहू से साड़ी भींज जात हे।

डुबू– ई का कइर देलैं डाकटर बाबू! गछ बदिल डाकटरिने साहेब के काइट देलैं अपने तो।

डा. राकेश– पारो! स्ट्रेचर लान! (पारो कर कुदेक, स्ट्रेचर लानेक डाकटर कर 'हुँह' कहते तुलंइग के राखेक लम्बा–लम्बा निनास लेक)

डुबू– गछ बचाएक तेहें आपन जीवो जान के तनिको नी सोचलैं। चलत टंगिया में भला गछ के जाए के अचके पोटराए देलैं। कइसे तो जीव पुरलक डाकटरिन साहेब कर!

भाकू– बहिरा अहिस का ना! नी सुनले! सहिया आयो हार के डुमइर गछ तक कहेक नी देत रहैं डाकटरिन साहेब। ई मामूली डुमइर गछ ना लागे डाकटरिन साहेब कर सहिया

आयो हेके।

डुबू– ई तो नागपुर कर मानताए हेके तब। माँय कर दूध नी होले डुमइरे गछ ले सहिया जोरेन। और दूध नी होत के दूध उतरेक लागेल। डुमइर गछ के काटले कइसन गदगदाए के दूध चुएल तब।

भाकू– देख नि! डाकटर बाबू कर काटल ठिन ले कइसन गदगदाए के दूध चुवत हे गछ ले।

डुबू– डाकटरिन साहेब कर पोटराल से डुमइर फेंड़ तक भींज जा हे लोर आउर लहू से।

भाकू– गछ लगिन एतना माया! ओहो डाकटरिन साहेब कर! इसन तो केउ झट ले आपन छउवाव के बचाएक ले नी करबैं। ई तो अजगुत बात होए गेलक।

डुबू– एक दने गछ बचाएक लगिन आपन जान कें लगाए देलैं डाकटरिन। दोसर दने गछ कटवा मने मुँड़ कर केंस कचुवाएक निअर गछमन के काइट मोरत हैं– ई तो अजगुते बात जुन होए गेलक।

(नजइर बदलेक कर ध्वनि प्रभाव)

पारो– का हाल आहे सोनाबती! अछा तोहरे मन तनिक बइठा। डाकटर साहेब कटिक डाकटर दीदी कर घाव में पटी बदलेक लाइग हैं।

सोनाबती– हामरे तो डाकटीरन दीदी से देखाएक आए ही– का होलक जे उनके?

पारो– नी सुइन हा तोहरे मन। गोटा गाँव जानत हे।

सोनाबती– निहीं। हामरे के कोनो सुनगुनी नी भेटा हे।

पारो– तीन रोज होए गेलक आइझ लगाए के। डाकटर साहेब ई डुमइर गछ के काटेक खोजैं आउर डाकटर दीदी गछ के

काटके नी देवइया। डाकटर साहेब झकाए के एगो कमिया कर हाँथ ले टांगा लुइट के रूमसाम काटेक लागलैं। सेहे खन डाकटर दीदी अचके गछ के पोटराए देलैं। डाकटर साहेब सोचियो नी रहैं कि डाकटरिन दीदी गछ के अचके पोटराए देबैं। ऊ तो अंधाधुंध खीसे टांगा चलाएक लाइग रहैं। एक टांगा डाकटर दीदीए कर जाँघ हारे लाइग गेलक।

सोनाबती– हाय आयो! चो चो चो.....। तब तो बेसे लाइग गेलक होइ डाकटर दीदी के।

पारो– डाकटर साहेब के तो तले काठ माइर देलक। जइसन झकाए रहैं तइसने थीर होए गेलैं। ऊ तो सोनाबती, अचके बोरंडो उठल निअर खीस उठलक आउर दुइयो कर हिरदा के झिकझोइर के सलसँत होए गेलक। आब तो डाकटर साहेब जीव–जान से डाकटर दीदी कर सेवा जतन करेक लाइग जाए हैं।

सोनाबती– आगे माइर लेलैं तले एखन सेवा टहल करेक लाइग जा हैं। अब तो बेसे माया करत हैं। अछा दीदी का ले ई डुमइर गछ खातिर आपन जानो तक के नी सोचलैं? कहों इसन उसन ठाँवे लाइग जातक हलें!

पारो– ई डुमइर गछ नि सोनाबती डा. दीदी कर सहिया आयो हेके। डा. दीदी कर आयो हार दूध दान ले, ई घरे अँगना कर डुमइर गछ सैं सहिया जोराए रहैं। जेखन ले ई बंगला आउर फुलवाइर बनत रहे सेहे घरी ले दुइयो परानी में ई गछ के काटेक नी काटेक तेहें बकझक होतहे रहत रहे। आउर देखा इसन अनहोनी होइए गेलक।

सोनाबती– दुइयो डाकटर में नी पटरी बइठेल कि दीदी?

पारो– ई गछ काटेक छोड़ाए के दोसर सउब बात में दुइयो में एतना पेयार आहे नि कि ना कइह दे। दुइयो बेकइत एक

दूसर बिनु रइह नी सकेन सोनाबती!

सोनाबती– सेकरो में इसन बात होए गेलक!

पारो– कहलों नि सोनाबती! डा. दीदी ले ई डुमइर गछ, औहारी गछ भइर ना लागे। उनकर सहिया आयो हेके।

सोनाबती– ई डाकटरो मन गँवली गाँवक अदमी मन निअर सहिया आयो, सहिया आबा मन के मानेन दीदी!

पारो– एहो मन जुन सदाने हेकैं। मानतोहों होबैं। मुदा का जाइन तब इकर पाछे का बात आहे?के जानत हे? अछा सोनाबती तोहरे मन दुइ–तीन दिने बादे आबा। एखन तो तोर ढेइरे समय आहे। (जाएक कर ध्वनि प्रभाव)

डा. राकेश– (आएक कर ध्वनि प्रभाव) पारो! मोएँ तनिक बाहरे एक ज़गन जरूरी देखेक जात हों। तोएँ तोर डा. दीदी कर, मोर घुरत ले खेयाल राखबे।

पारो– अपने कर आवत ले पूरा खेयाल राखमू डा. दीदी कर डा साहेब।

(डा. कर जाएक कर ध्वनि प्रभाव)

{नजइर (दृश्य) बदलेक कर ध्वनि प्रभाव}

डा. पूनम– पारो! कहों जा हैं डा. साहेब? कखन ले घुरबैं?

पारो– कखन ले घुरबैं से तो नी बताए राखलैं। रउर बथा कइसन आहे दीदी एखन?

डा. पूनम– आइझ तो तनिक बेसे बुझात हे पारो।

पारो– अछा डा. दीदी एक बात पुछो, नी नि खिसाब?

डा. पूनम– कोनो खिसाएक निअर बात के पूछत हिस का?पूछ का पूछेक खोजत हिस?

पारो– डा. दीदी! ई डुमइर गछ के का ले अपने सहिया आयो कहेन? सहिया तो अदमी से जोराएँन (केकरो आएक कर ध्वनि प्रभाव) (आते आते ध्वनि रुइक जाएक)

डा. पूनम— तोएँ तो जानबे करिस पारो! – मोएँ मोर आयो कर पेटे में रहों सेहे खन मोर आबा सिराए जाए रहैं। मोर आयो अनइत गरीब रहे। जब मोर जनम होए रहे से घरी मोर आयो कर दूधे नी होत रहे। दूध उतरेक ले बारोह बरन कर उपाय कइर ताखलक मुदा दूध नी से नी उतरलक। मोके मोर आयो कोरा में पोटराए के कांइद बुलत रहे। छउवारी माँय मन ठिन गोहराए बुलत रहे। दूध किन के पियाएक पायाए नी रहे। (कटिक मटियाल बाद)

पारो— तले का होलक दीदी?

डा. पूनम— ई सउब बात मोएँ आपन आयो से सुनल बात मन के बतात हों। एक दिन केउ हार मोर आयो के कहलक— तोएँ डुमइर गछ ले दूध दान का ले नि माँइग लेइस?तोर तो घरे अंगना में डुमइर गछ आहे। डुमइर गछ सैं सहिया जोराबे। हले तोर छाती ले जरूरी दूध उतरी।

पारो— मोएँ एक धँव इसन बात मोर नानीयो से सुइन रहों से मोके इयाइद होए आलक दीदी। तले डा. दीदी।

डा. पूनम— मोर आयो मोके लेइ के एहे डुमइर गछ ठन गेलक। मोके गछ बुदा में सुताए देलक। आउर डुमइर डाइर के हाँथे धइर के हाथ जोइर के डुमइर गछ के कहलक— "आइझ मोएँ तोर सैं सहिया जोरात हों, ए सहिया, तोर सहिया बेटी ले मोके दूध दान दे। आइझ ले ई तोरे बेटी होलक। ई जीयत रही हले, इकर जनम दिन के हर महिना तोर में दूध ढारमू आउर घीव कर दीया बारमू।" (ठहइर के) मोर जनम पुनी राइत के होए रहे। सेहे तेहें...

पारो— सेहे ले तब रउरे कर आयो पूनम नाम राइख रहैं।

डा. पूनम— हँ पारो! का जानी कोनो जड़ी बूटी कर गुन धरलक कि सहिया आयो उपरे कर बिसवास असर करलक। दोसर दिन ले मोर आयो कर छाती ले दूध उतइर गेलक। दूध

बिगुर मोर मोरेक भगवान के सांइत मंजूर नी रहे। जहिया ले मोएँ होस संभरलों से दिन ले बराबइर देखते रहों। मोर आयो हर महिना कर पुनी रोज आपन सहिया में दूध ढारत रहे आउर घीव कर दीया बारत रहे।

पारो– ई ठाँव रउर आयो कर रहे नि?एहे डुमइर गछ बुदा में दूध ढारत रहैं रउर आयो। जेके पूजा कर फल भेटाए रही से कंइसे नी निभाइ। उनकर बिसवास तो पका होए जाए रहे।

डा. पूनम– सेखन मोएँ साइंस पढ़त रहों। मोर आयो कर दूध ढारेक, घीव कर दीया बारेक, मोके अजवाइर बुझात रहे। सोचत रहों– कने तो ई गरीब देस में एक दने एक घोंट दूध खातिर छउआ मन कलपत हैं से ठन ई अहंभा, फालतू बिसवास लगिन दूध ढारेक..........

पारो– दूध घीव कर नास करेक तइर बुझात रहलक होइ नि दीदी!

डा. पूनम– हँ पारो! मोएँ एहे बड़वारी में रहों (कटिक अटइक के)

पारो– अछा दीदी! रउरे कर डाकटर साहेब सैं............

डा. पूनम– मेडिकल कोलेज कर आखरी साल में डा. साहेब से मोर मेल मिलाप जोर धरलक आउर तले हामरे दुइयो घर बसाए लेली। हामर बिहा कर दोसरे बछर मोर आयो कर अँचरा कर छाँइह मोर मुँड़ ले उइठ गेलक। मरेक ले पहिले ऊ एकबारगी फिकराएक लागलक.......... ।

पारो– कि आब सहिया में के दूध ढारी, के उकर बुदा में घीव कर दीया बारी?से कइह के होइ........

डा. पूनम– ऊ आपने आपन में बरबराएक लागलक– देखबे सहिया तोर बेटी नाबुझ आहे। एखनोहों छउआए लखे आहे। आउर सउब दिन ले ई तोर छउए रही। अगर कोनो निअर तोके माइन नी करी तेउ तोएँ इकर सहिया आयो हेकिस। उके तोएँ आपन आसिस देते रहबे। ओह !एके बात कर

अपसोच होत हे सहिया, आब आउर कहियो पुनी दिना दूध ढारेक नी पारमू.....

पारो– उनके भरोसा नी दिसलक होइ रउरे से नि दीदी?

डा. पूनम– मोर आयो कर दसा देइख के मोएँ बुइझ गेलों कि आयो कर दुलार ले मोएँ फोकाएक जातहों। मोर आयो के पोटराए के मोएँ गगाए के कांदेक लागलों। कांदते–कांदते कहलों– चिंता–फिकिर नइत कर यो, जब ले मोएँ हिंजा रहमू हर महिना कर पुनी दिना तोर सहिया ने दूध ढाइर देमू आउर घीव कर दीयाव बाइर देमू। तले एतना सुइन के मोर आयो मोके पोटराए लेलक आउर कहलक– उके सहिया आयो कह बेटी! न कांद। आब मोएँ निचुत ले जाएक पारमू।

पारो– एतना सुइन के तो रउर आयो कर जीव हलुक होए गेलक होइ नि दीदी!

डा. पूनम– दोसर दिन मोएँ मोर आयो के पोटराए के उठालों आउर आपन कोरा में ओंठगाए के कमला लेंबू कर रस पियात रहों कि सेहे घरी मोर आयो मोके रटपटाए के पोटराए लेलक आउर एतने भइर कहलक– "देखबे बेटी तोर सहिया आयो के......." तले हिचकी होलक आउर मोर कोराए में उकर हांसा उइड़ गेलक।

पारो– सेखन डा. साहेब नी रहैं का दीदी?

डा. पूनम– सेखन डा. साहेब एफ आर. सी. एस. पढ़ेक बिलाइत जाए रहैं पारो।

पारो– डा. साहेब कर बिलाइत ले घुरल परे ई सउब बात के उनके नी बतालैं का?

डा. पूनम– ऊ निपट नेग–जोग के का बतातों, निमानता अदमी से ई सउब बात बताएक खाली आपन हाँसी करुवाएक रहे पारो।

पारो– डाकटरी पढ़ेक पहर तो रउरहों नि उसनेहे रहली होइ दीदी!

डा. पूनम– हँ पारो! विज्ञान पढ़इया मनकर मन उसन होइए जाएल। सेहे ले जुन दुइयो झनक मन जुइम रहे। मोर आयो कर नोकसान होल बादे मोएँ जे बचन दे रहों। सेके निभाते रहों कि एक धँव इसन होनी होलक कि...(मटियाल बादे)

पारो– का बात होए रहे डा. दीदी। लुकाएक निअर बात नखे हले. ......

डा. पूनम– तोर सैं का लुकाएक निअर बात रही कि पारो! तोएँ मोर नर्स भइर ना लागिस मोर संगो हेकिस। डा. साहेब दुइ बछर बादे बिलाइत ले घुरब कइह के जाए रहैं।

पारो– अछा डा. दीदी!– जतना बिलाइत जाएँन सबकरे संगे कोनो नि कोनो अनहोनी जरुले होए जाएल का डा. दीदी?इनकरो संगे कोनो होए रहे का?

डा. पूनम– सुरू–सुरू तो महिना गइनका इनकर चिठी–पतरी आत रहे। मुदा तीसर बछर बीते लागलक तो चिठियो–पाती नदारद होएक लागलक।

पारो– कोनो मेम –उम चकर चलालैं होइ। बिलाइती मेम मन हिन्दुस्तानी मन के फोटेक में तइनको पाछे नी रहेन कि का?

डा. पूनम– एक दिना टाइम्स पत्रिका में पढ़लों पारो कि बिलाइत में एगो हिन्दुस्तानी डाकटर एगो नर्स से बिहा करेक फेरा में आपन बिहाल जनी के मोराए के बिग देलक।

पारो– इसन में तो केकरो जीव अकबकाबे जुन घरी डा. दीदी। मन कर सलसँतो जुन उइड़ जाइ।

डा. पूनम– सते कहत हिस पारो! ऊ सत कथा के पढ़लों से राइत मोके नीदों नी लागलक। बड़ राइत के का निअर मोर आँइख झपाए गेलक। तले तो आउगे देखत हों.......

पारो– कोनो डरडराल लखे सपना देखली का डा. दीदी?

डा. पूनम– हँ पारो! देखत हों– बुची स्कर्ट, आउर फरॉक पिंधल एगो

मेमिन छोंड़ी घेंचा भइर तनि बुड़बुड़ कचुवाल केंस – मोर कोठरी ने ढुकलक आउर मोर सिंगार दानी के खोइल के मोर किया ले सेंदुर के चोराएक लागलक। एतना देखत के मोएँ चिहचिहाए के उइठ बइठलों।

पारो– ऊ सपना तइर नी बुझाए के सते होत हे से लखे बुझालक होइ नि दीदी?

डा. पूनम– हँ पारो! मोके एकदम साक्षात होत हे से लखे बुझालक। मन तो करलक ऊ चुरिन केर तनि बुड़–बुड़ केंस के पुदइक के बिग देवँ। मुदा ऊ तो सपना रहे पारो। तले तो मोर हिरदा धकधकाए लागलक। जीव एकबारगी अकबकाएक तइर बुझालक। सेखन मोके बड़ा रोस कंदवास लागेक लागलक।

पारो– उसन घरी तो इसन लागबे घरी दीदी?

डा. पूनम– का जानी का झोंक होलक, मोएँ ऊ निसबद राती, ऊ डुमइर गछ तरे जाए के कांदे लागलों........

पारो– इसनेहे बेरा निमानता मन मानेक लागेल दीदी।

डा. पूनम– तले जाए के कहलों– ए सहिया आयो, मोके मोर जीवे थीरे नी बुझात हे। मोके लागत हे– केउ मोर सेंदुर कर सोभा के लुइट लेगत हे। मरेक बेरा मोर आयो तोखें सोंइप जाए रहे। मोके आपन आसिस से बचाए ले नि! बचाए ले सहिया आयो।! ''कइह के मार कांदेक लागलों।

पारो– कांदले हले मन तनिक हलुक होए जाएल दीदी।

डा. पूनम– ओहे खन मोएँ डा. साहेब ठिन एगो चिठी लिखलों। दुइ महिना बादे उनकर भेजल चिठी मोके भेटालक। देख तो पारो मोर बेग भीतरे कर चेन में ऊ चिठी आहे होइ। मोर ठन बराबइर, से घरी ले ऊ चिठी रहेल। निसकाए के पइढ़ के एक धँव सुनाव तो।

(जाएक, बेग कर चेन खोलेक, चिठी खोलेक कर ध्वनि प्रभाव)

पारो– ई चिठी डा. दीदी?

डा. पूनम– हँ एहे चिठी हेके! पइढ़ के सुनाव तो पारो। इके जतना धँव पढ़ोंन मोर सहिया आयो उपरे आउरे बिसवास बइढ़ जाएल। कतना पेयार भरल चिठी। एकेक सबद इकर मोर हिरदा के भाव से लबलबाए देला। हँ पढ़ तो–

पारो– सुनू दीदी– डा. पूनम! मोर परान पूनम। लंदन आए के मोएँ तोके दगा देक जात रहों। आउर आपन सिंञा–भुइञा सैं विसवासघात करेक खोजत रहों। गोटेक चरकी छोंड़ी मोके आपन रूप जाल में बझाए लेक खोजत रहे। उकर सलाह रहे कि उकर सैं मोएँ बिहा कइर के हामरे सउब दिन ले लंदने में बइस जाती। मोरो मन बेइमान बइन जाएक खोजत रहे। मुदा सेहे आसे–पासे बर्लिन विश्वविद्यालय कर पढ़इया छोंड़ा–छोंड़ी मने लंदन में शकुंतला उपरे नाटक खेललैं। तपोवन में दुष्यन्त कर पेयार, कबुल–करार फिन राइज दरबार में शकुंतला के दुतकाइर देक, तले ऋषि आश्रम में उकर बिरहिनी रूप के देइख के मोर विवेके जाइग उठलक। मोके संतोस आहे पूनम कि मोएँ तोर रहों आउर सुधा तोरे रहमू। चिठी पाते तोएँ एकाध पख में मोखों आपन ठिन पावे। तो..........।

डा. पूनम– देखले पारो! कतना पेयार भरल चिठी आहे नि! ई सउब मोर सहिया आयो कर आसिरबाद कर परताप हेके पारो।

पारो– अपने कर बात आउर चिठी के देइख के निमानताव कर भूत मानेक लागी।

डा. पूनम– ई चिठी के पाए के पारो! मोर हिरदा में आनंद कर समुदर उठे लागलक। खुसी कर जोरे मोर आँइख डबडबाए गेलक। इकर से हुलइस के, मोएँ जाए के सहिया आयो गछ के पोटराए लेलों। आउर कहलों– "ए सहिया आयो!

देखले तोर आसिस कर असर। देख तो यो! मोर माँग कर सेंदुर कइसन दगदगात हे।" सेहे दिन ले पारो– ई डुमइर गछ आउर मोर बीचे माँय बेटी कर पक्का नाता होए जाए हे।

पारो– डा. दीदी आइझ तो पूनी हेके नि?

डा. पूनम – हँ पारो, ओहे तो मोएँ तोके कहेक जात रहों। आउर एहे चलते तो मोएँ तोके ई सउब बात मन के बतालों कि मोर काम के तोएँ मोरे तइर सारधा से कइर देबे। मोएँ तो हुआँ जाएक पारमू निहीं। तोएँ जाए के मोर ओइजी मोर सहिया आयो ने दूध ढाइर के घीव कर दीया बाइर देबे, आइझ राइत होतेहें। आउर मोर दने ले कइह देबे तोर सहिया बेटी भेइज हे। तोएँ तो सउब के जानते हिस।

(केकरो बगल से जाएक सुनाएक कर ध्वनि प्रभाव)

पारो– केउ हार जात हे का दीदी। एक धँव आउर केकरो आएक सुनाए रहे।

डा. पूनम– केउ हामरे कर बात के सुनत रहे का पारो? आउर सुन, जे कहलों सेके अंधार हे होते गोड़ हाथ धोवाए के कइर देबे। बिसराबे नइत पारो, हँ!

पारो– रउरे कर विसवासक तार नी टुटेक देमू दीदी!

(नजइर बदलेक ध्वनि प्रभाव)

डा. पूनम– भँइस अंधार होए गेलक। का जाइन पारो दूध ढाइर के बाती बाइर राखलक कि निही तब, मोर सहिया आयो ठिन। ई बटे ले मोके दिसबो तो नी घरत हे। मुँड़ दने कटिक अलगाए राखतक हले तो एहे ठिन ले ढँलगले –ढँलगल दिसतक।

पारो– (आएक कर ध्वनि प्रभाव) डा. दीदी मोएँ रउर सहिया आयो गछ ठिन जाए रहों। दीया और दूध लेइ के। मुदा हुआँ तो गजब होए गेलक। मोर जात ले आगेहें दीया बारल रहे

आउर दूधो ढारल रहे।

डा. पूनम– के बाती बारी आउर दूध ढारी पारो? ई तो अजगुत बात होए गेलक। मोर आयो कर छाँइह तो नि बाइर राखलक?अजगुते बात?

डा. राकेश– (आते–आते) का अजगुत बात होए गेलक पारो?

पारो– (डा. राकेश दने कुरसी खरकाएक ध्वनि प्रभाव) कुरसी डाक्टर साहेब।

डा. राकेश– कुरसी कर का दरकार पारो? ई का मोएँ तोर डा. दीदी कर मुँडसिरवाँ ठिन बइठत हों। हँ पारो! का अजगुत बात होए गेलक?

डा. पूनम– पारो तोएँ बेस ले बताले निहीं कि मोर सहिया आयो ठिन के बाती बारलक आउर दूध ढारलक?

डा. राकेश– जेकर कोनो हक ठेकत होइ सेहे जुन बाती बारलक आउर दूधो ढारलक होइ?नि तो के हार इसन करी?पारो जा तनिक चाह बनाए आन तो।

पारो– बेस।

डा. पूनम– हूँ तो ऊ अपने रहैं!

डा. राकेश– इसन का ले नुरनुराए के देखत हिस पूनम!

डा. पूनम– मोर केंस के आपन अंगरी में जे लेपटेक लाइंन हैं।

डा. राकेश– आब तोर दरद अराम होत हे?

डा. पूनम– बाथा तो आइझ भिनसारे ले नखे। (पारो कर आएक कर ध्वनि प्रभाव)

डा. राकेश– हँ लान चाह के! आगे तोर डा. दीदी के दे। (चाह कप प्लेट में देक कर ध्वनि प्रभाव) अछा पारो तोएँ बताव तो– तोके इसन नी बुझाएल कि कखनो –कखनो कोनो विसवास जिनगी के थीर कइर देल। देख नि! भक्ति आउर विसवास चलते पथर जइसन बेजान चीज के अदमी भगवान माइन

लेन। आउर उकरे पूजा से सुख–संतोख पाए जाएँन। मुदा गछ तो पखल लखे बेजान तो ना लागे जीवो राखेल।

डा. पूनम– सेहे ले नि! गोटे दुनिया में ई गछ बिरीछ जइसन जीव के पूजा करत हैं। बचाएक तेहें तिहा करत हैं।

डा. राकेश– सुपट कहत हिस पूनम! आइझ सउब दने बन कर बन कटाए के खँख होए जात हे, जंगल बिरान होए जात हे, से खन इसन जुग में। डा. पूनम कर इसन गछ पेरेम से थोड़को–मोड़को गछ मन तो, गछ कसाइ मनक हाँथ ले तो बँची?का पारो?

पारो– आइझ अगर डा. दीदी तइर गछ परति पेयार जाइग जाए तो एतना बेमारी, एतना, अस्पताल, एतना डाक्टर, एतना दवइ–बिरो कर दरकारो नी होइ?

डा. राकेश– तोएँ तो रामवाण उपाइ बताए देले पारो, ई दुनिया कर अदमी मन ले। गछे बिरीछ चाँड़े तो अदमी मनक जिनगी चलत हे। एक काम कर पारो। जंगला के कटिक पूरा खोइल दे जेकर से तोर डा. दीदी के हामर सहिया आयो एहे ठिन ले सुतले सुतल दिसेक लागैं। मोएँ मुँड़ दने तनिक अलगाए देत हों उकर डिसना के। (जंगला कर छिटकिनी आउर पला मन खोलेक सुनाएक कर ध्वनि प्रभाव)।

डा. राकेश– आब दिसत हे नि सहिया आयो!

डा. पूनम– हँ।

डा. राकेश– मुँड़ के जाँइत देवँ का मेडम?

डा. पूनम– आपन ठिन राखैं तो इसन खुशामद के।

डा. राकेश– मोर तइर गछ कसाइ; गछ के तो नी चिनहलक तोके तक नी छोड़लक। मोएँ जेकर नास करत रहों सेकरे ले तोएँ आपन जान देत रहिस। कइसन अभागा हों पूनम मोएँ। मोर मुरखइ चलते तोके आइझ एतना तपलीक उठाएक

होत हे।

डा. पूनम– मोर तपलीक तो ओहे खन सिराए गेलक, जेखन अपने कर मुँह ले मोएँ सहिया आयो सुनलों। ई मोर घाव अगर अपने कर हिरदा में गछ कर परति पेरेम जगाए देलक। तो मोर ई घाव मोर सहिया आयो कर आसिसे हेके।एगो बरदाने बइन के ई अकलक आलक।

डा. राकेश– जंगला से देख तो पूनम। आइझ कइसन पूनम कर चाँद अकास ने खिदखिदात बुझात हे। टहटहाल इजोरिया से सहिया आयो ठिनक बाती कइसन गलबाँही मिलात हे। (धुका कर झोका से जंगला कर दुरा बजाराए होएल सेकर ध्वनि प्रभाव)

डा. पूनम– आह! कतना नगद धुका धुकलक। कतना नगद फूल मनक धमक ई कोठरी में भइर गेलक। जीव तो तर होए गेलक। ऊ दीया कर किरन मोर आँइख कर किरन सैं एक लकीर में मेसा होए जात हे। सहिया आयो ठिनक बाती कर टिमटिमाएक मोर आँइख में कइसन आसिस देत हे। देखत हैं नि अपने?

डा. राकेश– हँ पूनम देखते भइर नखों! सहिया आयो कर आसिस कर परतापों के पावत हों।

(नाटक टुण्डू होएक कर ध्वनि प्रभाव)

रूपक

सत अहिंसा कर मंतर

पात्र– सत (मोहनदास कर्मचंद गाँधी कर आत्मा रूप)
भारती (भारत माँय कर रूप)

ठाँव– आत्मालोक में तले भारत देश में

समय– गाँधी जन्म कर पहिले तले भारत में जन्म लेक से शहीद होएक तक।

ध्वनि– जइसन समय, स्थिति होए।

नजइर– एक
(मधुर धुन संगे ओर)

भारती– सतो! ए सतो!

सत– का कहत हिस यो!

भारती– ई मोएँ का देखत हो सतो?

सत– कने यो? मोके तो कोनो अनहोनी नी दिसत हे।

भारती– ई आत्मालोक कर बात मोएँ नी करत हों सतो।

सत– फिन कहाँ कर बात कहत हिस यो।

भारती– सत देस भारत में नि सतो! जहाँ दुनियाँ में पहिल बेइर उइग रहे। हुँआ बेगर सांझ होले अंधार डाबत हे सतो।

सत– सत देस भारत में यो! मोके तो बिसुवासे नी होत हे। जगत गुरु भारत में अज्ञान कर अंधार कइसे ढापत हे?

भारती– सत कर पुजारी, कर्म कर भगत मन, हारल जुवारी लखे बिलाइती बेपारी मन से एकबारगी हारते जात हैं। गोटा देस भारत, गोरा मनक हाँथ में आए जात हे।

सत– आउर उमन, चाँ चू कोनो नी करत हैं यो?

भारती– ईस्ट इंडिया कंपनी के कुछ ना बुझ! भारतीय मन गोतिया नियर माइन कइर के फूलले जात हैं।

सत– आउर ई देश कर माटी कर बेटा मन आपनेहे भाइमन ले गुलामी किन लेलैं। निहीं यो! मोएँ भारत देश में इसन होते नी सुइन–देइख सकोंना।

भारती– आपनेहें देश में, सत भुँइ कर कुछ करमबीर बेटा मन के, गोरा मनक गोड़ धोते देखत हों सतो॥ सतो......।

सत– निहीं यो निहीं। मोएँ धरती कर ई सरग समान देश के नरक में बदलते नी सहेक पारमू॥

भारती– तब तोके एक गो काम करेक होइ सतो। तोके सत लोक भारत में अवतार लेक होइ।

सत– सत देश कर रहवइया असत दने चइल जाएँ। निहीं यो, इकर खातिर भारत में जनम लेक ले तो माँय कर आसीस लेक होइ यो।

भारती– इसनेहें होओक। तोके जतना जल्दी होए सके भारत देश कर पछिम में समुदर किनारे पोरबंदर में जनम लेक होइ।

सत– आउर पोरबंदर में जनम लेइ के का करमू यो?

भारती– जइसन छउवा मन खेलते–कुदते पढ़ते–लिखते बड़ होएँना से सउब तोखों करेक होइ।

सत– जे गोरा मन ले मोके भारत देश भेजत हिस उमन ले मोके का करेक होइ यो?

भारती– तोके समय सिरे गोरा मन से टक्कर लेक होइ। भारत देस कर भलाई ले। मानवता कर रक्षा ले।

सत– गोरा मन से टक्कर लेक ले तो ओहे मनक विद्या सीखेक होइ........... नि यो।

भारती– उकर ले तोके गोरा मनक देश बिलाइत जाएक होइ। उमनक नियम– कानून भासा सीखेक जानेक होइ।

सत– इकर लगिन मोएँ बैरिस्ट्री पढ़ेक जामू यो।

भारती– अलबत! तोएँ तो मोर पूरा मन कर बात के बुइझ लेले सतो। आब जा आत्मालोक ले सत लोक भारत में सतो।

सत– मोएँ तेयार हों यो! मुदा एगो बातक डर बुझात हे कि कहों मनुख

जनम में जाते आपने के मोएँ बिसराए ना जाओं।

भारती– मनुख जनमे इसन आहे नि सतो कि राम–कृष्ण तक मनुख रूप में अदमीए बइन जात रहैं कखनो–कखनो। मोएँ तोर तेहें सउब सराजाम कइर दे हों। मोर आसिस तोर उपरे हर घरी रही। अब जा।

सत– तोर अरहाल के कइसे नी करमू कि यो! गोड़ लागत हों यो।

भारती– (दृश्य टुंडू होएक कर धुन) जा जीत के आबे।

नजइर– दुइ

ठाँव– सत लोक भारत।

ध्वनि– जरूरत मोताबिक।

(मुरगा कर कोकरे चों बोलेक सुनाएल)

(भारती कर अदृश्य आवाज सुनाएल)

भारती– मोहनदास! मोहनदास! अरे कोन नींदे तोएँ मातल हिस?

मोहनदास– (उठेक घरी कर आँइस उसाएँस– हाही फारेक कर ध्वनि) के?के हेके?

भारती– (कटिक हाँइस के) बिसइर गेले मोहनदास। एतना जल्दी भुइल गेले। तोएँ मोहनदास भइर ना लागिस। भारती कर देवदूत– सत हेकिस, सतो! सतो!

मोहन– सतो! कोन सतो?

भारती– मोर अरहाल! भारत लगिन तोर दरद। सउब कुछ बिसराए देले सतो!

मोहन– मोके डँड़ दे यो। कोनो गलती होए गेलक मोर से का? मोएँ सते बिसइर जाए हों यो। मोके बल दे यो! मोके कोनो इयाइद नी होत हे।

भारती– ई ले दिव्य शक्ति। (तेज ध्वनि)

मोहन– कने आहिस यो। एखन ले तोके देइख नखो। मोके बल दे यो।

भारती– मोहन! मनुख कर खेइल तो तोएँ बहुत सुंदर खेलले। बिलाइती

विद्याव सीख लेले। आब तोर काम सत कर प्रयोग करेक समय आए गेलक। हाँथ उपरे उठाव मोहन।

मोहन– एक धँव दर्शन दे यो। ई भारत देश में बस एक धँव आपन पुनीत दर्शन दे यो।

भारती– मोएँ तोंके ई जनम में नी दिसमू मोहन । ई ले दिव्य ज्योति। देख आपन के। चिन्ह, के हेकिस तोएँ? आउर का तेहें भारत देश आ हिस? (गोटेक गंभीर ध्वनि)

मोहन– मोएँ सत लोक, सत भुँइ भारत में हों यो! ई रूप में! इकर सुधी मोएँ नी ले रहों यो! आब मोके सउब इयाइद होए गेलक यो। आत्मालोक में तोर जे तय होए रहे से सउब।

भारती– जा आब तोएँ आपन बिलाइती विद्या आउर कानून कर करामत देखाव। सत कर पुजारी, करम कर भगत भारतवासी दखिन अफ्रिका में गोरा मनक गोड़ से एँड़ियाल जात हैं। जा आउर उमनके उमनक हक आउर नेयाय देउवाव। ले देख, कतना क्रूर आहैं गोरा मन (क्रूरता कर ध्वनि)

मोहन– सत लोक कर बेटा मनक ई दुर्दशा! नहीं यो! नहीं! मोएँ इसन होएक नी देमू। चाहे तो उमनक अनइती के मेटाए देमू चाहे मोहे मेइट जामू। मोके बल दे यो! मोर संगे रहबे नि यो?

(दृश्य टुंडू होएक कर ध्वनि)

नजइर तीन

ठाँव– दखिन अफ्रिका

(गुल, पुलिस कर बूट जूता मनक कुदेक अवाज, चिचियाएक, लाठी चलेक आवाज)

मोहन– हाय आयो! ई कइसन अत्याचार यो! का हामरे मनुख ना लागी?अदमी, अदमी कर एतना बड़का शोषक! निहीं यो निहीं। मोएँ इसन एकबारगी अनइती तो होएक नी देमू यो।

भारती– तोएँ गोरा–कानून कर विरोध कर। अकबकाव मइत मोएँ तोर संगे छाँइह नियर हों।

मोहन– मोके कोनो डर नखे यो। चाहे मोएँ धराँव चाहे जेहल करे ठेइल देल जाओं। मोहों देखाए देमू ई गोरा मन के कि करियाव मन में गोरा मन ले कम लाल लहू नखे।

भारती– मुदा मोहनदास! तोएँ बिसराब मइत। तोएँ सत कर पुजारी हेकिस, हिंसा कर निहीं।

मोहन– मोएँ सत कर डहर के नी छोड़मू यो। सते मोर साहस हेके। सते मोर सहारा हेके। आउर अहिंसा तो यो सत से जुरले आहे कचिया कर दुइयो करे नियर।

भारती– एकदम सुपट! तोएँ मोर मनक बात के आपनेहें कइह देले। मोके तोर उपरे पूरा भरोस आहे।

मोहन– मोएँ हिंञा सत्याग्रह करमू यो। मोएँ आपन सत डहर में चइल के देखाए देमू कि हामरे सत कर पुजारी हेकी। अब तनिको देरी करेक मोर दोस लागी यो। मोएँ चललों दखिन अफ्रिका में सत्याग्रह करेक।

ध्वनि– (करियाव अदमी अदमिए हेकैं– अदमी खाली गोरा मन भइर ना लागैं। "अदमी से अदमी नियर बेवहार होए" कर नारा गुंजरेल)

नजइर चाइर

(ओर होएक कर ध्वनि)

भारती– मोहनदास! तोएँ तो दखिन अफ्रिका में भारतवासी मनक हिया में समाए गेले। कुछ गोराव मन तोर सत्याग्रह से मोहाए गेलैं। मोहन तोएँ सते मोहन हेकिस।

भारती– मोहनदास जा अब तोके सथाएक कर समय नखे आइझे दखिन अफ्रिका ले चइल दे। सत लोक भारत तोर लगिन आँइख डाइस दे हे।

मोहन– का ले यो? हुआँव भारतवासी मन के गोरा मनक जुलुम–आउर अनइती सहेक पड़त हे?

भारती– दखिन अफ्रिकाव ले बगरा गेल गुजरल जिनगी होए जा हे भारतवासी मनक। सत भुँइ भारत कर सत कर पुजारी मन शोषण

आउर अन्याय कर जाँता में पिसात हैं।

मोहन— निहीं यो! मोएँ भारतवासी मन के तो का गोटे दुनिया कर कोनो मनवा के अन्याय आउर शोषण कर शिकार होवत नी देइख सकोना यो! मोएँ आइझ, एखने चलत हों आपन जनम देश ले। (दृश्य निमरेक ध्वनि)

नजइर पांच

ठाँव— भारत देश

(विचित्र किसिम कर ध्वनि)

मोहन— दुनिया कर सरग समान देश नरक का नियर होए गेलक यो?

भारती— ई एहे गोरा मनक कमाल हेके मोहनदास! ई लुटेरा गोरा मन के तोर कुछ भाइ—बंधु मन गोतिया माइन लेलैं।

मोहन— आउर गोतिया मनक खउब माइन मरजाद करलैं। आउर घोड़ा बेइच के सुतलैं सउब। इमन के बनारो नी लागलक कि उमन गोतिया बनल गोरा लुटेरा मन से लुटाए गेलैं। जेके दोना आउर कोना देलैं सेहे मन हड़इप लेलैं।

भारती— लुटाए भइर नखैं। बाँचल—खोंचल सउब लुटाते जात हे एखनो। मोहनदास, आपन देशवासी मन के उठाव जगाव नि तो देश के बँचालो आब नी बाँची।

(जागरण ध्वनि)

मोहन— सत कर पुजारी सतवीर! करमवीर उठा! जागा! देखा! हामरे कर घर लुटात हे। आउर देखा! हामरे बेकारे जियत ही। गरीबी में मोरत ही। गुलामी में पिसात ही। एतना सुंदर देश गुलामी खटत हे गोरा मनक।

भारती— मोहनदास! ई चलाँक गोरा मन भारतवासी के अफीम खियाए दे हैं। इमनक नींद एतना अलगठे नी टूटी। तनिक गरइज के उठाव। तब ई सिंह मन नींद से जागबैं। (उतेजक ध्वनि)

मोहन— देशक माटी कर बेटा मन! तोहरे मन शेर हेका, सिंह हेका। सत कर पुजारी हेका। करम कर भगत हेका। अन्याय शोषण के सहेक वाला

ना लागा। सेकरो में तोहरे मन गुलामी कर अंधार में बेंड़ाते जात हा। हामरे मन उपरे अनइती जुलुम कर साम्राज्य ठोइक देल जा हे। हामरे मन गोरा मनक लोभावन झूठ कर मोह में आपन पहचान के बिसराए दे ही। हामर देश, दुनिया के गेयान, करम कर, सत आउर अहिंसा कर संदेश दे हे। हामरे मन के आपन देश में अजादी से जिएक–करेक कर हक से रोकल जात हे। हामरे आपन देश में "करब नि तो मरब" मुदा अदमी से अदमी कर गुलामी के सहन नी करब। चिंता करेक दरकार नखे। गोरा मनक हथियार से लड़ेक ले हामरे मन ठिन उकरो ले जबर हथियार आहे। ऊ शक्ति हेके सच कर। ऊ हथियार हेके अहिंसा कर। हामरे जइसन मनुख हेकी उसने ओहो मन अदमीये हेकैं। हामरे अदमी होए के मानव कर लहू से आपन अजादी नी लेक चाहीला। हामरे गोटे दुनिया के विश्व प्रेम कर, विश्व बंधुत्व कर पाठ सीखाएक चाहीला। हामरे सत कर पुजारी हेकी। करम कर भगत हेकी। अजादी हामरे कर मंजिल हेके। अहिंसा हामरे कर नीति हेके। हामरे आपन बलिदान से आपन दुश्मन गोरा मनक ताकइत के पाहुड़ करेक चाहत ही। उमनक हत्यारापन के, उमनक गुलाम बनाएक कर नियत के, अदमियत में पलटेक चाहत ही। से ले हामर देश कर सत–अहिंसा कर हथियार धरइया उठा, जागा आउर लुती नियर लुइझ पड़ा सतवीर। करमवीर। मोर आवाज में आपन आवाज मेसाए देवा। आउर मानवता के अजाद कइर देवा। सतवीर! करमवीर मन! अकास के फाइर देवा आपन नारा से।

(गोरा मन भारत छोड़ा, भारत हामर देश हेके। आपन देश बिलायत घुरा। बंदे मातरम! भारत छोड़ा.............कर नारा बुलंद होएला...ई गुल गुंजरेल)

भारती– मोहन दास! तोएँ तो कमाल कइर देले। ओ दे देख पूरब से बंदे मातम कर नारा अकास में गुंजरत हे। (बंदे मातरम कर नारा गुंजेल) ओ दे देख पछिम पटी से "इंकलाब जिंदाबाद" से दसो दिसा गुंजरत हे (इंकलाव जिंदाबाद कर नारा गुंजेल) ओ दे देख

मोहनदास, उत्तर करे से हिमालय पहार से हदहदात नदी कर घाघ नियर गरजते भारत हामर देश कर गुल (भारत हामर देश कर नारा गुंजरेल) आउर हुने दखिन दने देख मोहन! समुदरी तूफान– नियर अजादी हामर जनम सिध अधिकार हेके कर गोहाइर (अजादी हामर जनम सिद्ध अधिकार हेके कर नारा गुंजरेल) भारत में दसो दिशा से अजादी कर लहर पसरतं हे अँधड़, बोरंडो तइर। गोरा मनक करजा तक कांइप गेलक मोहन दास!

मोहन– गोरा मनक दिल अब डरे दलकत होइ यो!

भारती– तोर बाणी कर जादू देखले मोहनदास। ई हेके तोर सत–अहिंसा कर, असली प्रेम कर ताकइत। छोटे–छोटे इस्कुलिया छउवा मन, बड़–बूढ़ा मन, जनाना– मरदाना, सउब मोहन कर मोहनी वाणी में मोहाए गेलैं। जीव जान के तइज के, अजादी ले, मरेक ले, सीना ताइन देलैं। गोटा देश एक होए गेलक।

(भीड़ कर गुल, नारा पहिले नियर– गोली चलेक कर अवाज धुवाँधार सुनाएल छउवा जनाना, अदमी मनक गोली लागेक "भारत माँय कर जय," "भारत छोड़ा," "गोरा बिलायत भागा" कर नारा में गोली लागेक पहर कर आवाज में गुंजरेल)

मोहन– ई मोएँ का देखत हों यों? छोटे–छोटे इस्कुलिया छउवा मने किताब कोपी के हवा में उड़ाते, बिलाइती लुगा मन कर फगुआ जलाते आवत हैं यो! (गोली मनक दनदनाएक, गुल, "गांधी बाबा कर जय! भारत माँय कर जय। गोरा मनक छय" कर गुल गोली लागेक पहर कर टूटत बोलीं में गुंजरेल)

भारती– होएक दे मोहन दास! ई बलिदान बेकार नी जाइ। इकरे लाल लहू में अजादी कर कमल खिली मोहन।

मोहन– बंद कर यो! ई मोर नजइर से देखल नी जात हे। रोइक दे ई गोरा मन के यो! ई अबोध छउवा मन उपरे छोटे–छोटे भाइ–बहिन मन उपरे गोली कर बरखा! रोइक दे यो रोइक दे (उसने गोली चलेक आउर नारा गुंजरेल)

भारती– ई, इमनक अजादी बदे प्रेम हेके मोहनदास। ई तेयाइग आउर बलिदाने से भारत कर इतिहास बनी कि देशक अजादी ले बड़ बूढ़ा मन भइर निहीं छउवाव मन तक आपन लहू बोहा हैं।

मोहन– एहे इमनक मानवता प्रेम हेके यो! दुनिया के सभ्यता कर पाठ सीखाएक एहे तरीका हेके। दुनियाँ में आपन उपनिवेश बनाएक, साम्राज्यवाद कर विस्तार करेक एहे इमनक धरम हेके यो। शांत, साफ, सुंदर, मधुर, मेहनती, ईमानदार देश मन के आपन गुलाम बनाएक में सुख संतोष भेटाएल यो ई गोरा मन के!

भारती– ई गोरा मन आपन के मानैंना कि गोरा मनक राइज में बेइर नी डूबे। इकर ई भरम के तोड़ेक दरकार आहे मोहनदास! सभ्यता कर जनक बनैना ई क्रूर मन! दुनिया के गुलाम बनाएक वाला सभ्यता कर पाठ पढ़ाई? हरगिज नइ?

मोहन– मोएँ इमनक बड़वारी के दड़बुड़ कइर देमू यो। देखाए देमू कइसन गोरा मनक घमंड में उकर राइज केर बेइर डूबेल सेके। ई गोरा मन बुझैंना कि जे देश जाब, हुँआ कर भाखा, उकर धरम, उकर संस्कृति उकर राइज के, डुबाए देले, उकर समाज कर आपुसी प्यार के फोइर देले, गोटे दुनिया कर महाराजाधिराज होए जाब! ई घमंड के चकनाचूर करले बिनु नी छोड़मू यो।

भारती– सावधान होए जा मोहन! तोरो उपरे जबरजस आफइते आएक वाला आहे। (सिपाही मनक बूट जूता बाजेक जेहल में "सउब दने ठीक आहे" कर आवाज सुनाएल)

भारती– मोहनदास तोएँ जेल में। घबराव मइत। तोके छोइड़ देबैं। तोके विलाइत जाएक होइ गोल मेंज कोन्फ्रेंस में भाग लेक ले। भारत वासी मनकर अगुआ बइन के।

मोहन– मोएँ एहे एक टंगिया धोती आउर पेछउरी ओढ़ले जामू यो बिलाइत। मोएँ जेकर अगुआ हेकों, मोखें देइख के गोरा मन जानैं कि हामर देशवासी कर का हालइत आहे

भारती– बहुत बेस! तोके इसनेहें करेक चाही। अगुआ तो आपन अदमी मन

कर छाप हेके।

मोहन– मोएँ आपन जनमदेश कर छवि के बगड़ेक नी देमू यो।

भारती– तोके स्वराज आउर सुराज बारे पुछबैं।

मोहन– मोएँ मानवता के पहिल ठाँव देमू यो। अगर गोरामन मनुख से अदमी नियर बेवहार करेक ले तेयार होए जाएँ तो मोएँ स्वराज बदिल सुराजहें मांगमू।

भारती– एहो कइह के देइख ले। ओहो मनक इनतिहान होए जाओक। गुनाहगारो मन के सुधरेक मोका देक नेयाये हेके। (दृश्य बदलेक ध्वनि)

नजइर छव

(राष्ट्रीय गीत कर धुन सुनाएल)

भारती– मोहनदास– भारत देश अजादी कर आनंद मनात हे आउर तोएँ नोवाखाली में।

मोहन– मोर लड़ाई राजनीतिक अजादी ले भइर नी रहे। मानवता कर अजादी खातिर रहे। सत कर पुजारी, करम कर भगत, अहिंसा कर डहर चलइया मन, मानवता कर नरटी चीप देलैं। एक दूसर कर लहूक पियासे मोरत हैं। सोना नियर सरग समान भारत देश के मुरुदघटी कर देश बनाए देलैं। अजादी ले लाखो लाख मनक हत्या ओहो भाइ–भाइ में। राजनीतिक लाभ लेक ले। इतिहास पुरुष बनेक तेंहे। देश के बाँइट देलैं। बराबर कर दुश्मन बनाएक ले भाइ के! (कांदेल से ध्वनि)

भारती– तोएँ कांदत हिस का ले?तोर सत अहिंसा कर हथियार आखरी बेरा काम नी आलक कइह के! उकरे चिंता आहे तोके?

मोहन– हँ यो! न तो मोर सत कर साहस काम आलक ना अहिंसा कर संदेश। एहे बात कर तो कांदना आहे। मोके ई खंडित, भारत सतभुँइ, सतलोक, सत–अहिंसा कर देश, नी लागत हे यो। आब मोर, मन.................. ।

भारती– (बात काइट के) तोएँ हतास ना हो मोहनदास। तोर हथियार

सत–अहिंसा कहियो बेकार नी गेलक ना जाइ कहियो। ई दुइयो हथियार आब हथियार नी रइह गेलक मंतर बइन गेलक। दुनिया में शांति लानेक ले एहे आखरी मंतर हेके मोहन।

मोहन– ई हत्या, ई बँटवारा, आजादी ले रहे कि राजगद्दी ले यो?

भारती– सेहे ले तो तोर मंतर काम नी आलक। मुदा जाइन ले, दुनिया के मानवता कर पाठ, ई सत–अहिंसा मंतर पढ़ाते रही। विश्व शांति कर डहर के इंजताते रही।

मोहन– मोर आँइख–कान कर सामने इसन निठुर हत्या होत हे इके तो यो मोएँ नी सइह सकोंना मोके बोलाए ले यो।

भारती– तोर एखन काम पूरा कहाँ हो हे मोहन! भारत देश कर दुइयो भाइ मनक दुश्मनी के उखराते जा। जेके गोरा मन ई देश ले जाते जाते जहर कर बिहीन बुइन राइख हैं। तोएँ तो सत कर पुजारी हेकिस। अहिंसा कर पालन करइया हेकिस।

मोहन– एतने तो मोएँ खोजत हों यो दुइयो भाइ पहिले नियर फिन एक होए जाएँ। दुइयो भाइ मन कर मधुर मिलन होए जाए। बँटवारा के भुलाए जाएँ, बस एतने मोर आखरी इच्छा आहे। मुदा............

भारती– (बात काइट के) मुदा एक के खुश करेक में दूसर भाइ नराज होए जात हे। एक संगे दुइ दिशा में कइसे चलबे मोहन।

मोहन– दुइयो भाइ केर मिलन में मोर जानो चइल जाए तो कोनो परवाह नखे यो मोके!

भारती– चल मोहनदास चल आपन आत्मालोक में। चले ले तेयार होए जा तोर लीला भारत देश में निमइर गेलक। तोर बात के आब केंउ शासक मन तोर नकली भक्त मने नी मानबैं। चल............।

(भीड़ कर गुल– गाँधी बाबा कर जय गाँधी बाबा कर जय......तीन गोली चलेक सुनाएल)

मोहन– हे राम (गुल भीड़ ले चिचियाएक कांदेक सुनाएक)
("एक पकौड़ी तेल में। गाँधी बाबा रेल में। नाथू राम जेल में।" छउवा मनक गीत संगे रूपक टुंडू)

नुक्कड़ नाटक

वाह रे भाग्य विधाता!

नटकरवा

1.	डुगडुगी वाला,	2.	मास्टर,
3.	नेता,	4.	महिला,
5.	10–12 साल कर छोड़ा,	6.	बूढ़ा।

समय– बिहान।
ठाँव– शहर कर घिनघिना बस्ती।
नजइर एक

(ध्वनि–चौराहा में छउवामनक खेलेक आउर गुल करेक कर अवाज सुनाएल। साइकिल–रेक्शा कर आएक– जाएक आउर उकर घंटी बाजेक कर अवाजो सुनाएक। ''ऊ रे डुगडुगिया आलक, डुगडुगिया आलक'' कर गुल सुनाएक।)

डुगडुगी वाला– (आपन ढोलकी से–''ढेइ गुड़ गुड़, ढेइ गुड़ गुड़, ढेइ गुड़ गुड़ कर लम्बा ताल ठोकेल। छउवामनक गुल शांत होएल।) भाइ आउर बहिन मन– सुनाऽऽ सुनाऽऽ सुनाऽऽ (फिन ताल)

सहर–सहर में, गाँव–गाँव में, आए जा हे तबाही।
दिन हप्ताह महिना से, बंद होए जा हे आवा जाही।
होशियार, होशियार, भाइ–बहिन मन रहा होशियार।
नगर–सहर में, गाँव–देहाइत में
ढुकत हे रोग कर सियार।
होशियार, होशियार, होशियार रूभे रहा होशियार।

प्लेग से चुटिया मूसा गुजरात के कइर रहैं
जइसन सुनसान। (फिन ताल)
हैजा डायरिया खूनी पेचिस से जबर–जबर
सहर होत हे परेशान! परेशान! परेशान!
सावधान, सावधान, सावधान सुतल इंसान सावधान!
जागा, जागा, जागा भाइ–बहिन मन जागा।
भागा, भागा, भागा, गंदगी से जल्दी भागा।
रोग फूटत हे, बेमारी पसरत हे, ठाँवें ठाँवें सहरे सहर।
हैजा ढूकत हे, डायरिया धरत हे, दुरे दुरा घरे घर।
आए धमकल हाय धमकाल ई महाकाल।
बूढ़ा न बूढ़ी छोंड़ा न छोंड़ी सभे हैं बेहाल।
सगरे चाइरो करे मचल आहे हाहाकार।
कोनो नी करे पारत हे उपाय सरकार।

ध्वनि– (साइकिल, रेक्शा कर घंटी बाजेल छउवामन हो हो हो कइर हल्ला करेन।)

डुगडुगी– एइ छउवा मन! नेता जी के ढुकेक देवा। आउर तोहरे मन सउब गोल से एकाइर होए के तमासा देखा। आवल जाए नेता जी।

नेता– भाइ करे तो का करे सरकार।
जब घरे दुवारे रहे कतवार।
जने तने कोने कोना रहे पसरल घिनघिना।
बसाएक जोरे नाक फाटे बलाए डहर हिंठना।
भेनभेनी माछी लुझैं जेठन रहे खाना–पीना।
उड़ीस भुँसड़ी लहू चिभैं करैं हराम जीना।
नली गाढ़ा सड़ल पानी फनफनात कादो किचिर।
ई महामारी सरकार के जान मारत हे फिकिर।
(ढोलकी से तड़ –तड़ –तड़ कर दूसर ताल)

डुगडुगी– पहिल ताल– (चलेक से गोड़ में बंधाल घुंघरू छम –छम बाजते जाएल। प्रसंग– डहर में मइला खुंदेक, घिनाएक, गोड़ कर पंजा उठाए के चलेक, कोनो डीपा में गोड़ के पोछेक) एँ हें! कहों ठाँव नी भेटालक बरी पारे ले! गोटे कोचाक छउवा मन के ठाँव नी मिललक बइठे ले। गोड़ धरे तक ले ठाँव नी छोइड़ हैं डहर में। आब चलों कइसे ई झुग्गी–झोपड़ी नगर में। एँ हें। आखिर खुंदाइए तो गेलक। धइत सार के! पोछाए होवों कइसे?कोनो डीपा नहीं मार सार के!

महिला– (दूर से गोलाइ भीतरे आते) राह मँइञा आवत हों डहर ने कतवार बिग के। (कतवार डुगडुगी उपरे फेकाए जाएल)

डुगडुगी– (कतवार आपन उपर गिरल से हिलले घुँघरू कर अवाज)

हइट। थूर्र–थूर्र.......... तेरी के! के बिगलक मोर उपरे कतवार।

के के नी सूझलक डहर चलत अदमी सरकार।

महिला– हाय आयो! मोएँ का जानत रहों। मोरे कतवार बिगेक आउगे केउ ठाढ़ होए देइ सेके। हामरे तो रोजे एहे तइर बढ़ाल–सोढ़ाल घरक कतवार के बिग देइल।

डुगडुगी– (पहिल ताल)

न डहर देखैं न पहर!

कतवार बिगैं अदमी उपर।

सेहे से पसरत हे जहर।

आउर नरक बनत हे सहर। (दूसर ताल)

महिला– (दूर से आवत अवाज) राह रे नइत खरनाव। तोर ढोढ़ा तो हर घरी खँधरले रहेल। उइठ बिहान तूबके खोजी। राह कटिक, माँड़ बिग आए के धीपले–धीपले देतहों। (माँड़ छींटेक कर अवाज, डुगडुगी उपरे छींटाए जाएल)

डुगडुगी– आ ऽऽ अरे बाइठ रे बाइठ! के आइग बरसालक रे बाबा। के धीपले–धीपले नहुँवाए देलक गे आयो! आँइखों नी सूझत हे।

महिला– हाय गे आयो! मोरो आँइख टीपल रहे। डहर चलत अदमियो नी सूझलक। ढीपल माँड़ के भला उकरे उपर बिग के नहुँवाए देलों।

बेचरंगा पोड़बो घरलक होइ। हामरे तो इसने रोजे धोवल –खाल पानीयो के हल छींट देइल। इसन तो कहियो नी होलक।

डुगडुगी– (पहिल ताल)

भगवान बचाए इसन रहे अगर खोइर कोचा।

कइसन होबैं हुवाँ कर जनी मन तनिक सोचा।

ना रहे जानैं ना चलेक।

सुवइर कुकुर तइर रहेक।

छी बाबा! छी आयो! कि कहेक।

रोज रोज कि इसन सहेक। (दूसर ताल)

बालक– (बांको लोहा छड़ से कुकुर के मारेक अवाज) हाड़ी!

(कुकुर कर काँई–काँई करते भागेक)

ई कतवार कुधा में तो कोनो खाएको ले हल भेटाइ! कहों कुकुरे मन तो खाए नी सिराए राखलैं (कतवार पसराएक कर खार –खोर अवाज) ना कोनो खाएक फेकल भेटाए, ना कोनो लोहा लुती, ना कोनो फूटल भांगल टींग। आब कर अदमियो चलाँक होए गलैं। कइसन दिन आए गेलक गे नायो। फाटल कागज, बिगल चमचमी (प्लास्टिक) तक नी भेटाए। (कतवार पसराएक अवाज सुनाएल।)

बूढ़ा– (लाठी टेकते आएक अवाज) तो का तोके हीरा–मोती भेटाइ ई कतवार में। भाग सार! जा कोनो काम–धंधा खोजबे। चइल आहे कतवार कुधा में सोना–रुपा खोजेक! भाग सार! नि तो देमू एखन एहे ठेगा में........(लाठी पीटेक अवाज)

बालक– (कतवार पसराएक कर खारखुर अवाज) ई रे गोटेक गिलगिला पाकल केरा तो पाय भेटालों। (हाथ कर तरहथी झारेक कर अवाज) आह! कतना गुरवा (केरा चोका जोर से डहर ने पटकेक अवाज)

बूढ़ा– (लाठी टेइक के आएक अवाज) एँ ऽऽ एँहऽऽ (धप से गिरेक आउर लाठी फेकाएक अवाज) हाय आयो! का में पिछरलों रे बाबा। ओह हाय! हुँ हऽऽ, झट के उठको नी पराए। ओह (देइख के) ई केरा

चोका रहे। राह रे सार केरा खाए के डहरे में बिग देले। राह तोके एखन केरा खियात हो। ओह! हाय! तरहथियो दरराए होलक।

डुगडुगी– देखू नेता जी देखू रउर छउवा–पुता कर हाल।

नेता– हे भगवान! का होइ ई देस में।
जहाँ कर छउवा मन पोसात हैं कतवार में।
काइल कर देस चलइया मन।
गंदुर में दानत हैं हीरा –मोती मन,
चाइरो करे हैजा डायरिया भरल आहे।
आउर ई सोना रूपा छउवा मन के कोनो डरे नखे।

डुगडुगी–(पहिल ताल) आवल जाए मास्टर साहेब, आवल जाए। इस्कूल छोइड़ भागत हैं छउवा,कहाँ–कहाँ देखल जाए।

मास्टर– वाह रे भाग्य विधाता वाह रे!
वाह रे भगवान वाह रे।
भूख कर आगे सउब डर, डरे भाइग जात हे।
कुकुर बिलइ तइर बेअरदा
पूरले अदमी मोरत हे। (दूसर ताल)
भूख दुख गुने छउवा मन कलपत हैं।
कतना सवाँग सेथी सइर जात हैं।
कतना हाँथ कटाए जात हे।
कतना बुइध बेंडाँए जात हे। (दुसर ताल)
वाह रे भाग्य विधाता, वाह रे! वाह रे भगवान वाहरे!
करोड़ो लंगड़ा–लूल्हा केकर बल बूते बइन जात हैं।
नवाँ इतिहास में भीख मँगवा देश लिखात हे।
तभे नि इंगलैंण्ड जर्मनी मन
भारत में उड़ान बंद कइर दे रहैं।
गुजरात में जखन प्लेग पसरल रहे।
रूस अमेरिका मन में कहों रोग

ना पोहँचे पारे। (दूसर ताल)
हे रोग! हे महामारी! लील दे ई राइज के!
ई देश के! हले महामारियो ले
जबर भंयकर भ्रष्टाचारक किटाणु
निमइर जाए बराबइर ले। (दूसर ताल)

डुगडुगी–(पहिल ताल) सुनत ही नेता जी मास्टर साहेब कर बात!

नेता– नगदे कहैंना
मास्टर, नेता कर भ्रष्टाचार।
लाल टोपी कर अत्याचार!
दौलतधारी कर शान शौकत बरकरार।
गरीब दुखी कर लाचारी।
इकर से आगे महामारी
कोनो नि हिलाएक पारी। (दूसर ताल)

डुगडुगी–आब आलक समझ में मास्टर साहेब, नेता जी के।

मास्टर– काश! केउ इसन भगत, मति, ओझा, सोखा होतक
जे सोइख लेतक देशक गंदगी के!
आउर बनाए देतक राइजक जिंदगी के।
पी देतक शोषक कर लहू के।
सुखाए देतक नेता कर नेतागिरी के।
नेता मनक काया में बइठाए देतक
कोनो डोंगडोंगो पीपइर कर प्रेत के।
जे जाँइत रहतक इसन रोग कर डाइन बिषाही के।
उड़ाए देतक राजनेता कर कचरा राजनीति के(दूसर ताल)
हले हर झन रहतैं परपन।
जीवन रहतक लवकत दरपन।
सउब चलतैं विकास कर डहर में एक समान।

तो केउ का ले सोचतलैं देस कर नोकसान।
ना केउ दलित होतक, ना केउ आदिम होतक।
ना केउ अगड़ल होतक। ना केउ पछड़ल होतक
(दूसर ताल)
शिक्षा इसन मिलतक देस कर हर छउवा मन के।
एक समान नीलकंठ, मेंजूर, पँड़की,
बोकली आउर कउवा मन के।
पाबंदी नखे, एके अकास में उड़ेक आहे।
उइड़ सके जतना, उकर ठिन पाया आहे। (दूसर ताल)

डुगडुगी—वाह! मास्टर साहेब वाह! आब कहू नेता जी रउर का खेयाल आहे? (पहिल ताल)

नेता— पचास साल से भोगत हे मास्टर, सेखें कहत हे
कतना सुंदर विचार आहे।
कतना छउवा ले दुलार आहे। (दूसर ताल)
जब राजा सुखाए देतक आपन खून छउवा—पूता ले।
से छउवा का ले नि मइर मिटतक आपन राइज ले।
प्यार इसने नी जागेला देशक नाँव से भइर।
मरेला मोर खातिर देखेला—बुझेला
जब उकर नजइर। (दूसर ताल)
तब सिंगराएल, सपराएल, घर—दुवार, काया—गतर।
खोइर कोचा साफ— सुथर।
बढ़ाल—सोढ़ाल सउब डहर।
होए उठेल चिकन—चाकन,
खाएक—पिएक, रहेक—सहेक।
जिनगी जाइग उठेल,
देखेल सुंदर सपना, जीएक—मरेक।
प्रेम—प्यार कर आगे जिनगी का दुनियाँ सँवइर जाएल।

सांसारिक राजनीतिक रोग–दुख
तभे मटिया मेट होए जाएल। (दूसर ताल)
डुगडुगी– (पहिल ताल) धेयान लगाए के, होश चघाए के
सुना भाइ–बहिन मन, सुना ऽऽ सुना ऽऽऽ सुना ऽऽऽ
बेमारी–सेमारी से अगर आहे बाचेएक
हैजा डायरिया के अगर आहे कुदाएक
किचकिचा, घिनघिना कचरा से होएक होइ भागेक
(दूसर ताल)
जिनगी कर अगर आहे बेस मजा लुटेक।
दुनियाँ में अगर आहे सरग सुख लुटेक।
तो सुना भाइ–बहिन मन सुना ऽऽ सुना ऽऽऽ सुना ऽऽऽ
सफा जागी, रोग भागी, होश जागी।
केकरो काया में लागी नहीं दागी। (दूसर ताल)
तभे होइ रीझ–रंग, गाँवे–गाँव, सहरे–सहर।
धमइक उठी हवा–बतास पहरे पहर।
बाइज उठी मंदरा। तब जाइग उठी अखरा।
गहइज उठी जतरा। सपरा भाई–बहिन मन सपरा।
(पहिल ताल) सुना भाइ बहिन मन सुना ऽऽ सुना ऽऽऽ सुना ऽऽऽ
(पहिल ताल) (ढेइ गुड़ गुड़, ढेइ गुड़ गुड़, ढेइ गुड़ गुड़ ढेइ)

डुबाली सहिया

नटकरवा (पात्र)
गांगू, गाँगी, गोमकाइन, आउर गोंयदा।

नजइर एक

(गांगी पेठिया में हाँड़ी बेचेक बइठ हे। गांगू गांगी के देइख के डराते–डराते पार होएल)

गांगी– कने सहिया! आइझ जे चुपे–चुप मुँड़ गाइड़ के जाएक लाइग ही।

गांगू– आइझ गोमकाइन पी के आएक नी कइह हे। नि तो लुवाठी में खोरमू कइह हे।

गांगी– जनी से कि डराए के रहब सहिया। एतइ जनी मुँहा होए गेली!

गांगू– निहीं सहिया! डराए के का रहमू कि! चाइर गो छउवा आहैं। सेमन के जुन सोचोंन कि का लखे जीबैं, कि का लखे पढ़बैं– लिखबैं।

गांगी– भगवान देइ हैं तो छउवा मन जीबे जुन करबैं। उमनक भाइग में होइ तो पढ़बो–लिखबो करबैं। लेउ एक डुभा तो पी लेउ।

गांगू– निहीं सहिया! आइझ तो निहिंये पीमू।

गांगी– ए सहिया! आइझ तो पीखे होइ। नी पियब तो देखू– मोएँ बातों नी करमू आइझ ले। मोर से कोनो बाते खिसा ही का जे?कि नी पिएक कर किरया खाए ले ही!

गांगू– निहीं सहिया! का के खिसामू कि! आइझ कचियाय नखे तो का के पिमू!

गांगी– मोके ठकत ही सहिया! रउरे ठिना कचिया नी रही! देखों रउरे कर डंड़ा के। (गांगी डंड़ा के टोमड़ेल आउर बीस रूपिया कर लोट पाएल)

गांगू– रहे देउ सहिया, ई मोर कचिया ना लागे। इकर में छउवा ले कुकुर खोखी कर दवइ लेगेक आहे। किताब मन किनेक आहे।

गांगी– हँ जुन! मोएँ कि बेगर पीले रउरे के जाएक देमू नि! रउरे से बोहनी नी होइ होले मोर हाँड़ी बेचाबो नी करी।

गांगू– आइझ तो, नी पीमू सहिया। दोसर दिन पीमू। आइझ सते मोर ठिना कचिया नखे । आइझ भइर जाए देउ।

गांगी– लेउ नि सहिया, एक डुभा भइर पी लेउ। कचिया आइझ नी देब तो दोसर बजार देइ देब। कचिया ले जीव के का ले छोट करब।

गांगू– निहीं आइझ नी पीमू। छउवा मोर खोखते–खोखते छाँट कइर देल। उकर ले दवइ नी लेगमू हले, रउर सहिया, छउवा कर माँय ढुकेक नी देइ। छउवा कर किताब नी लेगमू हले छउवा मोर खोभराए के धइर देइ।

गांगी– लेउ तो पी लेउ। (जबरइ पियाएक खोजेल।)

गांगू– आइझ तो डुबाली सहिया। (गांगी जबरइ मुँह में डुभा से पियाए देल, गांगू पी देल।)

गांगू– देउ सहिया आउर तनि कुन, मुँह में जनाबो नी घरलक।

गांगी– लेउ नि पीउ, का हाँड़ी सिरातहे?

गांगू– सहिया कर रहते कि हाँड़ी सिराइ। देउ एक डुभा आउर।

गांगी– लेउ पी लेउ! जीयत भइर जुन पियब। तले का घुइर आवब पीएक ले। जीयत भइर अदमी के खाय–पी के सवक कइर लेक चाही। (पीते–पीते गांगू डबले पी देल आउर गांगियो के पियाएक खोजेल निसा में माइत के 20 रूपिया के गांगी के धराए देल आउर उइठ के गाते चलेल) हँड़िया में गुन बड़ा, सुन मधुवार बूढ़ा, हँड़िया में गुन बड़ा, रोज एक डुभा हाँड़ी पीबे, दुनियाँ में सउबले बेसी जीबे..... हाँड़ी पी के सुइत देली, धोती के भिंजाए देली............ ।

नजइर दुइ

(घरे गोमकाइन हार छउवा के कोरा में लेइ के ओगरेल)

गोमकाइन– कने रे गोंयदा, कने तोर आबा आवतहे। एखनों ले नी दिसे। छउवा खोइख–खोइख के बेहाल होइ जात हे। जा तो रे डहर में देखबे। आवतहे कि निहीं।

गोंयदा– आइझो गे कोनो ठिन माइत के गिर होवी होइ! (जाएल)

गोमकाइन– आइझ जे रे तोर आबा पी के आलक होले, देखबे आइझ मोएँ हेकों। (छउवा मुरुख खोखेल, आयो हार उकर छाती के रगदेल।)

गांगू– (आएके) कने रे गोंयदा! एखनो ले डिबरी नी बाइर हा।

गोमकाइन– आव आइझ आउर पी के आले। दुरा के ढाप रे गोंयदा। आइझ बाहरे सुतेक दे तोर आबा के।

गांगू– के रे गोंयदा, के हेके रे?घिसियाए के निकलाव तो रे, के मोके घर घुसेक नी देइ?

गोमकाइन– छउवा हिंजा खोखते–खोखते अधमोरा होइ जातहे। पँइचा–उधरा कइर के दवइ आउर किताब लानेक भेजलों तो आ हे ढिलंगटांगा हाँड़ी पी के। कने दवइ आउर किताब?

गांगू– का दवइ! कोन किताब! देखत नखिस मोएँ दवइ पी के पइढ़ आवत हों।

गोमकाइन– तोरे दवइ पीले छउवा कर खोखी छुटी रे मइरनाहा मतवार। कि तोरे पढ़ले छउवा कर पढ़ल होइ।

गांगू– मोर जीएक से सउब जीयतहा। मोर चलते सउब तोहरे जीयत हा। नि तो तोहरे सउब नून बेचेक चइल जाता।

गोमकाइन– कमात–कमात जीव के पानी कइर देतहों। तब खातहों। कहियो कमाए के खियालिस एको सांझ। जिनगी दोसर कर लिबड़ी–बरतन मांजते दिन बिततहे। तब तोर घर चलतहे नि तो आइझ ले टिडुवाए रहतले।

गांगू– मोएँ टिङ्गवातलों कि तोएँ! धइन भाइग जे मोएँ तोके बिहा कइर लानलों नि तो बापे घर बुढ़ियाए जातले।

गोमकाइन– तोर नियर मतवार से रहेक सिया तो कुँवारे रहतों से हे बेस रहतक। रोज कर इसन गजगज तो नी होतक।

गांगू– लान, दे भात! मोर से मुँह ना लगाबे, नि तो एखन पाबो करबे।

गोमकाइन– ले तो रे मार! का तइर मारत हिस?ले मोखों मार आउर छउवाव मन के माइर मोराए दे। छुटिए होए जाइ। जोर से तले पियत रहबे। केउ कोनो नी कही।

गांगू– तोएँ गे जनी मोर से बदाबइद मुँह लगाबे। (कइह के रुमसाम लाइथ से मारेक लागेल।)

गोमकाइन– मार! मोराव! आइझ मोराइए दे। तले खाबे मोर माँस के।

(गोमकाइन माइर खाते रहेल। छउवा फेकाए जाएल। गोमकाइन एक बटे बेहोस पड़ल रहेल। गांगू दोसर बटे गिर जाएल। गोंयदा आएल।)

गोंयदा– अरे! मोर आयो आबा मन तो का होलैं?

एकांकी टुंडू

अखरा निंदाए गेलक

नटकरवा

भादो– हुरमुँठ छोंड़ा, पेंट गंजी में।

सरदार– पंजाबी सरदार, पायजामा, झूला, फेटा में।

चुँदा– पातर इसन लंबा ले करिया छोंड़ा, करया में।

फगुवा– मोट एखन गोर ले छोंड़ा, लुंगी में।

सुकरा– ठेपरा ले, तेल सांवर नियर छोंड़ा, ठेहुँना भइर धोती में।

बंधनी– एखरिया गतर, सांवर बरन छोंड़ी, परिया सारी में।

मोहन सिंग–सरदार, अधेर पंजाबी सरदार नियर।

कुलदीप सिंग– बूढ़ा एखन, पंजाबी सरदार नियर।

मुखिया– बूढ़ा लखे, फेटा, पेछउरी ओढ़ल, एक टंगिया धोती पिंधल में।

भूमिका

{छोटानागपुर कर कुली–मजदूर कर सोसन एक परिया ले होते आ हे। जेकर चलते रसे–रसे छोटानागपुर कर जिनगी "संस्कृति" मेटते जातहे। हिंञाकर बनिहार मन के असाम, भोटांग, पंजाब मन बटे लेइज के मुरगी, भेड़ी, छगरी नियर बेइच देत हैं।}

अंक– एक

समय– सांझ होत बेरा।

ठाँव– पेठिया कर एकाइर।

धुन– पेठिया कर गुल, तियन सालन बेचइया कर गुल।

प्रकाश– इंजत, तले नजइर एक कर निमरत ले इंजत पियर होएक लागेल। परदा उठेल। पेठिया कर गुल सुनाएल। सेकरे में मांदर बाइज उठेल। अदमी मन आर–पार होएँन।

भादो– (मांदर के बजाए के गाएल)

ए भाई चला नि जाब पंजाब
तले नि आए के मांदर बजाब।

हीरानागपुरे बुचू आब कइसे जियब,
कचिया बिनु घरे कइसे मुँह देखाब।
भेटाए निहीं कहों रीझ–रंग आब,
घर दुरा बेइच के तले काले नी पियब।
दोइन–डाँड़ दइया लुटाए गेलक तब,
करखाना, बांध, खदान, खुलल जनाब।
सोइच रही करखाना काम करे जाब,
से कुकूरो नी पूछैं बुचू कइसे करब।
कइसन सुंदर बन राइज रहे तब,
धांगर–गोतियो कर कामो नी भेटाए आब।
काया तोइर माराफारी जमकाली सउब,
आगे लेलैं काम, पाछे देलैं जबाब।
बेरा सिरे बदरी बरसे निहीं तले का पावब,
मंहगी मारल जान कइसे जीव राखब।
ए भाई चला नि जाब पंजाब,
तले नि आए के मांदर बजाब!

(भादो मांदर उतराएल। आउर ढोलकी के टांगेल, डुडुंग–डुडुंग पीटेल। अदमी मन जमा होएक लागेन। डुडुंग डुडुंग........)

भादो– कमिया मन सुना! सव–सव रुपिया महिना.........पेट भरउवा खाना.......सांझ बिहान एकेक लोटा चाह पीना......रोटी चाबडुंग कइर के खाना.........फिरी आना जाना........देस परदेस घुमना.........कचकचाय के रुपिया कमाना..........सुना भाइ सुना........कमिया मन सुना..... (बीच–बीच में ढोलकी पीटते जाएल, आवल मने खसकेक लागेन)

फगुवा– (पेठिया बट से आए के भादो से पुछेल भादो कर बगल में पंजाबी सरदार हिने–हुने देइख बुलेल) छव मसिया लेजतहा ना!

सरदार– हँ हँ! छव मसिया लेजता है।

फगुवा– (पेठिया बटे देइख के सुकरा आउर चुंदा के हँकाएल, हाथ से इसारा

कइर के) कहिया लेजतहा ना? (चुंदा आउर सुकरा आएँन)

सरदार– आज़ रात को लेजेगा। मेरा गाड़ी से लेजेगा।

सुकरा– छोंड़ा भइर लेजबा कि.....

भादो– सउब केउ के ना! छोंड़ा–छोंड़ी सभे के। बेगर छोंड़ी कर कि काम करेक में माजा लागी?

फगुवा– सभे केउ के एके ठिना काम करेक होइ कि फरके–फरके?

भादो– एके ठिना ना! एक जमक।

चुंदा– कहाँ लेजबा ना!

भादो– पंजाब ना! पंजाब! दूध कर तो हुआँ नदी बहेल ना। जाए के खावा नि रुमसाम कतना खावाला। रोटी तो ना बेगर घीव कर भेटावे नी घरी!

सरदार– मेरे देश को जाएगा ना! तब तूसी देखना कैसी खेती होंदा। तुसाड़ा काम भी करना, खेती करना भी सीख लेना।

फगुवा– छव महिना में घुराए लानबा जुन!

भादो– हँ ना! तो का हुँवे राखले रहब! काम निमरी आउर तोहरे के जे गाड़ी में लेइज रहब सेकरे में पोहँचाए राखब!

चुँदा– आउर हुने ले घुरेक नी देबा होले?

सरदार– घुरने देगा जी। क्यों नहीं देगा। तुमरा मरजी होगा तो घुर जाना।

सुकरा– हुने लेइज के बेइच देबा होले?

भादो– हामरे असाम भोटाँग थोरहे लेजत ही ना! हामरे तो पंजाब लेजतही। खेती–बारी कर काम करेक।

फगुवा– एक धँव के के मन जाए रहैं, काय बछर में भाइग–भाइग के आए रहैं।

सरदार– नइ, मेरे यहाँ ऐसा होने नइ देंगा। छे महिना वासते लेजता है अभी तुम लोग साथ ही घुरेगा। पंजाब में चाय बगान नहीं है जी।

भादो– असाम में नि ना चाय बगान आहे। चाह बगान कर कुली–रेजा मन के आएक नी देवैं ना। हामरे उसन नी करीला। नगदी काम नगदी

दाम देइला। जब तक मन करी रहबा नी करी आपन कचिया झोंका आउर घुइर आवा हामरे मन सँगहे। हामरे तो ना बराबइर ले जाइला।

सरदार– तोहरे सब को कुछ तकलीफ नहीं देगा जी। बेमारी में फिरी दवाई देगा जी।

फगुवा– तब तो ना बेसे आहे (दुइयो छोंड़ा मन से)

चुँदा– सरदार बाबू हामरे के नि नी ठगबा हुआँ लेइज के?

सरदार– न....न.....न...........न.......असी सरदार का बँदा है जी। तुम सब को नइ ठगेगा जी।

सुकरा– देखा भाई ना ठगबा नि तो बेस नी होइ?

भादो– सरना टोली घालीक एक गाड़ी छोंड़ा–छोंड़ी मन गेलैं ना। ओहे मन के तो पोहँचाए के आवत ही हामरे। दोसर टिरिप लेजत ही।

सरदार– तोहरे कितना अदमी जाना माँगता जी।

फगुवा– हामरे तो एक अखरा आही।

सरदार– (भादो से) किया बोलता है जी तोर आदमी सब।

भादो– इमन एक गाड़ी छोंड़ा–छोंड़ी जाएक आवला आहैं।

चुँदा– अछा सरदार बाबू हामरे के कहिया लाइन राखबा!

भादो– तोहरे के पूस तक ले घुराए आनब! अगहन में खेत खरियन कर काम निमइर जाइ तले तोहरे केर का काम रइह जाइ? हिंआ ई जेठ कर भुखमरी में तोहरे के के काम देइ ओइ? तोहरे कहा नि! हिंआ अदमी के आपन खाएक मसकिल बुझातहे।

सुकरा– आएक बेरा कतना कचिया देबा?

भादो– छव सव रूपिया ना! छव सव नोट! छवे महिना में, सोइच लेवा। एतना तो ना हिंआ रइहयो के दुइयो तीन बछर में नी कमाबा! उपरे से खाएक–पिएक पूरकस, आपन खाएक पूरति खावा नि कतना खात हा।

सरदार– आएगा से समय, जाएगा से समय, तोहरे सब के पगड़ी कमीज लूँगी

आउर धूस भी देगा जी।

भादो– आउर का खोजल ना! हिंजा रहबा तो बासी खाबा, दिन भइर खइट मोरा, उपरे ले गोमके–गोमकाइन कर गाइरो सुना।

सरदार– सभी नोकर को बेटा मानता है जी। बेटा जइसा रखेगा जी।

भादो– जावा, तोहरे मन जतना अहा सभे छोंड़ा–छोंड़ी मन जामा होए जावा। एखन सभे हामरे मन पेठियाय में एकेक दुइ डुभा हाँड़ी पियब आउर राहइर –बोदी कर चखना खाब।

चुँदा– हामरे कर छोंड़ी मन के कोनो नि नी करबा?

भादो– पंजाब में छोड़ी मन कर अकाल आहे का ना! एक ले एक सुंदर, उसन सुंदर छोंड़ी तो ना हामरे देखिए नखी। हुआँ कर तो ना बुढ़ियाव मन छोंड़िए मन तइर दिसेन ना, चला नि देइख लेबा, मोएँ झूठ कहत हों कि?हामरे कर छोंड़ी मन के कोनो नी करबैं। उसन ई मन ना लागैं।

सरदार– जावा, सब कोई को बोलाओ आउर हँड़िया पीयो। (सरदार आउर भादो पेठिया बट चइल जाएँन)

सुकरा– चला ना छव मसिया हेके तो जाब। तले तो पूस ले घुरिए आवब।

चुँदा– रेल में लेजबैं नि ना!

फगुवा– चला तब। रेलो गाड़ी में चइघ आवब।

सुकरा– मोएँ तो ना रेलो गाड़ी नी देइख हों! कइसन रहेल सेके?

चुँदा– कतना दिन गाए पंजाब पोहँचब ना?

फगुवा– का जाइन ना! हप्ताह भइर दिन तो लागिए जाइ होइ।

सुकरा– तब तो ना अगम दूर आहे नि?

फगुवा– अछा चला तब जाब। छव महिना में तो घुरके आहे। देसो देखब, कमाइयो आवब।

चुँदा– हिंजा कमाएक चाहे बाहरे कमाएक।

सुकरा– कमाएक तो हइये आहे। हामरे के बेगर कमाले एको सांझ थोरहें खाएक भेटाइ!

फगुवा– मुदा आपन गाँवों घर तो छोड़ल नी जाए!

चुँदा– सब दिन ले थोरहें जातही। छवे महिना कर जुन बात हेके।

सुकरा– बराबइर ले, लेजतलैं हले थोरहें जातली, का ना!

भादो– (आए के तीनों झन से कहेल) चला ना सउब केउ के हँकावा आउर एकेक डुभा टाना। (चुँदा आउर सुकरा पेठिया बट जाएँन। भादो एक बट जाएल। आउर एक कटिक में तीन बोतल आउर तीन–चाइर गो सरइ पतइ आनेल, चुँदा आउर सुकरा घुइर आएँन।)

सरदार– बइठा ना। (बइठाएल हाँथ टाइन के, भादो सभे के एकेक ठो पतइ देल। पतइ कर खोलँगा बनाएँन। सरदार ढाइर–ढाइर के देल। तीनों छोंड़ा बस–बस कहैं। मुदा सरदार ढारते जाएल।)

भादो– 'पीया ना पीया' (कहते जाएल) पेठिया में हाँड़ियो सिरालक आउर राहर–बोदी कर चखनाव, से ले दारु आउर दाइलमोट ले आनलों ना! पीया ना पीया! (दाइलमोट कर चखना खाते खाएँन। दारू पी के निमराए देन। अब सभे के तनिक निसा चढ़ेक लाइग हे)

फगुवा– आब नइ जाएगा जी। कहाँ ना कहाँ लेजेगा (उठेला कि भादो खींच बइठाएल)

चुँदा– हामरे हटिया करखाना में काम करने जाएगा। माराफारी जाएगा जी। ओतना दूर नइ जाने पारेगा जी।

भादो– हटिया करखाना तोर बाप खोइल दे हउ! तोर बाप दादा हउ जे तोके–टानतउ।

सुकरा– हटिया करखाना में हामरे के के लेइ जे जाएगा? काय कलास पइढ़ हिस सेके तो बताव। खखराव कलास पास कइर हिस?

फगुवा– हाँ जी। मोके का सोइच के राइख हा! खखरा फेल मिटरिक पास है जी!

चुँदा– जा जा रे मइरनाहा! मिटरिक पास आहे। क ख लिखेक कर लुइरे निहीं माराफारी, हटिया करखाना जाइ! ऊ में तो पढ़ल खोजता है जी। मोर बाप–दादा तो मोके पढ़ाबे नी घरलैं। मोर बाप धाँगर, मोर आजा धाँगर, सेकर नाती धाँगर नी होइ तो का होइ?

सुकरा– ए सरदार बाबू। (सरदार बाबू के दुलराए के) हामरे सउब केउ जाएगा। फगुवा नइ जाएगा तो टाँइग के लेजेगा सरदार बाबू!

फगुवा– मोहों मुँड़ा हेकों। हामरे से जे बदमासी करेगा उसको माइर के गुँड़ा कइर देंगा। ए सरदार बाबू मोएँ जाएँगा। जरूर जाएँगा। कचिया देंगा,नइ ठगेंगा तो जरूर जाएँगा।

चुँदा– चलिए, मोएँ जाता है।

सुकरा– राह जी हामरोहो जाता है।

फगुवा– चलू सरदार बाबू, चलू, आगे चलू, हामरे सउब आइझ एक अखरा जाएंगा। (सभे ढनमनाते जाएँन।)

अंक दुइ (नजइर एक)

(पंजाब कर गोटेक गाँव कर खेत। टेकटर से जोतेक कर गुल सुनाएल। डीजल पंप फटफट बाजत हे। अढ़बेरिया समय। तीनों कमिया कर पसेना चुवतहे। तीनो कोड़ी धइर हैं।)

फगुवा– काय बछर होए गेलक ना?

सुकरा– का जाइन ना, काय बछर होए गेलक?तीन जेठ लखे बिताली होइ।

चुँदा– एना मोके तो हिंआ अकबकी लागतहे। मोर से तो आब रहल नी जाइ।

सुकरा– मोएँ तो आब भागमूँ सोचत हों। मोरो से रहल नी जाइ।

फगुवा– मोएँ तो आइझ ले बदइक रहतों मुदा हाथे जुन जूछा आहे।

सुकरा– एकेक सव रुपिया महिना तनखा देब कइह रहैं, एहे देत हैं! काय ना काय बछर होतहे, एक कचिया– कउड़ी कर ठेकान निहीं।

चुँदा– भाइग जाबैं कइह के ना सरदार मन कचिया नी देवैं।

फगुवा– सरदार मन ठिन तो हामरे सउब के तीन–चाइर सव रुपिया में बेइच दे हैं ना।

सुकरा– सरदारमन हामरे के तीन–चाइर सव रूपिया में किन ले हैं।

चुँदा– ई राइज में अदमियो बेचाएँन!

फगुवा– से में नि ना हामरे के जाएक नी देत हैं! हामरे तो आब किनल होए गेली।

सुकरा– तब हामरे के का जाएक देबैं?सेहे में कि हामरे के तनखा नी देवैं। खाएक भइर देन।

चुँदा– खाएक नी देबैं तो हामरे का तइर काम कइर देब से ले देन।

फगुवा– हिंञा कर रोटी खाए–खाए के तो मन अनसाए गेलक, खाएको मन नी करे।

सुकरा– नरटी ले हेंठे उतरबे नी घरे!

चुँदा– कहिया जे घरक बासी भात आउर पुटकल साग डबकाल खातलों तइर लागतहे।

फगुवा– मोके तो आब घर नी गेले चइने नी मिली। सरदार के कचिया मांगमू। नी देइ हेले हिठियो के हल चइल देमू।

सुकरा– ई ठिना हामरे कर देस आहे ना। का जाइन कने होएल कने निहीं?कने जाब कने निहीं?ई पंजाब से तो निकलके मसकिल बुझाएल। केकर से पूछबे? हिंञा कर अदमी बताबो तो नी घरबैं। सउब दने तो हामरेहे मन कमिया भरल आही।

चुँदा– चला हामरे सउब भाइग जाब!

(पाछे ले एक गो सरदार आएल)

मोहन सिंग सरदार– अरे किधर को भागना माँगता बेटा! तेरे को खाना नइ मिलता क्या? तूसी पेट नइ भरता! बोलो–बोलो, ऐ बँदा। मारेंगे ऐ थापड़! खाएगा पेट भर के आउर काम करना छोड़ के गप करंदा।

फगुवा– सरदार बाबू आब हमरे के छोइड़ दे। हामरे आपन देस जाब। हामरे कर मन आब नी लागतहे।

मोहन सिंग सरदार– ऐ बँदे! तूसी देस जा के क्या करना? हाँ जी, थोड़े दिन आउर ठहर जा बेटा। इकठे तेरे को सब पइसे गिन के गाड़ी में बिठा देंगा।

सुकरा– निहीं सरदार बाबू, आब हामरे के छुटी दे। आब हामरे हिंञा रहेक नी पारब।

चुँदा– छव महिना कइह के लाइन ले हा आउर हिंञा काय बछर ले खटुवाए मोरातहा।

मोहन सिंग सरदार– अरे बँदे! मेरे को छे महिना से क्या काम होंदा। बेटा तूसी, इधर रहो। ठाठ से कमाओं खाओं। देस जा के क्या करना, हैं?

फगुवा– नइ, हामरे जाबे घरब। हामर पइसा देइ दे। हामरे नी रहेक पारब।

मोहन सिंग सरदार– अरे ओ कुलदीप सिंग। इथे आंदा, ए छोकरा नू देस भागना चाहो! (कुलदीप सिंग आएल)।

कुलदीप सिंग सरदार– क्यों बँदा! तूसी इथे क्या तकलीफ होंदा, इथे से तू सब भाग गया ना तो भाग के तू जाने नइ सकेंगा। हमारा आदमी तुसाड़ा हाथ–पैर तोड़ देंदा। ई समझ लो बेटा। इथे काम करो, राम का नाम लो, जिती रोटियाँ खानी हो खाओ। जाने का नाम फिर न लेना।

मोहन सिंग सरदार– सुन लियो बेटा। जाओ कमाओ। आज इसको पूरा कोड़ दो। काम पूरा नहीं होंदा तो रोटियाँ नहीं मिलनी तेरे को। जाओं बेटा ! काम करो, जाओं बंदे जा, तेरे को एक साथ सब रुपिया गिन देगा। (तीनो छोंड़ा मुँड़ी गाइड़ रहेन। दुइयो सरदार चइल जाएँन)।

फगुवा– मोएँ तो आब निहींये रहमू। तोहरे चलबा तो चला। आइझ राइत के देइख लेबा मोर छाँइहियो नी रही। (गोटेक छोंड़ी आएल आउर फगुवा कर झुला के मुठियाए के काँदे लागेल)

बँधनी– (काँदेल) मोएँ नी रहमू! मोके हिंञा ले घर लेजा। नि तो मोएँ हिंञे टेकटर– हेंठे जँताए के मोइर देमू। (फगुवा के खिंचेल)।

चुँदा– का होलक बँधनी! केउ कोनो करलैं का?

बँधनी– (आउरे कांदेक लागेल) मोएँ आब हिंञा नि रहमू। मोके घर लेजाए देवा नि तो ई जान के नी राखमू।

सुकरा– के का करलक कह नि? एके कोढ़ी में मुँड़ काइट के राइख देमू। भेल सिता जेहेले होइ चाहे फाँसी।

फगुवा– निहीं, आब आउर जुलूम नी सहब। चला आइझ राइत के। हामर काया आउर हामरे कर छोंड़ी मन उपर तो ई सरदारमन कर नजइर

गड़ले रहेल।(बंधनी आउर कांदेल)

चुँदा– ना काँद बँधनी। साबुर कर जीव के। आइझ हामरे कर पंजाब में आखरी राइत होइ।

फगुवा– बँधनी आइझ ऊ सरदार कर बच्चा के जे मोएँ जाते–जाते नी छेंवइट राखलों तो मोरो नाँव फगुवा निहीं।

सुकरा– बँधनी, मोएँ तोर किरया खाए के कहतहों। आइझ मोएँ आपन देस जाते–जाते इसन काम करते जामू कि केउ आउर हामरे कर देस कर अदमी के ई छगरी–भेड़ी तइर ना बेचबैं ना किनबैं। चला तो आइझ का ले सरदार कचिया नी देइ सेके। मोहों देखमू। बड़ा सेथी काम करूवाए–करूवाए के हेवाए जा हैं। (जाएल सेकर पाछे सभे जाएँन)

अंक तीन– नजइर एक

(गाँव कर अखरा। राइत कर पहिल बेरा। सुकरा आएल आउर अखरा कर चाइरो बट देखेल, टहटह इंजरिया राइत)

सुकरा– अरे एखनो ले केउ नि दिसैं। (हिने–हुने देखेल) ई अखरा हेके? इसन तो नी बुझाए! तीने चाइर बछर में अखरा कर ई हाल। अखरा में भला घास नोगइज जा हे। हिंञा ले तो धूर उड़ेक रहे। (चुंदा आएल)

चुँदा– का ना एखन ले अखरा नी जाइगहे! एखन ले तो अखरा गहजत रहत रहे। से भला केकरो सूरइत नी दिसतहे।

सुकरा– ओहे तो मोएँ सोचत हों! ई अखरा हेके कि मसना? ओदे देख तो मुखिया काकू जातहे। हँकाव तो।

चुँदा– ए काकू सुइन ले तो। (मुखिया बूढ़ा आएल)

मुखिया–तोएँ के रे चुँदा! आउर तोएँ सुकरा कि रे! का ले आला रे? हुदे पंजाबे बट रहता। तोहरे के हिंञा आएक से का दरकार रे? (एतना कइह के जाएक लागेल)

सुकरा– (रोइक के) सुन–सुन नि काकू, तोएँ तो इसन नि खिसाए के जात हिस कि हामरे कोनो जानमारी कइर ही।

मुखिया– जानमारी तो करबे करला रे। ओदे जा, देइख आबा। घुरा का होलक? जावा, देइख आवा। ओहो जाए रहे पंजाब। बड़ा कचिया कमाएक जाए रहे। आइझ कहाँ चइल गेलक दुनिया छोइड़ के। (मुखिया कंदकंदु होए के कहेल)। सार कइसन सुंदर छोंड़ा रहे, कोरा में खेलाए बढ़ाए रहों, सेके भला चिनहेक नी पारलों। (धोती कर कोर से लोर पोछेल)।

चुँदा– हामरे तो आइझे आ ही। संगी साथी से भेंट–घाट करेक खेयाल से अखरा आए रही। हामरे का के जानब घुरा के का होलक?

मुखिया– का होइ?एक हप्ताह होतहे पंजाब से भाइग आवल। भाइग आवत रहे से खन धराए गेलक। सरदार मन बेसे पीट दे रहैं। हिंआ कोनो लखे आलक उके अस्पताल में भरती कइर देलैं। आउर देखा आइझे सांझ के सिराए गेलक। आउर तोहरे मन अखरा में......

सुकरा– हँ काकू! अखरा बट आब केउ नी आवैं का?

मुखिया– अखरा में के आतलक रे? से तो मोके बताए देवा? तोहरे सउब छोंड़ा–छोंड़ी के तो गाँव चाबलक। सउब कर सउब तो उढ़रिया भागला। तले आइ के तोहरे कर भूत?नी देखतहा अखरा में घास नोगइज जा हे।

चुँदा– गोटे गाँव साफ होए जाए रहैं का काकू?

मुखिया– गोटे गाँव कहिस, रोपा–डोभा जइसन काम–धाम कर दिन में खोजले एक गो बनिहार नी भेटात रहैं। हाँथ में कचिया ले के बनिहार खोइज बुलत रही से दवइयो ले नी भेटात रहैं। कोनो लखे हामरे बूढ़ा–बुढ़िया मन जतना पारली रोपली, निकाली आउर काटली। हामरे ई तीन–चाइर बछर का लखे दिन काइट ही सेके हामरेहें जाइन ही।

सुकरा– हामरे तो काकू छव मसिया कइह के जुन जाए रही। मुदा हुआँ तो पावल सुखे रगइद के काम लेत रहैं। खाएक ले तो गरु–काड़ा के जे देना से लखे रोटी के कुधाए देत रहैं। हामरे के तो खाएक बलाए होए जात रहे। रोटी काकू, घेंचा ले हेंठे उतरबे नी घरत रहे। सउब

दिन कर भात खाए हेवाल। बासी भात खाएक ले ललाए के रइह जात रही। काम तो ना कइह दे, चढ़ल राइत तक ले खटुवाए देत रहैं। सुसताएक तो हामरे काम कर जोर में जानबे नी घरत रही।

मुखिया– आउर बंधनी सैं के बिहा करलक रे?

सुकरा– का...कू! ऊ......ऊ...........ऊ.......ऊ.........ऊ

मुखिया– एहे सउब करेक जाए रहा रे। आपन देस, आपन भाखा, आपन अदमी कहियो नी छोड़ल जाएल। इकर से पेयारा ई दुनिया में आउर कोनो नखे। देखा, तोहरे मन कर चलते गोटे गाँव कर का दसा होए गेलक?

चुँदा– कान धरतही काकू। आउर कि पंजाब जाब। जतना काया हामरे पंजाब में तोइर ही ओतना हिंआ तोइर रहती तो गाँव–घर का से का होए जातक।

मुखिया– जाइत जाएल तब बुइध होएल। बनिहार–भूतियार तो जाबे घरला, पढ़त–लिखत छउवा मन तक के ले गेला। पढ़तलैं– लिखतलैं तो एक दिन गाँव कर नाँव बाजतक। से मोर गाँव कर सपना के तोहरे मन छितिछान कइर देला। के रहे तोहरे कर सरदार?केकर बहकाल में तोहरे छोंड़ा ना छोंड़ी पंजाब कुदला?

चुँदा– ओहे भादो छोंड़ा रहे। पंजाबी सरदार कर गुरु।

मुखिया– सावना कर बेटा भादो। सेहे में फुरफुराए बुलेल। बड़ा धमंड होए जा हे उके। बुझाएल रुपिया कर गरमी डबले चइढ़ जा हे। आइझ–काइल तो गोटेक फटफटिया में उइड़ चलेल।

सुकरा– भादो फटफटिया ले हे?

मुखिया– थाना पुलिस कछइरी के तो कोनो बुझबे नी घरे। उके तो कहेल, किन ले हों।

चुँदा– पुलिस कर आगे रुपिया गिन देत होवी होइ?

मुखिया– कतना दिन गनी? सउब दिन कर चोर आखिर एक दिन धराए जाएल। आउर पुलिस आपन बापो कर नी होएल। एखन भादो के सांइत पता नखे। उकर नाँव से वारंट निकइल जा हे।

सुकरा– भादो कर नाँव से वारंटो निकइल जा हे?

मुखिया–हँ आबकि कुली चलान करेक में पंजाब पुलिस से धराए जाए रहे। दस हजार रूपिया गिन के आ हे। हिंञा इकर नाँव से वारंट निकलुवाए दे हे पुलिस।

चुँदा– (आपने आप में) दस हजार रूपिया कमाए लेलक। फटफटियाव ले लेलक! सेहे में तब हामरे के तलब नी मिलत रहे।

मुखिया–आब तो भादोवो ठिना रुपिया सिरालक तो हिंञा कर पुलिस मन बारंट लेइ के दाइन बुलत हैं, कतना दिन लुइक के रही। गाँव के बरबाद कइर के केउ सुख से रइह सकेल? (फटफटिया कर बाजेक सुनाएल। एक कटिक में फटफटिया गिरेक सुनाएल। सेकर पाछे आउर दुइ गो फटफटिया कर आएक सुनाएल। तले रदबद– रदबद अखरा बट ले भागते भादो पार होएल। पाछे ले "पकड़ो पकड़ो" नेपथ्य में सुनाएल)।

सुकरा– कहते–कहते भादो आइए गेलक। पुलिस मन कुदात हैं कि का? (बूट जूता कर बाजेक अखरा कर पिछवाइर बट सुनाएल) फटफटिया रोइक के कुदात हैं कि का?

मुखिया–आब अखरा में चोर बदमास आउर सिपाही मन चघबैं। देइख लेवा तोहरे मन कर पंजाब भागल से गाँव कइसन सुनसान होए गेलक। ई अखरा निंदाए गेलक। जहाँ पहर राइत ले माँदर आउर बँसरी कर तान सुनात रहे, ढोलकी आउर नगेरा गहजत रहत रहे, गीत गूंजत रहे, गोटे गाँव हुँआ पिसतोल बाजतहे। (पिसतोल कर ठाँय–ठाँय सुनाएल) सुनत हा? गाँव कर रीझ–रंग कने हेराए गेलक आउर गोटे गाँव लोर में डूबत हे। चला आपन करनी कर फल देइख लेबा। (नेपथ्य में जनी मनक कांदेत पार होएक सुनाएल)

(नाटक टुंडू)

एकदमे डरुवाए के मोर आधा जान के ले ले रहिस।

सिबा– मोएँ तो तोर इनतिहान लेत रहों कि तोएँ बहादुर, डिगर आहिस कि निहीं।

सुगो– भाग मोएँ तो सोचलों कोनो करम टोंगरी कर भूत–उत हेके।

सिबा– धत सार के, कोन भूत रही ई करम टोंगरी में। ई दुनिया में कोनों भूत आहे?कुछो नखे!

सुगो– से जे सउब केउ कहेन कि करम –टोंगरी में सांझ के भूत निसकेल।

सिबा– सेहे तो मोएँ बताएक ले, तोके ई ठाँव में, ई बेरा बोलाए हों। देख, आइझ कोन भूत आएल।

सुगो– तोएँ जहाँ रहबे, हुआँ भूत भला आए सकेल! ई आइझ मोएँ जाइन गेलों। तोर इनतिहान तो आब पूरा होए गेलक। आइझ तो तोएँ रहबे?करम पूजा में! रहबे तो?

सिबा– निहीं सुगो, मोएँ तो एखने खूँटी चइल जामू। काउल मोर इनतिहान कर आखरी दिन हेके। आइझ करम रहे से ले मोएँ तोर से भेंट करे ले आए रहों। तोर नाचेक–गाएक देखेक कर अगम सवक रहे। मुदा जिनगी कर सवाल हेके।

सुगो– तब तोएँ नी रहबे! तो आइझ कर नाच–गान जमकबे नी घरी। मोर तो एखने ले मनक रीझ–रंग उतइर गेलक।

सिबा– निहीं सुगो! आइझ करम हेके। तोएँ नी नाचबे–गाबे तो करम राजा का नियर खुस होबैं। तोएँ आपन करम कर, ओहे तोर धरम होइ। मोएँ आपन करम करमू, ओहे मोर पूजा होइ, कहेन नि करमे धरम हेके, करमे पूजा हेके, करमे जिनगी हेके। ई दुनियाय करम कर हेके। सेहे ले तो हामरे करम कर एतना महातम मानील। आउर करम करील।

सुगो– मोएँ तो करम भइया कर धरम ले करोंन। हलहों मोएँ करम राजा से बिनती करमू कि करम राजा तोर इनतिहान में तोर करम कर डबल लंबर देवैं।

सिबा– जा तब, तोर बेरा होत हे। तोर संगी मन खोजत होबैं। (जाएल) सुन

डराबे तो निहीं! कि पोहँचाए देवँ।

सुगो– निहीं मोएँ चइल जामू। तोएँ एतइ राइत के ओतइ दूर जाबे तो तोके डर नी लागी?

सिबा– निहीं मोएँ तो तोर इयाइद करते चइल जामू। ना डर लागी ना थकवासी।

नजइर– 2
ठाँव–अखरा
बेरा– करम कर राइत

(छोंड़ी मन झुमइर खेलत हैं। मंगरा मांदर बजात हे। बिसू बँसरो फूकत हे। भरथू भरनी भरत हे। गीत कर आखरी कड़ी में सुगो गिर जाएल। नाच, बाजा, गीत होका होए जाएल सुगो के सउब चाइरो दने से छेइक लेन।)

एगो छोंड़ी–का होले सुगो? (सुगो कोनो जबाबे नी देल)

मंगरा– सुगो, सुगो, ए सुगो (सुगो के मंगरा हिलाएल। ऊ आँइस ना उँइस नी करे।)

बिसू– (सुगो कर नारी के धरेल) इकर तो नारी एकदम धीरे चलत हे।

भरथू– (भरते–भरते आएल। थिथाए के सुगो के देखेल) छों होवा, नी देखत हा, उकर आँइख उलइट जा हे।

तीसर छोंड़ी– तब तो इके कोनो चुरिन जाँतलक होइ!

भरथु– निहीं इके भूते धहर हे। साँझ बेरा करम टोंगरी बट जात रहे।

एगो छोंड़ी– ई तो सिबा से भेंट करे जाए रहे।

मंगरा– तब तो ठीके में करम टोंगरी कर भूते घइर होइ।

दोसर छोंड़ी– हामरे कइह रही–साँझ बेरा करम टोंगरी बट ना जा। हामरे कर कहल के तो मानलक निहीं। चला इकर आयो–आबा हार के कइह देब। (छोंड़ी मन जाएँन)

माँय– (काँदते आएल) हाय रे मोर सुगो! का होले बेटी। कह नि का होले! (सुगो के पोटराए के काँदेल)

बाप– (आबा हार आएल) सुगो बेटा का होले बा!

माँय– ज़ाउ नि कोनो जतन करू। ई ठिना कि ठाढ़े रहले काम चली! जाउ बदइक के जाउ, गाँव कर पहान मन के धइर आनु। करम खेलते–खेलते मोर बेटी के का होए गेलक गे आयो?

बाप– देखा मंगरा, जावा मइनका पहान के हँकाए आना तो।

माँय– रउरे एखनो ले एहे ज हाले आही! आपने से जाब से निहीं, दोसर–तीसर के अरहाए लाइग ही। जाउ नि बाबा, का के एखन ले ओगइर रइह ही। नी बचाब ई बुइध में।

मंगरा– हामरे कर बोलाले की मइनका पहान आबैं!

माँय– काले नी आबैं हो, गाँव कर पहान हेकैं तो काले नी आबैं।

बाप– का लखे आबैं कि सुगो कर आयो! पहान मन से तो हामरे कर एकहतर दफा कर केस चलत हे। काइले कछइरी में कतना कहा–कहीं होए गेली।

माँय– झगरा–मोकदमा आपन ठाँवे आहे। पहान हेकैं तो आएके होइ। गाँव–घर बिगड़ी, छीटा धरी तो का ले नी आबैं। जिनगी बीत गेलक एतना दिन कहियो, नी आमू कइह हैं ना जानलैं आधा राइत, ना जानलैं कोनो काम के, सउब काम छोइड़ के आएँन। जाउ तो का ले नी आबैं। नी आबैं तो दोसर गाँव कर पहान के बोलाब।

बाप– अछा मोहे जात हों। (जाएक लागेल।)

बिसू– राह काका मोहो जात हों (जाएल)

माँय– जावा हो मंगरा, तोहरे कर पहान सहिया आबा हेकैं। कोनो लखे समझाए–बुझाए के ले आनबा। (जाएल)

पहान– (आएल) कने हो बोहोरिया, केके का होलक?छउवा मन जून कहलैं।

माँय– एखने बाप हार बोलाए ले जा हैं। नी भेटालैं का?

पहान– कने देखों मँइञा के, का होलक? (सुगो के देखेल। नारी मन के अंदाज करेल।) का लखे इसन होलक?

माँय– देखू नि, अचके सुगो के का होए गेलक! एखने नगदे करम खेलत रहे। अचके छीटा धरलक नि का?

पहान– आइझ सांझ कहों जाए रहे का? एकला दोकला!

दोसर छोंड़ी– (आए के) हँ , आइझ साँझ के करम टोंगरी बट जाए रहे।

पहान– करम टोंगरी बट, साँझ बेरा। कने देखों मँइञा के। (सुगो के फिन देखेल, उकर आँइख मन के, नारी मन के, टोमड़ेल)। ठीके में इके करम टोंगरी कर जाइत धइर हे। जावा, हरदी गुँड़ा, अरवा चाउर आउर दुइ गो करिया चेंगना ले आना। एखने सउब ठीक होए जाइ।

बाप– (आएल, पहान के जोहाइर करेल) रउरेहें दने हामरे जाए रही। हामरे कर मँइञा कइसन?

पहान– घबड़ाएक कर कोनो दरकार नखे। इके करम टोंगरी कर जाइत जाँइत हे। लानु इकर नेग –जोग के। (आयो हार लानेक ले जाएल)

माँय– (आनेल) लेउ। (हरदी गुँड़ा, अरवा चाउर, दुबला घाँस आउर दुइ गो करिया चेंगना देल)

पहान– (पतइ में पुरियाल साना–फाना के सुगो कर गतर में ठेकाए–ठेकाए के भुँइ में ठेकाएल। आउर कांख में चिमटते जाएल। बीच–बीच में फूकतो जाएल। चेंगना के चाउर चराएल। आउर जाएक लागेल।) एगो तपान ढारे ले कोसना उठाए रहबा।

बाप– सुगो कर आयो सुनत हिस? एगो कोसना उठाएक कहत हैं।

माँय– जाउ नि, एक गो के कहे; दुइ गो उठाए देमू। छउआ के तो बेस होएक देउ।

पहान– होइ हो एक घड़िक में कुइद उठी। मँइञा के घर ले जावा आउर तेल– फूल मन माइख देवा (पहान जाएल। सुगो के उकर माँय–बाप तुलंइग के ले जाएँन।)

नजइर– 3
ठाँव– सुगो कर घर

(सुगो कर गोड़–हाथ में तेल माखत हैं। सुगो कर बेस होएक कर नाँवे निहीं। घर कर अदमी अकबकाल आहैं।)

माँय– ए सुगो कर आबा। जाउ बाबा कोनो जुगुत करू। पोढ़ा टोली कर झगरु मति के धइर आनू। पहान कर के नी सुनलक कि का! सुगो हामरे के धोखा देइ बुझात हे। जाउ नि, का के देखत ही?एखन एहे अधरतिया होए हे, बगरा राइत नी हो हे।

बाप– एखन आधा राइत के आवे खोजी, झगरु!

माँय– का ले नी आइ। एगो पठियाय जून लेइ। बिसू आउर मंगरा के लेते जाउ। एकले ना जाब।

बाप– देखबे तब मइञा के। मोएँ चटे के आवत हों। (जाएल)

माँय– हाय आयो मोर बेटी के का होए गेलक! कोन इसन डाइन–बिसाही मोर बेटी के ई हाल कइर देलक गे आयो! कि कने कर कोन धुंगिया उठा जाइत के केउ नी भेटालक जे मोर बेटिए के..... ।

झगरु– (आए के) ना आयो इसन ना गरियाउ। एखन तो हामरे उकरे सासइत में आही। उके गरियाले बड़ा मसकिल होए जाइ। देखों छउवा के। (सुगो के देखेल छुएल।)

माँय– आइझ करम उपास कइर रहे। पूजा करलक। ओ देखू खाबो नी घरलक आउर संग हार मन हँकालैं तले चइल आलक खेले। खेलते–खेलते का धरलक रे बाबा! ठाढ़े पटकाए होलक ठाय के।

झगरू– लानू सउब साना–फाना के गोटेक ढकनी में गोएँठा कर आइग, केंस, लोहबान, गंधक, धूवन, धूप मन के इंतजाम कइर देउ। (समान कर जोगाड़ होएक लागलक। झगरु आपन जँठ के छोरलक। लोहा कर चिमटा के मड़ालक। घेंचा कर रूद्राक्ष कर माला के हाथ में ले के घिंदराएक लागलक। मुँड़ के धुनेक लागलक। जोर–जोर से गुनगुनाएक लागलक। साँप नियर फूँफवाएक लागलक। आइग

आलक, लोहबान, गंधक, धूवन मन आए गेलक।)

झगरू– छउवा के हेंठे भुँइ में उतराए के सुतावा। (मंतर पइढ़ के लोहबान गंधक मन के देक लागलक, धुँवा पसरे लागलक। माँय–बाप मन बइठ गेलैं। धुंगिया कर जोर से सउब खो–खो करे लागलैं) या गुरुजी औघढ़ नाथ, भूतनाथ (फिन लोहबान गंधक केंस के आइग में देल) बड़ पहाड़ी, छोट पहाड़ी, मसना कर डाड़ी, (फिन धूप–धूवन देल।) गाँव देवता, डीह देंवता, कुटुंब देवता, केकरों नी लागत हे पता। (फिन गंधक लोहबान के आइग में देल। मुँड़ के जोर से धुनेक लागेल। धुँगिया के सुगो बट फूकेल।) हँ, हँ, बोल के हेकिस?बड़ पहाड़ी, छोट पहाड़ी, मसना कर डाड़ी! बोल हेकिस? एहो नइ तो बोल के हेकिस नी तो ले (अदमी कर केंस के लोहबान के आइग में देल।) खरवा गढ़ा, बुची डाड़ी, जाम दोहर, बकरा पावा, मसना डांड़ बोल कहाँ कर हेकिस? (चिमटा के अलगाएल।) बोल के हेकिस, एहो नइ, एहो नइ, तो करम टोंगरी कर जाइत, बोल हेकिस कि नइ? हँ बोल, बोल। का खोजत हिस?का लेबे? हँ बोल, का लेबे?रंगुवा लेबे, लोहंजइर लेबे, ओहो नइ, करिया लेबे?हाय! एहो नइ! तो का लेबे? (फिन चिमटा उठाएल आउर लोटनी के आइग में देल। जोड़ा पेरवाँ लेबे? हँ ,हँ बोल लेबे? एहो नइ! (फिन चिमटा उठाएल) चरका बकरा लेबे?काड़ा लेबे? बोलत हिस कि नइ तो ले (एक चिमटा सुगो कर गोड़ में मारेल। सुगो आपन गोड़ के तनिक सोकराएल।) हँ, हँ बोल नि तो एखन आउर पाबे। (चिमटा फिन अलगाएल। लोहबान के आइग में फिन देल।) या गुरु जी औघढ़नाथ, भूतनाथ, जान बाचे मोर साथ, नि तो लगाए देंव दुइ हाथ। बोल का लेबे? चरका पठिया लेबे। हँ , हँ मिली छोड़ इके नि तो ले (एक चिमटा आउर सुगो केर गोड़ में मारेल)!

सुगो– (कँहइर के) हाय आयो (अस्पस्ट बेहोसी में)

माँय– का यो?कइसन?

बाप– का बेटी?कइसन?

झगरू– मइत टोका। (गंधक लोहबान लोटनी के आइग में छोड़ेल। फिन चिमटा के उठाएल) या गुरु जी औघढ़नाथ, भूतनाथ, छोड़ इकर तुरते साथ नि तो पाबे एखन दुइ हाँथ। छोड़ नि तो ले (एक चिमटा जोर से सुगो के माइर देल गोड़ में।)

सुगो– हाय आयोगे! एयोऽऽऽ एयो– ए बा (अस्पस्ट बेहोसी में)

माँय–बाप–"दुइयो संगे" –का बेटी?

झगरू– छउवा के होस आवत हे। इके खाटी में सुताए देवा। एगो चरका पठिया खोजत हे। आउर सुना (आपन जँठ के तोइर के गोटेक करिया लुगा में बांधेल आउर सुगो कर घेंचा में बांइध देल। जाएक लागेल) आउर सुना –दुरा के ढाइप देवा। (चइल जाएल)

सुगो– (छटपटाएक लागेल।) हाय आयो गे! (कइह के उइठ बइठेल आउर पेट के धइर के "बाइठ रे" कहते फिन खाटी में गिर जाएल।)

माँय– नी बेस होलक कि का? पेट बथतहे का? जावा कोनो करा। नी बेस होइ।

बाप– बिहान तो होए गेलक। आब तो कोनो करके होइ। (बिसू सिबा आउर डाकटर आएँन)

डाकटर–केके का होलक, देखों? (आपन बकसा के खोलेल। आला के निकलाएल। नारी के देखेल, आइँख, कपार, पेट के देखेल थरमामीटर के लगाएल। फिन सुइ देक ले दवइ सीसी के काटेल, सुइ में भइर के सुगो कर बाँइह में देल)

बाप– ई डाक्टर के कहाँ पाला रे?

बिसू– मोएँ तो सिबा के खबर देक ले खूंटी चइल जाए रहों। सिबाए डाकटर के लेते आनलक।

सिबा– बिसू चाइर बजे बिहान बेरा मोर ठिन पोहँचलक। ई तो चउधरी बाबू डाकटर आए गेलैं से ढेइर।

डाकटर–हामरे कर कामे का हेके?

माँय– डाकटर बाबू हामर मँइञा कइसन.....?

डाकटर–तोहरे मन मति –ओझा करे में ढेइर देरी कइर देला। ई तो सिबा

मिल गेलक तो मोके धइर आनलक। जे मोएँ समय में पोहँइच गेलों। घबराएक कर कोनो बात नखे। मोएँ सुवा दे देहों। दिन भइर कर छउवा के तोहरे मन बेगर खियाले–पियाले करम खेले भेइज देवा ला। उपास गतर में जोर कर काम चाहे नाचेक–गाएक कर काम नी करेक चाही।

सुगो– (उठेल) अरे एतइ झन का करे आ हएँ यो?

सिबा– डाकटर साहेब, ई मन के बताए देउ कि सुगो के भूत धइर रहे कि का धइर रहे?

डाकटर–सुगो के ठीके में भूत धइर रहे। जे भूत कर नाँव हेके हाइपरटेनसन। ई हाइपरटेनसन भूत के ई जे सूवा आहे नि से निकलाए देलक। ई सुवा में कोरामीन कर दवइ रहे। ई जे सुवा आहे ऊ नि, बड़े–बड़े भूत के कुदाए देल।

बाप– ने डाकटर बाबू! कतइ देरी में मँइञा पूरा बेस होए जाइ?

डाकटर–आब बेस होए जाइ तनिक देरी में। अकबकाएक कर कोनो बात नखे। अब हामरे के जाए देवा। सिबा कर आइझ इनतिहानो आहे।

माँय– नि डाकटर साहेब, सउब इसने कइह के चइल जाएँन। पहान आलैं, इसने कइह के चइल गेलैं कोनो नी होलक। झगरु मति आलैं, ओहो उसने कइह के चइल गेलैं। उकरो में कोनों नी होलक, आब रउरोहों उसने कइह के जाएक लाइग ही।

बाप– डाकटर साहेब हामर रउर से अरजी आहे कि रउरे हामर मँइञा कर पूरा बेस होत तक ना जाउ।

सिबा– डाक्टर साहेब अपने ई मनक, मनक भूत के खेदिए के जातैं तो बेस होतक। मोएँ तो चललों, मोर तो इनतिहान आहे। अछा (सउब के जोहाइर करते निकइल जाएल।)

डाकटर–बेचरंगा आपन इनतिहान के परवाह नी करलक आउर कुदल आलक। तेउए इनतिहान ले तो पोहँचिए जाइ।

बाप– गाँव भइर कर छोंड़ा मन में एहे तो गोटेक पढ़लक, आउर मन गाँवे रइह गेलैं। केउ हर जोतत हे, तो केउ गरु–काड़ा चरात हे। केउ

धांगर होलक केकरो घरे, देखू डाकटर बाबू, एकेक गो इसनो छउवा होएँन जे आपन काम के हरजा कइर के दोसर कर जान बचाएँन। ए डाकटर बाबू ई सिबा के रउरे डाक्टरिये पढ़ेक कहब। गाँव कर बराबइर ई भला सोचेल।

सुगो– ए यो!

माँय– का बेटी?

डाकटर–का रे मँइञा कइसन ?देखला, आब ई ठीक होए गेलक। इके गरम पानी चाहे गरम दूध दे सकला।

सुगो– (उठेक खोजेल। डाकटर उके सुतले रहेक कर इसारा करेला।) डाकटर बाबू के, के बोलालक बा?

बाप– सिबा आइन राइख हे बेटा। तोर जीव कइसन लागत हे?

सुगो– अब तो नगदे लागत हे बा। ओय यो! करम बिहान होलक?

डाकटर–हँ , करम बिहान होए गेलक। फिन करम बोहाएक जाएक आहे का? (एतने में छोंड़ी मने करम डाइर के सुगो कर दुरा में आनेन आउर गीत गाएन– "आइझ तो रे, करम राजा घरे दुवारे..........)

सहिया—बाप

पात्र (नटकरवा मन)

1. मइनका पहान— मधु कर बाप— देहाती किसान नियर।
2. कइला महतो— रासू कर बाप— देहाती किसान नियर।
3. दुलाल— गाँव कर दलाल।
4. मधु— मइनका पहान कर बेटी— कोलेज पढ़ेक छोंड़ी नियर।
5. रासू— कइला महतो कर बेटा — कोलेज पढ़ेक छोड़ा नियर।

नजइर— एक

ठाँव— मइनका कर बारी

बेरा— दुपहरिया

मइनका— (बारी कोड़त हे। पसेना चुवत हे, पसेना पोछेक ले कोड़ेक होका कइर के डंडा में हाथ धरेल। जोर से गरम साँस मुँह बटले निसकाएल) हाय!

दुलाल— (आते—आते) सँथाए ले पहान, सँथाए ले!

मइनका—का सँथाबे दुलाल भाई! मोर भाइगे में सँथाएक नखे।

दुलाल— आँ हँ हँ हँ! भाइग के काले कोसत हिस? ले बीड़ी पी ले। (कान से बीड़ी निकलाए के मइनका के देल, आपनोहों बीड़ी कर दुइयो अरा फूइक के मुँह में धरेल। डंड़ा से दियासलाइ निसकाए के खोरेल। दुइयो बीड़ी सलगाएँन)

मइनका—का कहबे? एसों मोर जे बितत हे से मोहें जानत हों।

दुलाल— ई उमेर तोर काम करेक कर हेके?अरे जवान बेटा के पलटन में भेइज देले। आउर बेटी के...... ।

मइनका—ऊ तो सहरे में पढ़ेल।

दुलाल— ओ..... तो तोएँ बेटियो के पढ़ात हिस?तोर नियर लुइरगर?

मइनका—बेटा तो आगे पढ़लक निहीं। बेटी जब आगे पास होतेहें जात हे तब

का लखे नी पढ़ामू?

दुलाल– अरे बेटा के पढ़ाए रहतिस तो काम देतक?आनकर घरे चुलहा फूके जाइ से बेटी के पढ़ाए मोरत हिस!

मइनका–मोर बेटी पढ़े में तेज आहे। उके सालिना इसकोलरसिप कि का कहेन से भेटाएल।

दुलाल– मिलबो घरत होइ तोहरे मुँड़ा–पहान मन के। तब बेटा–बेटी के पढ़ाएक में तोहरे के कोनों कचकच नखे। बलाए तो हामरे के आहे।

मइनका–एसो मोर बेटी कर नाँव डाकटरी पढ़ेक ले निकइल हे। सेकर ले ततकाले दुइ हजार रूपिया जोगाड़ करेक आहे।

दुलाल– पढ़ावा भाइ! तोहरेहें कर राइज आहे!

मइनका–का तइर पढ़ाँव से सोचतहों मोएँ। दुइ हजार रूपिया तुरते का नियर जोगाड़ होइ। एसों गोटेक बरदो गरगटी में जाते रहलक। इन साल कर पानी–बरखा दुखे ना धान होलक ना पोरा। से कोनो सूझबे नी घरत हे।

दुलाल– जब पढ़ाबे घरत हिस, ओहो डाकटरी पढ़ेक जात हे, तब का के सोचत हिस? कोनो उपाइ कर। गाँव घर में आउर इसन के पढ़तहे?

मइनका–गाँव में दुइ हजार रूपिया का भेटाइ? केकरो ज होबो घरी तो का देइ उधरा–पँइचा?ओहो एसों कर अकाल में।

दुलाल– राखल कहिस?गाड़ल चांदी कर रूपिया केर गगरा निकइल जाइ से नी कहिस !

मइनका–सेके मोके का ले देइ ?

दुलाल– का ले देइ कहिस ! तोर कादो–दोइन कर नाँव ले नि! देख?कतना लेवइया कुध होए जात हैं।

मइनका–कादो दोइन के देमू तले का लखे हामरे कर गुजार चली?

दुलाल– से कह!

मइनका–मुदा कादो–दोइन के, के लेइ? हामरे कर मुँड़ा–पहान मन ठीन एतना रूपियाय नी होइ। महतो–ओहदार मन तो लेबैं निहीं!

दुलाल– तोर कादो–दोइन कर उपजा के जे देइख–जाइन हे से नी लेइ?कोनो रोक– टोक के नी देखी। कहों से हल जोगाड़ कइर लेइ।

मइनका–अरे भाइ ई 71 दफा कर डरे अब केउ साउ–महतो लेके नी खोजैं।

दुलाल– का के नी लेबैं। 71 दफा आपन ठाँवे आहे। ई तो बेचइया कर नियत उपरे आहे। अगर केस नी करबैं हले का डर?

मइनका–मोएँ तो कोनो नी करमू। मुदा सदान मन तो डराए जा हैं। छव–सात झन कर तो डुबिए गेलक। किनलो गेलक, रूपियाव डुबलक।

दुलाल– अरे ई कह, दोसर मनक बहकाल में बेइमान होए गेलैं आउर 71 दफा कर केस कइर देलैं। बेचलो के पालैं, रूपियाव खालैं। उमन नियर चतुर आउर के भेलक?

मइनका–मोके ई सउब लटपट करेक नखे। मोके बेटी के डाकटरी पढ़ुवाएक आहे। बेचल चीज में का मोह? थूकमूँ सेके चाटमू निहीं, मोएँ केकरो बहकाल में नी चलमू।

दुलाल– उसन तो आउर मुड़ला बेल तरे?मुदा तोर कादो–दोइन कर लोभ, केउ रोके नी पारी, केउ हल?

मइनका–मोके कोनो असार नी दिसत हे। कतना झन 71 दफा कर केस लोवर कोट से हाईकोट तक लड़ते–लड़ते तबाह होए गेलैं। गोटे गाँव में बेचइया–किनइया दुश्मन होए गेलैं।

दुलाल– तोएँ तब एक काम कर। तोर सहियाय कर हाँथे बेइच दे। तोहरे दुइयो सहिया में तो बेसे पटेल।

मइनका–मोर सहियाव का के लेबैं? उकरो बेटा रासू कर नाँव डाकटरी में हामर मँइञा संगे निकइल हे। उके तो पाँच हजार रूपिया जोगाड़ करेक आहे।

दुलाल– कइला महतो बेटा के पढ़ाए ले पाँच हजार रूपिया निकलाइ कहिस? ऊ तोर नियर अदमी ना लागे कि पढ़ुवाएक में एतना खरचा करी। उके दोइन–डाँड़ किनेक कइह दे। दन से एखन गइन देइ। से हेके कइला महतो!

मइनका–हामर गाँव में मोर सहिया छोड़ाए के आउर केउ उसन लेवइयाव नी दिसत हैं।

दुलाल– ऊ तो तोहरे मनक बिसवास हेके। दुइयो में प्रेम आहे। आएक–जाएक, खाएक–पिएक लेक–देक चलते आहे। अछा मोएँ कइला से बात करमू।

मइनका–उसन कहत हिस। मोर सहियाय गुने एसों हर–फार करेक पाइर हों कि। मोर गोटेक बरद तो आगहें गरगटी में मइर जाए रहे। सहियाय कर मदइत से खेती होलक। केउ पहान मन थोरे मदइत करलैं।

दुलाल– का लखे काम–धाम दिने मदइत करतलैं। एक हर से अइधका केकरो ठिन रहतक हले जून। कइला महतो से बात मोएँ बनाए के रहमू। तोएँ फिकिर ना कर।

मइनका–देख तब तोहें पारबे। चाइर–पांच हजार कर जोगाड़ होए गेले हामरे कर मँइआव के देक ले होए जाइ आउर एक हर बेस बरदो ले लेमूँ। ई बूढ़ा बरद के हटामू।

दुलाल– हँ हो चल! तोर काम आइझ बनलक सोच। काउल चल कछइरी। गोटेक काचा पाटा इस्टाम्प कागज में लिखवाए देमू। बखत में काम आइ।

मइनका–नियत ठीक रहले सउब बेसे आहे नी तो लाख–लिख पइढ़ दे– 71 दफा कोनो के नी सुनी, ना देखी। देख तब, बेटी कर पढ़ाइ होका ना होए। तोरे आसरा तब।

दुलाल– चल, चल घर। तोर काम बनलक बुझ। चल हाँड़ी पियाव आइझ। (दुइयो जाएँन)

नजइर – दुइ
ठाँव–कछइरी
बेरा–कछइरी सुरू होएक बेरा।
(कचइरी कर गुल–गपड़ हाँक सुनाएल)

हाँक– मोसमात लगनी देवी हाजिर हो ऽऽऽ

मइनका–(मधु के देइख के) का बेटा तोएँ कछइरी में?

मधु– हँ बा! ऊ इनकम आउर कास्ट (जाति) परमान पत्र निकलाएक आए रही।

मइनका–केकर से?

मधु– निहीं बा! रासू दादा संगे आए हों। ओहो इनकम साटिकपिकिट बनुवाएक आ हे। एफीडेविट करूवाएक जा हे। (ठहइर के) तले मोर ले रूपिया जोगाड़ कइर देले बा?

मइनका–कइर देलों बा! ले! (डाँड़ा से सउब रूपिया के निकलाए के देल)

मधु– एतना–एतना रूपिया कहाँ पाले बा? (गिन के, ले के, बाकी के घुराए देल)

मइनका–ऊ....ऊ....ऊ....ऊ बेटा! कादो–दोइन के तोर सहिया बाप ठिन बेइच देलों। (डंड़ा में रूपिया के खोंसेल)

मधु– कादो दोइन के काले बेचले बा? कोनों डाँड़ के बेइच रहते। कतना में जे बेचले?

मइनका–दस हजार में बेटा! कादो दोइन गाए लेलैं कि?नि तो नी लागत रहैं। उकरे कागज पटा लिखुवाएक आए रही कछइरी।

मधु– सहिया अबा मनके तो हामरे मुँड़ा मनक ठाँव लेक नी जुन बनेल। कानून बनाल आहे। नी देखत हिस, गोटे गाँव कर सदान आउर मुंडा मन में दुश्मनी होए जा हे। उठेक–बइठेक तक बंद होए जा हे। तोएँ सहिया अबा के दुश्मन बनाएक खोजत हिस का?

मइनका–तोर सहिया अबा के का दुश्मन बनाबे कि मँइआ? ई तो घरे कर बात हेके। तोर ले रूपियाव तो जोगाड़ करेक रहे। एक हर बरदो लेक

आहे। कादो–दोइन नी बेचतों तो कोन उपाए करतों। तोएँ पढ़ नी बेटा! जतना पढ़े पारबे। जे खरचा लागी मोएँ पुरामू बेटा! (तनिक ठहइर के) रासू तो जमा करलक होइ?

मधु– का के रासू जमा करी? ऊ तो कांदत हे। बाप हार से माँगलक तो कहलैं कि दोइन किनत हों सेकर में सउब रूपिया लगाए दे हों।

मइनका–रासू नियर पढ़ेक बेटा में खरचा नी करबैं तो केकर में करबैं?तबे दुलाल कहत रहे– बाह रे! सुमकट अदमी। घरे रूपिया रहते नइठ देलैं।

मधु– दोइन किने ले रूपिया निकइल गेलक! बेटा के पढ़ाए ले नी निसकलक। रासू बतात रहे – बाप हार कहलैं कि बीसो हजार में इसन दोइन नी भेटाइ। एखन कमे में भेटात हे। आगे साल ले नाँव लिखाबे। छउवाए–पुता ले नी किन के राइख देत हों।

मइनका–बाह रे! सुमकट, आपन बेटाए में इसन?

मधु– रासू बताए रहे बा– मुँड़ा मनक दोइन किनेक नी बनी। तो बाप हार कहलैं कि चाइरो पाँच बछर कमाब हले मूर निकइल जाइ। मोएँ का जानत हों हामरेहें कर दोइन के किनत हैं सेके।

मइनका–तब तो बेचरंगा रासू के सुमकट सहिया डुबाए देलैं। राह तो मोएँ तोर सहिया बाप के खोइज आनतहों। (जाएल)

मधु– (रासू के आएक देइख के) बइन गेलक सटिफिकेट?

रासू– दुइयो झनक बइन गेलक।

मधु– मोर रूपिया तो जोगाड़ होए गेलक, तोर होलक?

रासू– मोर सुमकट बाप के दोइन ठुराएक से पइसा बाँची हल जुन। काउले आखरी दिन हेके नाँवों लिखाएक कर। कोनों उपाइयो नी सूझत हे। तोएँ नाँव लिखवाए ले चू। मोर असरा छोड़। (कंदकदू होए जाएल)

मइनका–(आते–आते सुइन लेल) का बेटा! तोके रुपिया नी भेटालक?तोर बापो के तो नी पालों। भेंट होए रहैं तोर से?

रासू– (आँइख से लोर ढरइक जाएल) हँ।

मधु– नी भेटालक रूपिया! काउले आखरी दिन हेके नाँव लिखाएक कर। (रासू लोर रोकेक ले नाक के खिंचेल)

मइनका–का ले काँदत हिस बेटा? तोएँ नी पढ़बे हले तोर बहिन मधु का लखे पढ़ी बेटा? (डँड़ा से रुपिया निकलाए के देल) ले जा। दुइयो जाए के नाँव लिखाए लेबा। पढ़ल–लिखल बिदिया के केउ नी लुटी। (रासू कर हाथ में जबरइ धराए देल)

रासू– रहे दे सहिया– आबा। मोएँ आगे साल नाँव लिखामू।

मइनका–आगे साल पढ़ी! मोएँ तोर बाप ना लागों? (दुइयो छउवा के पोटराए के ले जाएल) बेटी! रासू के ले जा आउर काउल दुइयो जाए के नाँव लिखाइए लेबा। जावा बेस तइर पइढ़ लिख के गाँव कर डाकटर बइन के आबा। (संगे जाएँन)

कइला– (उमन के देइख के आएल आउर देइख–सुइन लेल) मोएँ तोर बाप ना लागों रासू। तोर दुश्मन हेकों। तोर बाप तो सहिया बाप हेकैं ई करिया अछर भँइस बराबइर। (पाटा कागज के देइख के फारेल) ना पाटा कागज रही ना कादो दोइन रही। (फारल के फेइक देल)

साहेब कर सपना

नटकरवा–

चइतू– अधेर ले कान में कनउसी, करया पिंधल।

फगनी– मोट सारी में, कनतरिया खोंसा।

जेठा– पढ़ल–लिखल लखे छोंड़ा पेंट–कमीज में।

लेठा– आठ–दस साल कर छोंड़ा, ठेठमुंगरे, पेंट भइर पींधले।

बेरा– बियारी करेक पहर।

ठाँव– चइतू कर घर। एके घर में मुरगी, छगरी, चीज वसुत।

(नागपुरी धुन कर संगे एकांकी कर ओर)

चइतू– (घर आएल) दे जेठा कर आयो, तनिक निसकाव तो एक–दुइ डुभा। (आपन घाना, कुटासी, छेनी मन के राखेल)

फगनी– मुँहों हाँथ तो धोवाए लेउ। आतेहें–आते एतइ खसताए जात ही। (पानी देल–सिलवइर लोटा में)

चइतू– दिन भइर पखल फोरते–फोरते हाँथ टटाए जाएल, डँड़ा टिडुवाए जाएल। आँइख कान में छिटकल पखना मन ढुइक जाएल। पखना फोरेक एतना अलगठे काम हेके? (लोटा लेले जाएल, मुँह, हाथ–गोड़ धोवाए के पिरहा में बइसेल)

फगनी– थाइक ही तो गोड़ हाँथ के जाँइत देमू। (मुँह आनते कइर के हाँड़ी चिपेल)

चइतू– गोड़–हाँथ के जाँतले भइर का होइ?गोटे गतर सार बुझाए कि टुइट के खाँड़ा–खाँड़ा होए जा हे।

फगनी– (हाँड़ी के ढारेल) पियब होल खाँड़ा गतर गोटा होए जाइ नि?

चइतू– दे, तोके का बुझाए! कहियो पी रहतले हले जुन जानतले इकर का गुन आहे सेके!

फगनी– नखे मोके इकर गुन जानेक।

चइतू– एक धँव पी लेबे नि जेठा कर आयो तो बुझाइ कि दिन भइर कर उब थकान कने चइल गेलक, सेकर पताव नी लागी। (पिएल) थकवासी तो बुझबे एकबारगिए मेइट जाएल।

फगनी– इकरे पीले थकवासी मेटी?

चइतू– इके तोएँ नरम–धरम बुझिस? इखें पी के देव–पितर तक खुस होए जाएँन। तपान का ले ढारिस, ओइ?

फगनी– (एक डुभा आउर ढाइर के देल) सेहे तपान के तो पी के देव–पितर रउरे उपर सवार होए जाएँन, नि? आउर बगरा जोर निसकेल–छउवा मन उपरे, मोर उपरे।

चइतू– (पी के दोसर डुभा माँगेल) इसन का ले कहिस जेठा कर आयो। मोएँ कहियो तोके छुइयो हों, ई निमरते, एको दिन?

फगनी– (डुभा के भरेल) निहीं मोके का छुवब ? बेगर छूले जुन गोटे गतर कर हाड़–मांस सीझ–सीझ जा हे। छउवा मनक कान। कपार फूइट जाए हे।

चइतू– (हाँड़ी कर असर होएल आउर मांगेल, फगनी नी देक खोजेल तो फगनी के दुलराएक नियर करेल) ई कोनो बेकार चीज ना लागे जेठा कर आयो! सुपट अमरीत हेके, अमरीत! ले नि पी के देख तो! सउब दुनियाँ कर झंझट, जिनगी कर दुख–तफलीक भाइग जाइ। (पियाएक खोजेल)

फगनी– फरके राखू! मोर मुँह कर आउगे ना करब नी तो मोएँ एखन थूकइड़ देमू, तले पियत रहब जोर से। एखन बड़ा सोगाएक लाइग ही। मोके तो इकर गमको नी सहाए।

चइतू– मोखों जेठा कर आयो इकर धमक नी सहाए। मुदा का करबे थकवासी मेटाएक ले जुन तनि–मनि पी लेओन। दे एक धँव आउर। (डुभा आगे करेल)

फगनी– घरे खाएक ले खुदी निहीं आउर पीए ले तो रोज कोसना उठावा। झगरा कर डरे उठाए देओन नी तो घसतहों हाँड़ी उठाएक?

चइतू– दे जेठा कर आयो बात के ना घुराव! कोनो तइर जिनगी चलत हे।

फगनी– कतना कचिया लाइन ही?साल भइर ले एके गो साड़ी के रगदत हों। फाइट के छेछरा होए जा हे। लजलजा एकन रहेक होएल। (हाँड़ी के अनते करेल) आब ओतने नी तो बेसी होए गेले मोखें कचकच होइ।

चइतू– दिन भइर में तो अपाय मसकिल से सव गो पखल फोरिल। तब जाए के बारह गो रूपिया भेटाएल। सेकरे में छव माँय–छउवा के पोसेक! तले चली का लखे? अछा दे एखन भइर। (डुभा के आगे करेल)

फगनी– (फिन ढारेल) हामरे के बारो गो रूपिया देन आउर ठीकेदार मन सवा सव सेकड़ा बेचेन। तब तो हामरेहें भोको हेकी, ओहे मन चलाँक। मेहनइत हामरे करब आउर नफा ठीकेदार मन लेबैं।

चइतू– देख जेठा कर आयो। जे बात के नी बुझिस सेके ना गोठियाबे। ठीकेदार मन खदान के ठीका लेन हुआँ रूपिया जमा करेन। तले, रेजा–कुली, डाइभर–खलासी मन के देन। ओहो मन ठिन का कचिया बाचत होइ?

फगनी– सेहे ले ठीकेदार मन पखने कर बंगला साले–साल जोरले चघात हैं आउर हामरे ओहे सुवइर गुँड़ा लखे घर में सेयान होलेहें बिगुर बुढ़ियाए जात ही।

चइतू– ई सउब आपन–आपन भाइग हेके जेठा कर आयो! नि तो मोहों आपन परिया कर तीसरा पास हेकों। मोर आबा कर जोड़ियार मन साते कलास पास कइर के दरोगा बइन जात रहैं। हामरे.........

फगनी– से तो रउरे सिपाहियो नी बनली? जहिया ले रउर घर आ हों से दिन ले ओहे उठ बिहाने भाथी खीचेक, घाना चलाएक, पखल बोहेक।

चइतू– हामरे बारो भाई रही एके माँय कर। उकरे में घर जोरेक पाइर रही कि? थोरे–मोरे ठाँवों ठेकान कइर रही। कोड़कर दोइन बनाए रही।

फगनी– सेखों तो एहे नियर पीके में निमराए सिरात ही। कोनो नोकरी–चाकरी कइर रहती तो नी बनतक?

चइतू– गोटेक गोरा साहेब रहे। ऊ मोर से डबल खुस। मोके कहत रहे– 'टुमको हाम सिपाही में लेजेगा'। जानले तो मोएँ का कइह रहों?हाम राजा है। गोटे गाँव हामके गुरु कहता है!गुरु!गुरु! धांगर खटेगा! नइ साहेब नइ'(हाँसेल)।

फगनी– सेहो खन पी रहली होइ, तबे नी एंगरेजी बतियाए लागली। से खन सिपाही में रहती हले एखन पेनसन नी भेटातक?छउवा–पुता मन इस्कूल नी पढ़तैं। नोकरी नी करतैं। बाबू नियर नी रहतैं।

चइतू– हामर छउवा मन इस्कूल पइढ़के कोन पहार के फोरतैं ओइ?ई ढेलफेका इस्कूल ने पइढ़ के कोन हार हामरे कर गाँव में बाबू बइन हे?एको गो केउ हाकिम बइन आहैं? जेठा कर आयो, हाकिम बनेक ले, बाबू बनेक ले, अंगरेजी पढ़ेक होएल।

फगनी– हामरोहों कर छउआ मन एंगरेजी पढ़तैं।

चइतू– कोन इस्कूल में?ई गाँव कर ढेलफेका धसल इस्कूल में?

फगनी– सहर कर एंगरेजी इस्कूल में।

चइतू– हुआँ कर फीस रूपिया पुराएक पारबे। छव–छव झनक? तोएँ निपट गँवार हिस जेठा कर आयो। तोएँ देइख के नी बुझत हिस। जेठा के............

फगनी– मोएँ तो नी बुझमूँ। रउरे तो एंगरेजी बुझिल?

चइतू– मोके का सोइच ले हिस जेठा कर आयो? मोएँ एंगरेजी राइज बेरा कर एंगरेजी पढ़ल हेको। ह्वाट इज दिस, चिंगड़ी फीस, काली मुरगी अंडा दिस?

फगनी– अब चढ़त हे तो एंगरेजी बतियाएक लागली।

चइतू– हाकिम मनक, साहेब मनक छउवा मन एंगरेजी इस्कूल में पढ़ेन तब हाकिम बनेन कि?हामर गाँव कर धँसल इस्कूल में के छउवा के पढ़े भेजी? ऊ तो हुवें छउवा सेथी जताएँ मोरी। छउवा मोरेक ले जाइ सेकर सिया घरे रइह के घरक काम नी करी?

फगनी– पढ़बे नी घरी तो घरे जुन कमाइ। पढ़ी हले जुन कहों कमाइ खाइ।

चइतू– देख जेठा कर आयो। ई इस्कूल में मोर छउवा मन पढ़े नी जाबैं। हिंञा कोनों एंगरेजी तो पढ़ाइ नी होएल। जे हिंञा पइढ़ के साहेब बनी। हिंञा पइढ़ के निकलेक आवला मन बनबैं कोनों साहेब कर धांगर, कोनों हाकिम कर भात–रिंधुवा। देख घरेहें देख, जेठा के...... कने गेलैं लेठामन।

लेठा– (आएल) ए बा! काउल ले मोहों इस्कुल जामू।

फगनी– हँ बा! काउल ले तोहों जाबे।

चइतू– हाँ बा! काउल ले तोहों इस्कूल जाबे! (ताना मारेक तइर कहेल) का

कहले तोहों इस्कूल जाबे?इस्कूल जाए के का नेहलाबे रे?तले गरू–छगरी मन के, के चराइ रे?हर–फार के करी रे, ओइ?तोर आबा?

लेठा– भाग!मोएँ नी चराइ गरू–छगरी के।मोएँ इस्कूले जामूँ।

चइतू– काले नी जाबे चराएक रे, ओइ?तोके मोएँ बइसले पोसमूँ?

लेठा– भाग! मोएँ चराए जाबे नी घरमू तो। तनि सुन छगरी चरकू कर बारी में ढुकलक तो दुइ–तीन सोटी माइर देलक। घरे खाए ले एक खेंचा रोटी नी भेटाइ आउर बाहरे सेथी सोटी कर माइर खाए ले जामूँ। मोएँ नी जामू।

चइतू– नी जाबे तो खाबे लुवाठ के! इस्कूले घर तोके खाएक पुराइ?

लेठा– इस्कूल घरे रोज एक थारी खिचरी भेटाएल यो। मोएँ काउल ले इस्कूले जामू। एक साँझ तो पेट भइर खाएक मिली।

फगनी– हँ बा, जाबे। पइढ़–लिख रही तो कहों कमाइयो खाइ।

चइतू– तोहरे दुइयो माँय–बेटा गुटू कइर ले हा का?एहे मइधका में जेठा के घर ले बाहर कइर देला। सात–आठ बछर ले आपन सुरइत नी देखा हे। जा हे साहेब बनेक! भात रांधेक में साहेब बनी!

फगनी– केकरो आसरा तो खाए ले नी नि करत हे। आपन कमात हे, खात हे।

चइतू– हिंञा रहतक हले तनि–मनि हर–फार होतक कि निहीं?ई गोटेक ढिलंगटंगा जाइ इसकूल पढ़ेक। पइढ़ के नेहलाइए देइ। पढ़ले कमाइ होएल कि खरचा रे?पढ़ेक कर खरचा के पुराइ रे? हिंञा घर चलाएक मसकिल, ई जाइ पढ़नी–पढ़े!

लेठा– मोएँ जाबे घरमू पढ़ेक तो। का करबे?

चइतू– तोएँ जाबे घरबे। मोर बात के नी सुनबे?कान धइर के निकलाए देमू घिसटाए के, का सोचिस?

लेठा– मोएँ जामू।

चइतू– तोएँ निहिए मानबे। (उइठ के कान धरेल आउर तड़ातड़ थपड़ उपरे थपड़ मारेल) पढ़े जाइ। पइढ़ के बड़का साहेब बइन जाइ। (आयो

हार कुइद आएल आउर मारेक से बचाएल)

फगनी— छउवा के इसन काले मारत ही। कोन इसन दोस गुनाह कइर देलक, ओइ?

चइतू— पढ़ेक जाइ! साहेब बनी! साहेब बनेक ले साहेब घरे जनमेक होएल रे चंडाल, बुझले! लोहरा गुरु घरे जनम पाए के साहेब कर सपना देखबे?मोर बात के नी मानबे?

लेठा— कतनो मारबे हलहों मोएँ इस्कूले जामू।

चइतू— इस्कूले जाबे? (कान एँइठ के तड़ातड़ फिन मारेल, फगनी बचाएक खोजेल, चइतू उखों मुटका—लाइथ से मारेल) साहेब कर सपना तोर नी उतइर हे। आउर इस्कूल जाएक कर नाँव लेबे? हले चंडाल जान ले लेमू। साहेब कर सपना देखत हे। एहे बुइध में जेठा कने जाए मोरलक। एहो ओहे डहर के धरत हे। (आउर हाँथ उठाएल, फगनी हाथ के धइर लेल)

फगनी— छउवा के ना मारू। मारेक आहे तो मोके मारू। एहे ले पिइल! एहे मारेक—पिटेक नी बने! पीले हले नजइर तोपाए जाएल। ना छउवा—पुता के चिन्हबैं ना जनी के!

चइतू— जे घर के नी जानी! माँय—बाप के नी मानी से तो पाबे करी। ई लेठाव के जेठा निअर बनाएक खोजत हिस? एहो घर—दुरा, माँय—बाप के छोइड़ के भाइग जाओक केकरो भात रांधेक। एहे खोजत हिस?जेठा नियर एहो आउर ना घुइर आओक?

फगनी— काले जेठा घुइर आइ?रउरे कर माइर आउर गाइर खाएक ले नि?

चइतू— जेठा कर नाँव ना लेबे। उकर मोएँ सूरइत......

जेठा— (आएल, आपन बकसा आउर डिसना के मड़ाएल माँय—बाप के गोड़ लागेल) का होत हा यो?ओए बा?का होएक लाइग हा? (लेठा के धइर के) का बुचू का ले कांदत हिस रे? (जेठा के देइख के चइतू कर निसा उतइर जाएल)

फगनी— कने कर राजा मोरलक रे बेटा! जे आइझ गाए सूरइत देखात हिस। ना चिठी ना पाती कहाँ से आवत हिस बेटा? कइसन आहिस?

जेठा– दिल्ली से आवत हों यो। नगदे नगद आहों। तोहरे मन जे?

चइतू– दिल्ली से! एतना जबर बकसा आउर डिसना तोरे हेके बेटा? तोएँ तो साहेब बइन गेले रे! हामरे के इयाइदो नि करले?

जेठा– सेखन मोएँ कामे नी धइर रहों। आब तो धरलों, किरानी कर।

चइतू– तोएँ किरानी बइन गेले?हामर गाँव में तो केउ चपरासियो नी बइन हैं बापधन। तोएँ का लखे बइन गेले बेटा?

जेठा– (छोट भाइ लेठा के पोटराए के) जे मोर गोमके साहेब रहैं नि, ऊ मोके अजगुत मानत रहैं। मोके राइत –इस्कूल में नामों लिखाए देलैं। मोएँ मेटरिक पास कइर लेलों। तले मोके आपन ओफिस में किरानी कर नोकरी देउवाए देलैं। मोएँ एखन 500 रूपिया महिना कमात हों।

फगनी– तोएँ हुआँ जाए के पढ़े लागले! हिंञा रहते हले नी पढ़ते!

चइतू– आउर पाँच सव कर नोकरियो करत हिस?अलबत बेटा! तोएँ मोर नजइर खोइल देले बापधन। एखन मोएँ तोरे नाँव लेइ के लेठा के झूठो माइर देलों (कंद–कंदू होएल जनी आउर लेठा कर आगे हाँथ जोरेल) मोके जे चाहे से सजा देवा, आइझ जेठा मोर अकिल के उघराए देलक। लेठा काइल ले तोएँ जरूर से इस्कूल जाबे। मोएँ निसा में रहों बा, नी बुझेक पारलों। तोके निसाए चलते माइर देलों (हाँथ के भीत में बजरेल) आइझ ले मोएँ आउर कहियो हाँड़ी–दारू नी पीमू बापधन। काउल ले लेठा इस्कूल जाइ। जरूर जाइ।

जेठा– का ले नी जाइ?जरूर जाइ। पढ़ी–लिखी हले जुन अकिल बुधि होइ। दुनिया के जानी। अदमी बनी। नि तो अदमी होए के पसु नियर जिनगी बिताइ। जे मनुख जनम पाए के नी पढ़लक–लिखलक सेकर जिनगी तो अकारथ गेलक।

चइतू– जेठा कर आयो, लेठा एक दिन जरूर साहेब कर सपना पूरा करी। मोएँ बूढ़ा अदमी एहे आसिरबाद देत हों।

(नागपुरी धुनकर संगे एकांकी कर निमरेक)

हाजत

नटकरवा– रुदरा सिंग, बुधवा आउर सिपाही।

बेरा– सांझकर अंधरिया होएक पहर।

नजइर एक

रुदरा– कोड़ी ढेलपासा मन के राखले रे?

बुधवा– राखलों।

रुदरा– ले तो रे, तामकू के बनाव।

बुधवा– (झोकेल आउर बनाए लागेल)

रुदरा– गोटे कियारी कोइड़–कुड़ाए के ढेला पाइस के धुरधुरा कइर देले?

बुधवा– हँ गोमके, आउर घास बिछ के पाटाव माइर दे हों।

रुदरा– तोर गोमकाइन भूती देलक रे?

बुधवा– निहीं गोमके, खाली एक टोकना–डुभा बेस सुरस रसी के भइर ढाइर के देलैं। (तामकू बनाए के रुदरा के देल)

रुदरा– कचिया नी देलक?

बुधवा– निहीं गोमके। रउरहे से गोमकाइन मांगे कहलैं।

रुदरा– ले तब! (डंडा से निसकाए के देल)

बुधवा– तीने रुपिया गोमके।

रुदरा– आउर कतइ पाबे रे?धधाए गेला का रे?

बुधवा– का नियर धधाब कि गोमके। दस रुपिया देब कइह के बोलाए लेहा हार एखन तो तीने गो रुपिया देत हा?

रुदरा– काम धरले से खन एक सिलवइर छिपी पीले की नइ रे हाँड़ी?

बुधवा– पी रहों गोमके। झूठ का ले कहमू कि?

रुदरा– अढ़बेरिया के फिन एक लोटा हाँड़ी पीले, पीले कि नइ?

बुधवा– खाल–पीयल में का लखे कि खाए निंदा होमू।

रुदरा– सांझ के फिन तोर गोमकाइन एक टोकना हँड़ी पियालक?

बुधवा– गोमकाइन कहलैं कि इके निमराइए राख एक टोकना आउर पियाइ देमू। सेखन पियालक जून तब गोमके। पी हों सेके का तइर मुँह पोइछ के पाछे दने पोछमू कि?

रुदरा– भठी घरे पिएक जाइस तो एक बोतोल कर कतइ लेल?

बुधवा– कतइ लेइ कि गोमके, ओहे दुइ रूपिया कर लाले लोट जुन लेल।

रुदरा– तोएँ दिन भइर में एक छिपी, एक लोटा आउर एक टोकना डुभा हँड़ी पीले? सउब जमा–समा तोएँ चाइर बोतोल पीले। पीले कि नइ?

बुधवा– ओतना ले तो बगराए पीलों होइ गोमके।

रुदरा– हँ! मुरूख समझदार आहिस। जानिस कि नइ, हँड़ियो उठाएक ले चाउर लागेल, रानू लागेल, कोसना सीझाएक ले काठी लागेल, मेहनइत लागेल तब जाए के हँड़ी सीझेल कि?

बुधवा– बेगर मेहनइत कर कोनवे जुन नी होइ। एक गो सूदे भइर जुन बेगर मेहनइत कर बाढ़ेल।

रुदरा– तो तोरो सूद बाढ़लक। चाइर बोतोल कर दाम भेलक आठ रूपिया। उपरे से तीन पुड़िया बूढ़ा छपा बेस आवला तामकू खाले, खाले कि नी खाले?

बुधवा– खियाबे–पियाबे तो खामू–पीमू जुन तब।

रुदरा– तोएँ सेथी कमाए देबे?कि सेथी केखों खियाए देबे?

बुधवा– सेथी का ले केउ सवांग लगाइ?कमाएके–खाएक ले जुन केउ हार काम करेल।

रुदरा– तो मोहों सेथी तोर उपरे खरचा नी कइर हों। हँडी तामकू लगाए के आठ रूपिया बारोह आना होलक। मुदा तोएँ बियारी तक ले कमाले से ले एक रुपिया बारोह आना कर ठाँवे तीन रुपिया देतहों।

बुधवा– मोर आयो–आबा बुधवा नाम धइर आहैं तो का मोएँ बुधवे होए गेलों?

रुदरा– निहीं, बुधवा नइ कालिदास पंडित होए गेले।

बुधवा– दस रुपिया करार कइर के लाइन ले हिस आउर उलट–पलट हिसाब लगाए देत हिस। दे, मोएँ तोर हिसाब के नी जानो। दस ठो दे मोके।

रूदरा– दस रूपिया? तोर निसा चइघ गेलक का रे?

बुधवा– एखन तो नझो चधे निसा। निसा चघले तो बेगर दस रूपिया कर मोएँ टसकबे नी घरमूँ तो।

रुदरा– आउर दारू पीबे?

बुधवा– दे तब। आइझ पिए लेमू। मोर छउवा–पुता कर तो पेटे नखे, जनी कर मुँहे नखे। उमनके खाएक–पिएक से का सरोकार।

रुदरा– (लाइन देत हों बोतोल आउर चखना आउर जाएल)

बुधवा– राह तब, आइझ मोहों हेकों। बेगर निसा कर तो हाँथे नी ओरियाए होएल। रोज–रोज खियाए–पियाए के दाम काटेक हेवाइ जा हे। आइझ तोएँ रहबे चाहे मोएँ।

रुदरा– (एक बोतोल दारू आउर चखना लानेल) ले रे बुधवा। ले रे चघाए ले रे।

बुधवा– (झोकेल, एक फाँक चखना फाँकेल। दारु कर बोतल के मुँह में लगाए के गटगटाए के टोंइड़ लेल आउर एक टक रुदरा बटे देखेल)

रुदरा– का रे बुधवा आउर पीबे रे? मुँहो में नी जनालक होइ नि?

बुधवा– (हाथ कर लुलहुवा से मुँह पोछाएल) पिएगा गोमके। मुदा तोर पइसा से आब नइ पिएगा। मोर पइसा से पिएगा। मोर दस रूपिया भूती दे।

रुदरा– आब तो एक ठो रूपिया तोर बाचत हे– ले।

बुधवा– हाम एक रूपिया काले लेगा? एक रूपिया तो आइझ काइल भीखमंगवा नइ लेता है। तोएँ मोर कमाल भूती देगा कि नइ?

रुदरा– एक रुपिया देगा।

बुधवा– एक रुपिया! थू? तोहरे मन मोर बाप–दादा कर दोइन डाँड़ के एहे नियर पियाएक में किन लिया। आब मोएँ टुटपुंजिया होए गिया तो

मोर सवांग के सेथी पियाए—पियाए के किनेक खोजता है।

रुदरा— पिएक में सवाद लागेल। धरेक हउ तो धर एक रुपिया, नि तो जा।

बुधवा— मोएँ एक रूपिया कर काम करा है— बिहान से बियारी तक ले। नइ मोर दस रुपिया भूती होता है। देगा कि नइ दस रुपिया।

रुदरा— एक रुपिया से एक कचिया बगरा नी भेटातउ।

बुधवा— नी भेटाइ। निहीए देगा। ले तब (जोर से एक थप्पर रुदरा के मारेल आउर पियल चलते रुदरा के लेले देले गिर जाएल आउर रुमसाम कान न कपार मारे लागेल। एतने में गोटेक सिपाही आएल। बुधवा के धइर के उठाएल)

रुदरा— साला पी—खा के, मार—पीट करता है!

सिपाही—का होवतऽ हो?

रुदरा— देखिए सिपाही जी दारू पी के मेरे ऊपर झपट पड़ा।

सिपाही—का करऽ तड़ा हो। चलऽ तोहरा के हाजत में सब सुझ जाइ।

बुधवा— हमरा पइसा काहे नइ देता है तब?

सिपाही—चलऽ सभे पइसा तोहरा के हाजत में मिल जाइ। चलऽ (सिपाही बुधवा के धइर के ले जाएल)

रुदरा— साला काइल छठियारी कर बाँचल हाँड़ी के पियाए देलों तो नबाबी करत हे। देबो घरा, पियाबो घरा, उपरे से माइरो खावा। साला मोरे उपर शेर होत हे। काइल सिपाही के पियाए रहों से कामे देलक। जा, आब मामा घरे जोर देखाबे। (जाएल)

बनचोर

नटकरवा

बिसू–	(बनवासी) झिरगी– बिसू बोहोरिया। ठीकेदार। नेता। बनगोमके बन सरदार। दुइयो छोंड़ा (गाँव कर)
ठाँव–	बन एकाइर। समय– सांझ कर बेरा। इंजत से पीयर, पीयर से लाल, लाल से अंधार होएक बेरा।
धुन–	सुनसान बन कर सांझ बेरा कर धुन। चरइ मनक चेरबेराएक धुन संगे नाटक कर ओर।
ठीकेदार–	ए रे बीसू! कने मइर गेले रे!
बिसू–	एहे ठीन आहों हजुर। पानी भरत हों। (पानी भार बोहले आएल तले मड़ाएल)
ठीकेदार–	तोएँ पानिये भरत रहबे कि दरी–गदा मन के डिसाबे?
बिसू–	डिसातहों हजुर? (दरी के झारेक, डिसाएक, गदा के डिसाएक, चाइरो दने कुइद–कुइद के हाथ से थपियाय–थपियाय के कोकरल के सोझ करेक, तकिया मन के मड़ाएक, उके थोपियाएक) डिसालों हजुर!
ठीकेदार–	खाना–पीना सउब बइन गेलक?
बिसू–	बस एक कटिक देरी आहे हजुर। उतराएक भइर।
ठीकेदार–	एखन ले खानाए–पीनाए बनत रही रे? हाकिम मनक आएक बेरा होए गेलक। (जीप गाड़ी कर आएक सुनाएल)
बिसू–	आलैं हजुर! आए गेलैं। जीप गाड़ी आएक सुनात हे।
ठीकेदार–	जा झटपट बाती मन के बाइर के उसकाए रहबे। जइसने अंधार होइ गेस बाती के एहे ठीन भेजुवाए देबे।
बिसू–	जइसन हुकुम हजुर।
ठीकेदार–	का का बनलक रे?
बिसू–	पँड़की आउर तितिर कर भुंजल चखना, लंभा कर कबाब, हरिन

कर चढ़चढ़ी, बन सुअइर कर लटपटी, बन मुरगा कर झोर।

ठीकेदार– बस –बस जा तेयार कर चटपट जइसने मांगते जाब उसने भेजुवाते जाबे। आउर सुन तोएँ मइत आबे। तोर बोहोरिया के भेजबे! बुझले?जनाना मन कर पोरसल जोगाएल।

बिसू– मंगरू माँय भइर का नियर एकले चटपट लानी? मोहों सँघराए देमू! आउर मंगरू माँय तो गँवारियों नी बुझे। मुँड़ारी भइर........।

ठीकेदार– तब ठीक आहे। तोएँ एकदम ना आबे। तोर बोहोरिया भइर के भेजबे।•(गोटेक टरक आएक सुनाएल)

बिसू– टरक आवतहे हजुर।

ठीकेदार– हाँ, जा जा, तोर बोहोरिया के बेस तइर समझाए देबे? (आउर गोटेक टरक आएक सुनाएल) देख दुइयो टरक आवत हे, हाकिम मन आए गेलैं। आउर सुन, हाकिम मन के बेस तइर माइन–मरजाद करेक आहे। जा जा चटपट देख। मोएँ उमन के लानेक जात हों। (जाएल)

झिरगी– (आएल) देखू, मोएँ बाँटेक–छाँटेक नी लागमू।

बिसू– का लखे करों?बाहना तो माइर ताइख रहों कि बोली नी बुझेल। मुँड़ारी भइर बोलेल।

झिरगी– देखू मोएँ एके बात कइह देत हों। मोएँ चुल्हा जगन देइख–ताइख देमूँ, हेइर देमू। रउरे पोरइस देब। नी तो मोएँ बदइक देमू कइह देत हों आगे।

बिसू– ई लाइठ साहेब मन दारू पी–खाए के सहइक जाबैं। सेहे ले तो मोएँ इसन काम के नी पतियात रहों। मुदा का कहबे?

झिरगी– मंगरू कर जीवक दुखे चइल आलों नी तो मोएँ तो ई ज आए देतलों!

बिसू– सेहे ले तो आएक पइड़ गेलक? हाकिम मन के कहतली तो मँगरू के कोनो बेस बड़ डाकटर के देखाए पारतली?जड़ी–बुटी झार, फूक करते तो थाइक गेली।

झिरगी– देखू बेराम छउवा के छोइड़ आ हों। ऐहे तो बड़ संधे गोटेक

बाँइच हे। बगरा राइत करबैं तो मोएँ नी रहमू ई ज।

बिसू– का जाइन ई सहकल बाबू मन कतइ देरी करबैं। पियल–खाल बादे कोनो बुझाइ इमन के! का करबैं, का धरबैं सेके?

झिरगी– देखू मोएँ बेसी राइत ले नी लागमूँ।

बिसू– अछा! देख, का करत हैं ई बाबू भइया मन! का के तो फँसाब कहत रहैं। आउर सुन तोएँ कोनो ना गोठियाबे, बोलबे ना घरबे। बोलबो घरबे तो मुँड़ारी में गोठियाबे? आउर मने मन सउब के सुनत रहबे--का का बतियाएँन सेके।

झिरगी– आउर कोनो होइ हल? मोएँ नी लागों, मरद मनक माझे जनी कर झलर–मलर होएक।

बिसू– जा नी कोनो होइ सेकर इंतजाम मोएँ कइर ले हों। डिबनी कर डोरा के लेते आइन हों। (झिरगी जाएल)

ठीकेदार– (आएल) हाँ सउब ठीक आहे नि! जा तोर बोहोरिया के भेइज देबे। हाकिम मन आए गेलैं। जा। जइसन कइह हों, उसनेहें समझाए देबे। (बिसू जाएल)

ठीकेदार– आवल जाए मालिक। (नेता, बनगोमके, बन सरदार मन आएँन)

बन गोमके– वाह! ई बन माझे इसन सुंदर शानदार तेयारी!

नेता– ई सउब अपने कर मेहरबानी मालिक।

बन सरदार– अपने कर परताप रही नि मालिक तो हिआँ का नी मिली? ई बन हीरा हेके मालिक हीरा। नी देखत हैं बन से का नियर पीयर–पीयर रँफ चमकत निकलतहे। (बेइर कर पीयर रँफ बन से छकाए के डिसना में पड़त हे, संगे सांझ कर धुन)

ठीकेदार– बइठल जाए मालिक। बस, सब तेयारे--तेयार आहे। बेसी देरी नी करब।

नेता– राइत तो आपन हेके। राइत कर का फिकिर! गन आहे, बन्दूक आहे, अदमी आहैं। कोन चीज कर डर!

बन सरदार– मालिक कर रहते डर। मालिक कर हुकुम होए तो एक तनिक में गोटे बन कर सखुआ, मालिक कर गोड़ में गिरे लागी।

ठीकेदार– (हँकाएल) बिसू! भेजुवाव तब पानी मन रे! (जाए के आएल संगे गगरी के खँखियाए के झिरगी पानी लानेल सेकर टकालटोकोल बाजेल)

ठीकेदार– हाँथ मुँह धोवाल जाए मालिक। (सउब उइठ के मुँह हाथ धोवाएँन। झिरगी पानी गराएल। डिसना में सउब बइसएँन) जा ले आनबे?

झिरगी– चिना (क्या?) (मुंडारी में)।

ठीकेदार– अरकी बोतोल को। (दारू कर बोतल मन के)

बन सरदार– इमन के भेज ई ठीन ले। हामरे आपन से कइर–धइर लेब। इमन के का राइत के झूठो तकलीफ देब!

ठीकेदार– ई नी बुझेल। मुँडारी भइर जानेल। इकर रहले कोनो नी बगड़ी।

बन सरदार– तब तो बनी। अछा तब तो नगदे आहे। चली।

झिरगी– (दारू कर तीन चाइर बरन बोतोल लाइन के राइख के जाएल। फिन दू गो खाला चाइर गो पतरी लाइन के देल)।

ठीकेदार– चखना दो? (चखना लानले?)

झिरगी– (देखाएके) नेञ् दो (ई का!)

ठीकेदार– ई पँड़की आउर तितिर कर चखना मालिक?

बन सरदार– बन देवी कर सउब से नगद परसादी एहे हेके मालिक।

ठीकेदार– गिलास आगुइम! (गिलास लान।)

झिरगी– (गिलास लाइन के देल)

बन सरदार– ढाइर के दे हाकिम मन के– हाथ से।

झिरगी– (मुड़ गाइड़ रहेल)

ठीकेदार– ढाइर के दे, पियाव सउब के। (ढारेल आपनेहें)

बन सरदार– (हाथ से चखना बटे इसारा कइर के) इके पतरी में

हेर, बाँट।

झिरगी– (चुपे मुँड़ गाड़ल रहेल)

ठीकेदार– चखना हाटिंग में। (चखना के बाँट)

झिरगी– (दुइयो खाला से चखना के निकलाए के पतरी में देल)

नेता– दगे तब मालिक चियर्स। (गिलास उठाए के सउब सटाएँन आउर जोहाइर कइर के पीएँन। चखना के चटखाएँन)

ठीकेदार– आउर दोसर–दोसर चखना मन के लानते जाबे। ओड़ो एटा एटा चखना को आगुवेम– (चखना खाएँन, दारू पी, जीभ मन के चटखाएँन, आह! आह! करते जाएँन)

बन गोमके– एहे बनाहे! बाह! बहुते नगद बनाएल। का नाम हेके?

बन सरदार– एइ का नाम हेके तोर? (झिरगी चुप–मुँड़ गाड़ल) ओह! ई तो बुझबे नी घरे!

ठीकेदार– झिरगी मालिक! बहुते बेस बनाएल कहेन, सेहे ले तो इखें बोलाए लाइन ही।

नेता– बन पंछी कर शिकार! आउर बन हिरनी कर बनाल, कइसे सवाद नी लागी!

ठीकेदार– (झिरगी खाला में लाइन के देल) ई रहलक लँभा कर कबाब आउर ई रहलक हरिन कर लटपटी।

बन सरदार– ई बन माझे आउर दोसर का सवाद लागी मालिक?

बन गोमके– बाह! ई तो सुपट बन–भोज होए गेलक।

नेता– घर में अदमी कतनों बेस खाए मुदा बन–भोज कर सवादिए के दोसर कोनो नी पोहँचाए।

बन सरदार– इसन ताजा मारल बन सिकार जबर–जबर होटलों में नी भेटाए मालिक। ई सउब आपने कर किरपा हेके मालिक, कि सउब बरन धराए गेलक।

नेता– बन गोमके रहबैं तो का नियर नी धराबैं कि?बन कर एकेक चीज मालिक के चिन्हेल। (पीएक–खाएक चलते आहे। झिरगी आउर दोना मन में लानेल, राखेल–बाँटेल)

बन सरदार— का नाम बताए रहिस, झिंगी। बाह! बहुते सुंदर नाँव आहे। इकर नाँव से गोटे ई बन राइज में गोटेक गीत आहे मालिक (गाएक लागेल) "बेइर डुबी गेल, झिंगी फूल फूली गेल। ननंद भउजी खोंसा—खोंसी, देखैं केकर सुंदर खोंसा रे। (थापइर पीटेल)

नेता— रहू। रीझ—रंग बाद में होइ। काम कर बात होएक चाही।

बन सरदार— काम कर बात! हँ! हामरे कर सरकार बन लगाएक बट जोर देत हे। हामरोहों के बन लगाएक चाही। सरकार कर काम में हामरोहों के हाँथ बँटाएक चाही। तबे नी देस आगे बढ़ी।

नेता— बन तो हामरे के लगाएके आहे। झारखंड बइन गेलक छोटानागपुर। अब हामरे के फिन से झारखंड बनाएक होइ। तबे छोटानागपुर कर विकास होइ।

बन गोमके— ई झारखंड कर बात कइर के तोहरे का मसना के कोड़ेक लाइग हा?जेउ अदमी झारखंड के बिसरत हैं सेके! पुरना घाव के का ले खोदरत हा?

नेता— झारखण्ड कहेक मतलब मोर ई रहे मालिक— जंगल झाड़। जंगल झाड़ कर राइज, गोटे देस में बन रोपल जात हे। ई छोटानागपुर के बने से भइर देक चाही। से केउ हिंआ बने नी लगाएँ।

बन सरदार— हिंआ तो एखनो ले डबल बन हालेहें आहे मालिक। बन सफा करले अदमी चेंठ होए जाएँन। सेले इके बने राइज बनाएक चाही। बन काइट देले तो सहर बइन जाइ। सहर बनले तो हामरे के नोकसान आहे।

नेता— गोटे देस बन लगाल जात हे। बन लगाले पानी बरसी, पानी बरसले खेती होइ। बन—खेती होले देस हरियर होइ। देस हरियर होइ हले अदमी खुस होबैं। तब हिआ काले नी बन लगाब?

बन सरदार— जोन सूरत से लगाल जाइ लगाब। बन महोत्सव में इसन सुंदर बन हिआ लागी कि छोटानागपुर गोटे देस कर रानी बइन

जाइ। हामरे छोटानागपुर का ले बन लगाएक में पछुवाइ!

नेता– एके सूरत में लगाल जाइ। आउर खउब लगाल जाइ। आउर हिञा कर लोहा माटी में जइसन कचरा सरसराए के बाढ़ेल उसने हिञा बाढ़ी–युकलिपटस। युकलिपटस कर बन।

बन गोमके– कोन उपाइ हिञा ले बेस होइ जेकर से जबर बन हिञा लाइग सकेल!

नेता– एके उपाइ मालिक। बस एके उपाइ।

बन सरदार– हँ भाइ! ऊ कोन उपाइ होइ कहू नि?

नेता– हिञा कर जतना जबर–जबर बन आहे उके काइट देल जाए आउर सखुआ बन कर खाली ठाँव में युकलिपटस कर बन लगाल जाए। बन लगाएक से नि मतलब! बन लागी।

बन सरदार– हँ, सुपट! सुपट! तब तो हिञा बन एकदम लाइग जाइ आउर तुरते बाइढ़ जाइ। युकलिपटस तो झटे के बाढ़ेल आउर छोटानागपुर बइन जाइ देस कर रानी। बन कर महारानी।

ठीकेदार– (झिरगी से) आउर चखना मन लान, ओड़ो चखना आगुवेम। दारू मन ढार, गिलास सिरात हे–गिलास रे अरकि चबाव तनअ (सउब के देल सउब फिन चखना खाएँन दारू पीएन)

ठीकेदार– ई बन मुरगी कर सिकार मालिक।

बन गोमके– मुदा सरकार पुरना बन के उजड़ाएक नी देइ।

नेता– हामरे उजड़ाएक कहाँ कहत ही मालिक। हामरे तो बन लगाएक कहत ही। हामरे कर कहना आहे कि जतना पुरना ढोढ़री गछ मन आहे,जे धुन–धुका में गिर जाएल तो कतना नवाँ छोट–छोट गछ के टुटाए देल, जाँइत देल। से गछ कर छटनी कर बात कहत ही मालिक। बन के काले उजड़ाब?

बन सरदार– बन के उजराले तो अदमी चलाँक होए जाबैं। आउर जब बने लगात ही तो बन के उजड़ाएक कर का मतलब!

बन गोमके– हँ ई होए सकेल कि जतना गछ मन पुरना होए जा हे जेकर बाढ़ेक खतम होए गेलक, उके काटेक में तो कोनो हरज नखे।

ऊ बइन सकेल।

नेता– पुरना गछ के काटले तीन फायदा ततकाल मालिक! पहिल फायदा सखुआ काटल से ठाँव फादिल होइ, हुआँ नवाँ युकलिपटस गछ लागी। छोट गछ के हवा लागी तो सनसनाए के बाढ़ी। दोसर फायदा, मालिक कर ततकाल दुइ गो टरक होए जाइ। आउर तीसर....।

बन सरदार– आउर तीसर फायदा हामरे छोट–मोट अदमी मन काटेक–लादेक में जीयब।

बन गोमके– मोएँ टरक आवला बात नी बुझलों!

नेता– देखल जाए मालिक एतना जे सखुआ गछ कटाइ! माने पुरना गछ मन, उकर तो पोकता दाम मन भेटाइ। आइझ–काइल मालिक लोहा ससता आहे लकड़िए महरंग। लोहा से दोबर दाम काठ कर। एतना से दुइ का, काय गो टरक होए सकेल।

बन सरदार– आउर हामरे काठ लादेक–लेजेक ले दोसर टरक का ले लानब! मालिके कर टरक में काठ जाइ।

नेता– टरक अपने कर रही मालिक, मालकिन कर नाँव से। तब तो कोनो हरज नी होइ। सब के डी. एफ. ओ. से लेके चेकनाका तक के मालूम रही कि फलना लंबर कर गाड़ी तो मालिक कर। फिन.........

बन सरदार– फिन केकर मजाल कि केउ चेकनाका में गाड़ी रोकी। बस मालिक, राइतो–राइत बन से महल में। हामरे तो अपने कर हुकुम कर धांगर हेकी मालिक।

ठीकेदार– दीया आगुइम(बाती के लान)– (झिरगी गेस बाती लानेल)

नेता– आइझ कर राजनीति बिचितरे होए जा हे मालिक। जेकर ठिन टाका, सेकर काम पाका। बस, इसन मोका में धन पुंजियाएक नी पारलैं तो बुझेक चाही मालिक दिन पलटेक में कइटको देरी नी लागी। आइझ गदी में तो काउल............काउल कर का भरोसा।

बन सरदार– आइझ कर चुनाव भोट से निहीं रुपिया से जीतल जात हे मालिक। बस रुपिया डिसाए देन, भोट देवइया नोट में गोड़ धइर के भोट साजे आएँन मालिक।

नेता– से ले हामर बन कर राजनीति इसन होए कि चल बेटा राजनीति चितो मोर पटो मोर।

बन गोमके– हँ, राजनीति तो आइझ–काइल एकदमें घिनधिना होए जात हे। ई कहेक बड़ा मसकिल आहे कि कब केकर जीत होए जाए। से ले ई तरीका मोके कुछ बुझातहे। राजनीति पइसा कर खेल होए गेलक अब तो।

नेता– तो आइझ से हामरे कर राजनीतिक खेल सुरू होइए जाए तब मालिक। एहे खुसी में कुछो होए जाए।

ठीकेदार– तो मोर बट ले ई खुसी कर दिन में छोटे सुन भेंट मंजुर करल जाए मालिक। (देखाए के) ई दुइयो टरक आइझ से अपने कर होलक मालिक।

नेता– बस, अब तो बन काटेक कर माने, पुरना सखुआ मन के काटेक कर परमिट बइन जाएक चाही मालिक। सउब कर डहर खुइल जाइ। हामरे कर बन सरदार साहेब हइए आहैं।

बन सरदार– मोर से जे बनी से तो होबे घरी। मालिक कर जब ओडरे होइए जाइ तब फिन का कहेक?

नेता– तब होलक बात पक्का! शुभ काम में का देरी? दुइयो टरक हइए आहे। बन मालिक कर हुकुम होइए गेलक।

बन गोमके– मुदा ई काम एखने का लखे होइ! एतना तुरते।

बन सरदार– ई काम में कोनों देरी नी लागी मालिक। बस हुकुम होलक आउर बने कर गाँव में एखने कोरी–नारी कुली भेटाए जाबैं।

नेता– आउर ई सउब काम राइते के होएक चाही। राइतो–राइत केकरो कानो में ई बात नी चघी। तो हुकुम मालिक (ठीकेदार ठीन जाएल) जा जतना अदमी भेटाबैं धइर के ले आन।

ठीकेदार– राइत के नी आबैं हल?

बन सरदार– जा नि भाइ, गाड़ी से बोतल ले जा आउर सउब के अघात ले आगे पियाय दे, तले ले आन। उकर भूत आइ।

ठीकेदार– तब का, तब तो कुदले चइल आबैं।

नेता– तब हुकुम मालिक। इमन आपन काम करबैं। हामरे के चलेक चाही। (सउब जाएँन, झिरगी भइर रइह जाएल)

झिरगी– (बिसू आएल) सउब सतयानास होए गेलक?

बिसू– का सतयानास होए गेलक।

झिरगी– हामरे कर घर–दुरा, जीना–खाना, हामरे कर जिनगी सउब छितिछान होए गेलक।

बिसू– अरे बाबा! का छितिछान होलक?

झिरगी– कहलों तो, हामर घर, हामर जिनगी, आब का लखे चली? ई बनचोर मन के खियाएक लाइन रही।

बिसू– बनचोर! का बनचोर?इमन बनचोर हेकैं?

झिरगी– जाउ, एकदम बदइक के गाँव में जाउ। आउर गोटे गाँव के खबर कइर देउ। बन काटेक केउ नी जाबैं चाहे कतनों पियाइ चाहे कतनों रुपिया भेटाइ।

बिसू– हामरेक घरे काटेक कर बइठकी कइर रहैं। बन के काइट देबैं तो हामरे तो टुवरे होए जाब।

झिरगी– दतुन ले, पतइ ले, झुरी ले, काठी ले, पतुर ले, डोरा ले, फर ले, फूल ले, जड़ी–बूटी ले, कोन इसन चीज ले हामरे बन उपरे टिकल नखी। बन आहे तो कोनो नियर जिनगी चलत हे। गरू–छगरी घास–पतइ खाए के जीयत आहैं।

बिसू– दवइ बिरु ले, जहर मोहरा ले, शिकार ले, बने कर जुन आसरा आहे। भूख बेरा अंबा, जाम, डुमइर, पोढ़ो, चार, पियार, सरइ, महुँआ पेट भरबे घरत हे। बने कटाए जाइ तब तो हामरे कर पेटे धोवाए जाइ। हाँथे कटाइ जाइ। आपन हाँथ के नी काटेक देमू। बन के काटे नी देमू। बन के काटे नि देमू। चल झट के, देरी ना

कर, नी तो ई अभागा मन फटफटिया से अगुवाए जाबैं।

झिरगी— चलु ई टोंगरी दने से झट के पोहँचब। (दुइ झन टंगिया लेले आएँन)

झिरगी— देखू अदमी मन तो तलमलाते टंगिया धरले आवत हैं।

बिसू— निहीं मोएँ काटे नी देमू (दुइयो छोंड़ा टंगिया धरले आएँन) बन के काटे नी देमू। (दुइयो कर टंगिया के लुइट लेल) ए बाप धन! ए बुचू, ए भइया, आपन हाँथ के ना काटा! बन हामरेक जिनगी हेके बुचू। ए भइया! बन काइट देबा तो का लखे जीबा बुचू? ना काटा बाबा। घुइर जावा बाप धन।

गोटेक छोंड़ा—हामरे कमाएक आ ही। तोएँ कमाए के देबे ओइ?

झिरगी— बने उजराए देबा तले कहाँ रहबा? का खाबा? गरू—छगरी का तइर जीबैं बुचू? भूख—पियास में बने जुन पोसते आहे भइया। रुपिया कर लोभ में बन के ना उजरावा बाबा। घुइर जावा बुचू। बन देवता कर धेयान धरा भइया। मोएँ गोड़ पड़त हों।

दोसर छोंड़ा— कचिया झोइक ले ही तो, नी मारी?

झिरगी— घुराए देवा बाबु। तोहरे नी बुझतहा। बने हामरे कर घर हेके। बने नी रही तो कहाँ जाब भइया। छितिछान होए जाइ गोटे गाँव बाबा। जब तक बन बाँचल आहे, गाँव बाँचल आहे बुचू। गाँव के ना उजरावा। बन के काटे ना लगा बुचू। हाथ जोरत हों।

पहिल छोंड़ा— गोटे गाँव कर छोंड़ा मन आ हैं। देख, सुन तो, काटत हैं कि निहीं? (काटेक सुनाएल)

दोसर छोंड़ा— हामरे के पुराबे, माटी तेल, नून—तेल, लुगा—फटा, चाउर—दाइल पुराबे, हले नी काटब?

बिसू— जा भइया थेथर ना लागा। जिद ना करा बुचू। सउबे के घुराए देवा। ना लागा, आपन राइज के ना उजरावा। बन नी रही तो हामरे लंगटा होए जाब। बने से हामरे कर लाज बाँचल आहे। हामरे भूखे आउर दुखे मोइर जाब बाप—धन घुइर जावा बुचू।

पहिला छोंड़ा— सउब केउ के पाँच—पाँच रुपिया देइ हे। उपरे से जतना गछ

काटब ओतने रुपिया मिली। इसन कमाएक मोका के का ले छोड़ब?

झिरगी— कतना दिन चली भइया तोहरे कर रुपिया?बन रही तो जिनगी भइर चली। काय पुरखा के टेकी। जइसन आइझ तक टेकलक। एसो कर अकाल के बिसइर गेला?सरइ—महुआ लाठाए जून खाए के अकाल बिताली! बन नी रहतक हले का करतला?

बिसू— गाँव—घर छोइड़ के कने कने भटइंग जुन बुलता?बन आहे तो हामरे कर लाज आहे। ना बुचू ना काटा! रोका सउब के काटेक, नी तो बन देवता बगडलैं तो गाँव सुधराएक मसकिल होए जाइ। घुराए देवा बुचू। गाँव के ना बेगड़ावा नी तो गाँव सुधराएक में कचकच होइ जाइ।

(झिरगी आउर बिसू जबरइ धइर के ले जाएँन)

ठीकेदार— (आएल) बन काटेक सुनाएल, रुमसाम सुनाएल। गछमनक गिरेक सुनाएल) जतना गछ काटबा, ओतने रुपिया उपरे से। काटा, जतना काटेक पारबा राइत भइर में। कमाए लेवा जतना कमाएक आहे। इसन मोका आउर नी मिली। काटा, रुमसाम काटा। (जाएल कि साँप चाइब देल, साँप कर फों सुनाएल) अरे बाप रे! अरे बाप रे बाप! साँप रे बाप! बड़का जबर करिया नाग चाइब देलक हो। केउ बचावा हो! केउ बचावा हो! साँप चाइब देलक रे बाप। जान ले लेलक रे बाप। बाचावा हो। (गछ काटेक आउर गछ गिरेक सुनाएल, ठीकेदार गिर जाएल, पटकाए जाएल। अखइर—अखइर के एड़ी रगइड़—रगइड़ के चिचियाएल मुदा केउ नी सुनेन। रसे—रसे ठीकेदार कर एड़ी रगड़ेक धीरे होते जाएल। अंधार लाल होएक लागेल, लाल पीयर आउर पीयर इंजत सफा होएल कि एके धँव जोर से छटपटाए के ठीकेदार सोझ होए जाएल)।

करुण धुन कर संगे नाटक निमइर जाएल।)

लेखक की कृतियाँ व उपलब्धियाँ

लेखक की प्रकाशित रचनाएँ:

1. कोरी भइर पझरा (नागपुरी पद्य संग्रह– प्रधान संपादक)
2. नागपुरी गद तइरगन (नागपुरी पद्य संग्रह– प्रधान संपादक)
3. खुँखड़ी रूगड़ा (प्रतिनिधि नागपुरी कहानी संग्रह– संपादक)
4. फिन भेंट आउर दूसर नगीत– (डॉ. राम दयाल मुण्डा रचित काव्य संग्रह का नागपुरी अनुवाद)
5. जागी जवानी चमकी बिजुरी– (लाल रणविजय नाथ शाहदेव रचित वीर एवं श्रृंगार रस प्रधान नागपुरी गीतों का संकलन एवं संपादन)
6. पीटर शांति नवरंगी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, पी–एच. डी शोध प्रबंध।
7. ऊँ विश्वद्यालय नमः– विस्तृत समीक्षा– डॉ. वि. प्र. केशरी की पुस्तक का– 2000.
8. झारखंड का अमृत पुत्र : मरङ गोमके जयपाल सिंह– हिन्दी श्रुति रंग– 2001
9. मरङ. गोमके– नागपुरी नाटक– 2002
10. झारखंड के लोक नृत्य– 2004
11. कथा संगम– कला संस्कृति, खेल कूद एवं युवा कार्य विभाग, झारखंड सरकार द्वारा कथा प्रतियोगिता– संपादक– 2006
12. झारखंड के वाद्य यंत्र– 2009
13. नेरुआ लोटा उर्फ सांस्कृतिक अवधारणा–समीक्षा–डॉ. बी. पी. केशरी–समीक्षा–2010

पत्रिका संपादन

1. नागपुरी– (पत्रिका) का सह संपादक।
2. पझरा– नागपुरी प्रचारिणी सभा, राँची की अनियतकालीन पत्रिका–संपादक।
3. नागपुरी कला संगम, राँची की स्मारिकाओं का सह संपादक (1982–1987)

4. श्रद्धा–विशेषांक– वनवासी कल्याण केन्द्र राँची– 2006–2011

5. जोहार सहिया– कार्यकारी संपादक राँची– 2006 से 2008

6. गोतिया– कार्यकारी संपादक– राँची– 2008 से

पत्रिकाएँ जिनमें रचनाएँ छपी हैं–

1. छोटानागपुर संदेश, 2. नागपुरी, 3. पझरा, 4. डहर, 5. संवाद, 6. वर्तमान संदर्भ, 7. कचनार, 8. जोहार, 9. नारी संवाद, 10. समष्टि संदेश, 11. सेवा संकल्प, 12. श्रद्धा, 13. दृष्टिपात, 14. कांची, 15. वर्तमान संदर्भ, 16. कला संगम स्मारिका, 17. संगम, 18. बेड़ो कॉलेज स्मारिका, 19. गोस्नर कॉलेज पत्रिका, 20. झारखंड विचार, 21. अखड़ा, 22. झारखंड दर्शन परिषद स्मारिका, 23. लक्ष्य, 24. जनहुल, 25. वनसंकल्प, 26. थाती (उपर्युक्त सभी राँची), 27. शंखनाद (सिमडेगा झारखंड), 28. तितकी (हजारीबाग झारखंड), 29. नागभूमि (पालकोट झारखंड), 30. वनफूल (खूँटी झारखंड), 31. साहित्यम (जमशेदपुर झारखंड), 32. आस्था (जमशेदपुर झारखंड), 33. झारखंड दर्पण (चक्रधरपुर झारखंड), 34. समीक्षा दर्पण (सीवान बिहार), 35. समय सुरभि (बेगुसराय बिहार), 36. अरावली उद्घोष (राजस्थान), 37. राष्ट्र धर्म, 38. विश्व संवाद केन्द्र पत्रिका समाचार पत्रों में समीक्षा, भाषिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक, समसामयिक विषयों पर आलेख प्रकाशित–

1. राँची एक्सप्रेस, 2. प्रभात खबर, 3. आज, 4. न्यू मेसेज, 5. झारखंड टाइम्स, 6. झारखंड जागरण, 7. गुमला एक्सप्रेस, 8. दैनिक जागरण, 9. बिरसा वाणी, 10. हिन्दुस्तान (सभी राँची)

आकाशवाणी व दूरदर्शन से प्रसारित रचनाएँ–

कहानी, नाटक, वार्ता, हास्य व्यंग्य, सांस्कृतिक, साहित्यिक विषयों पर आलेख, साक्षात्कार, परिचर्चा, अभिनय।

सांस्कृतिक गतिविधि–

1. महासचिव– नागपुरी प्रचारिणी सभा, राँची

2. उपाध्यक्ष– नागपुरी भाषा परिषद राँची
3. महासचिव– झारखंड सांस्कृतिक समन्वय समिति राँची
4. महासचिव– राहुल स्टडी सर्किल, राँची
5. सचिव– अखिल भारतीय भाषा साहित्य सम्मेलन, झारखंड शाखा राँची
6. छोटानागपुर सांस्कृतिक संघ– संयुक्तसचिव, राँची
7. उपाध्यक्ष– राँची कॉलेज एवं स्नातकोत्तर विभाग शिक्षक संघ– राँची विश्वविद्यालय राँची–2011
8. अनेक साहित्यिक, सांस्कृतिक, सामाजिक संस्थाओं का सक्रिय सदस्य एवं पदाधिकारी

सम्मान पुरस्कार–

1. झारखंड रत्न (2002–2003) 26–10–2003– लोकसेवा समिति राँची द्वारा प्रदत
2. घासीराम सम्मान 25–1–2004 नागपुरी कला संगम राँची द्वारा प्रदत
3. मानव संस्कार विकास रत्न पुरस्कार– 17–4–2005 मानक संस्कार भारत पटना बिहार द्वारा प्रदत्त
4. झारखंड में शिक्षा शोधकार्य में विशिष्ट सेवा हेतु सम्मान– 5–9–2001 साँई शोध संस्थान राँची,
5. विशिष्ट साहित्यकर्मी सम्मान– 1990 नागपुरी सांस्कृतिक सेवा संघ राँची द्वारा प्रदत।
6. साहित्य श्री उपाधि 16–6–2005 अखिल भारतीय भाषा साहित्य सम्मेलन बंगलोर कर्नाटक द्वारा प्रदत।
7. प्रशंसा पत्र नागपुरी साहित्यकार 10 हजार रू. का पुरस्कार कला संस्कृति झारखंड सरकार द्वारा 15 नवम्बर 2008।
8. सांस्कृतिक सम्मान –2011–12 (28.10.2011) कला संस्कृति खेलकूद एवं युवा कार्य विभाग, झारखंड सरकार द्वारा।

आत्मकथ्य



नाम : डॉ. गिरिधारी राम गौंझू 'गिरिराज'

जन्म : 5 दिसम्बर 1949

निवासी : ग्राम– बेलवादाग, खूँटी, राँची, झारखण्ड।

पिता : स्व. इन्द्रनाथ राम गौंझू

पता : सरस्वती संसार, म.न.– 406, वसंत विहार, रोड नं.– 4, हरमू कॉलनी, राँची, झारखण्ड।

शिक्षा : एम.ए. (हिन्दी), बी.एड., एल.एल.बी., पी. एच. डी.

अध्यापन : 1. अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, परमवीर अल्बर्ट एक्का मेमोरियल कॉलेज, चैनपुर, राँची (अब गुमला) 1975–1978, 2. व्याख्याता, हिन्दी तथा नागपुरी विभाग, गोस्सनर कॉलेज, राँची 1978–1982, 3. पूर्व अध्यक्ष एवं रीडर, जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, राँची कॉलेज, राँची एवं सह अध्यापन, स्नातकोत्तर विभाग, जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची 1982–1998, 4. रीडर, जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची, 1998 से अब तक, 5. अध्यक्ष, जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची, 14.10.2009 से 31.12.2011 तक।

प्रकाशित कृतियाँ :

1. पीटर शांति नवरंगी, व्यक्तित्व एवं कृतित्व, 1990.
2. झारखण्ड का अमृत पुत्र : मरङ गोमके जयपाल सिंह, 2001.
3. महाराजा मदरा मुण्डा, 2004.
4. नेरूआ लोटा उर्फ सांस्कृतिक अवधारना (समीक्षा), 2010
5. नागपुरी के प्राचीन कवि, 2012
6. झारखण्ड का लोक संगीत, 2012
7. झारखण्ड की सांस्कृतिक विरासत, 2012
8. सं. अंगना (नागपुरी समाजक लोककथा), 2012
9. सं. मातृभाषा की भूमिका, 2012

PUBLISHER :-

Jharkhand Jharokha

Shop No. D.G. 03, New building, New Market
Ratu Road, Ranchi (Jharkhand),Pin-834001
Mob. - 09973112040, 09471160792
E-mail : jharkhandjharokharanchi@rediffmail.com

ISBN : 978-93-81720-11-0

978-93-81720-11-0

मूल्य : 140.00 रूपये मात्र